

स्थापना (A) : शब्द का वास्तविक अर्थ वाक्य की गति में ध्वनित होता है। सही सुमेलित हैं-

तर्क (R) : क्योंकि वाक्य में प्रयुक्त होकर शब्द, विषय का सम्पूर्ण करते हैं और नई अर्थ छवियों का उद्घाटन करके अपनी सार्थकता सिद्ध करते हैं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

सही सुमेलित हैं-

ग्रन्थ	रचनाकार
(a) गंगावहरी	— पद्माकर
(b) शिवावावनी	— भूषण
(c) रस रहस्य	— कुलपति मिश्र
(d) शृंगार निर्णय	— भिखारीदास

सही सुमेलित हैं-

पंक्ति	कवि
(a) जाके कुटुम्ब सब ढोर ढोवंत फिरहिं अजहुँ बानारसी आसपासा	— रैदास
(b) जेई मुख देखा तेइ हँसा सुना ते आयउ आँसु	— जायसी
(c) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए समुझी बात कहत मधुकर जो समाचार कछु पाए।	— सूरदास
(d) संतन को कहा सीकरी सो काम	— कुम्भनदास

सही सुमेलित हैं-

रचनाकार	रचना
(a) उद्योतन सूरि	— कुवलयमाला कथा
(b) रोड कवि	— राउलबेल
(c) दामोदार शर्मा	— उक्तिव्यक्तिप्रकरण
(d) ठाकुर ज्योतिरीश्वर	— वर्णरत्नाकर

सही सुमेलित हैं-

कविता संग्रह	प्रकाशन वर्ष
(a) कितनी नावों में कितनी बार	— 1967
(b) चाँद का मुँह टेढ़ा है	— 1964
(c) काल तुझसे होड़ है मेरी	— 1971
(d) लोग भूल गए हैं	— 1982

कविता	प्रकाशन वर्ष
(a) विष्णुप्रिया	— 1957
(b) स्वप्न	— 1929
(c) हिमकिरीटिनी	— 1941
(d) श्रांत पथिक	— 1902

सही सुमेलित हैं-

पात्र	रचना
(a) आकुलि किलात	— कामायनी
(b) अश्वसेन	— रश्मिरथी
(c) युयुत्सु	— अंधायुग
(d) औशीनरी	— उर्वशी

सही सुमेलित हैं-

पात्र	नाटक
(a) विलोम	— आषाढ़ का एक दिन
(b) गालव	— माधवी
(c) आत्मन	— मिस्टर अभिमन्यु
(d) पृथु	— पहला राजा

सही सुमेलित हैं-

पात्र	कहानी
(a) अलोपीदीन	— नमक का दारोगा
(b) झुरिया	— सद्गति
(c) जोखू	— ठाकुर का कुआं
(d) अमीना	— ईदगाह

सही सुमेलित हैं-

उपन्यासकार	उपन्यास
(a) कृष्णा सोबती	— समय सरगम
(b) चन्द्रकान्ता	— कथा सतीसर
(c) चित्रा मुद्गल	— एक जमीन अपनी
(d) अलका सरावगी	— कोई बात नहीं

सही सुमेलित हैं-

रचना	रचनाकार
(a) रसमंजरी	— भानुदत्त
(b) भाव प्रकाशन	— शारदा तनय
(c) साहित्यदर्पण	— विश्वनाथ
(d) नाट्य दर्पण	— रामचन्द्र गुणवन्द

जुलाई - 2016 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- तातु, मूर्धा, वर्त्स तथा कंठ में से 'ण' वर्ण का उच्चारण स्थान है —मूर्धा
- आगम वे अ पुराणे पंडित मान बहंति।
पक्क सिरिफल अलि अ जिम वाहेरित भ्रमयंति॥
काव्य पंक्तियाँ हैं —कण्ठपा की
- सूर समाना चंद में दहूँ किया घर एका
मन का चिंता तब भया कछू पुरबिला लेख॥
पंक्तियों के रचनाकार हैं —कबीरदास
- द्वैतवाद के प्रणेता हैं —मध्वाचार्य
- 'रौजतुल हकायक' के रचयिता हैं —नूर मुहम्मद
- ग्वाल कवि, रामसहाय दास, पद्माकर भट्ट तथा सम्मन में से प्रबंधात्मक
वीर काव्य की भी रचना की है —पद्माकर भट्ट ने
- रसनिधि, वृन्द, भूपति एवं बेनी 'प्रवीन' में से सतसई की रचना नहीं
की है —बेनी 'प्रवीन'
- 'भ्रमरदूत' के रचनाकार हैं —सत्यनारायण कविरत्न
- काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का परिणाम।
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल, बनाते हो असफल भवधाम॥
पंक्तियाँ 'कामायनी' के सर्ग से हैं —श्रद्धा सर्ग से
- कल्हण की 'राजतरंगिणी' पर आधारित जयशंकर प्रसाद का नाटक है —विशाख
- 'मुड़ मुड़कर देखता हूँ' आत्मकथा है —राजेन्द्र यादव की
- 'मणिकर्णिका' के लेखक हैं —तुलसीराम
- 'महाकाल' उपन्यास के लेखक हैं —अमृतलाल नागर
- 'कामरेड का कोट' कहानी के लेखक हैं —सृजय
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रूपकों में से 'भाण' है —विषय विषमौषधम्
- 'सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं, तो मानो
अलंकारशास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं
की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।' कथन है —हजारीप्रसाद द्विवेदी का
- भरतमुनि के रस सूत्र के व्याख्याता भट्टनायक के सिद्धान्त का नाम है —भुक्तिवाद
- वक्रोक्ति सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य हैं कुन्तक
- अभिव्यंजनाविदा सिद्धान्त के प्रवर्तक हैं —क्रोचे
- 'प्रेमचन्द और उनका युग' के लेखक हैं —रामविलास शर्मा
- रचनाकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है —स्वयंभू (8वीं शती), पुष्पदंत (10वीं शती), अदहमाण (12वीं शती), हेमचंद्र (12वीं शती)
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है —बिहारी (1603 ई.), देव (1673 ई.), मिखारीदास (1721 ई.), पद्माकर (1753 ई.)
- जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है —हरिवंशराय बच्चन (1907-2003 ई.), गोपाल सिंह नेपाली (1911-1963 ई.), नरेन्द्र शर्मा (1913-1989 ई.), रामेश्वर शुक्ल अंचल (1915-1995 ई.)
- नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है।
- मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कृतियों का सही अनुक्रम है —पंचवटी (1925 ई.), साकेत (1931 ई.), यशोधरा (1932 ई.), द्वापर (1936 ई.)
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से काव्य संग्रहों का सही अनुक्रम है —अभी बिल्कुल अभी (1960 ई.), जमीन पक रही है (1980 ई.), उत्तर कबीर और अन्य कविताएं (1995 ई.), बाघ (1996 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है —नारद का वीणा (1946 ई.), कोणार्क (1951 ई.), अंधा कुआँ (1955 ई.), बकरी (1974 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही अनुक्रम है —परती परिकथा (1957 ई.), दीर्घतपा (1964 ई.), जुलूस (1965 ई.), पल्लू बाबू रोड (1979 ई.)
- रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का सही क्रम है —गोबर गणेश (1978 ई.), किस्सा गुलाम (1986 ई.), पूर्वापर (1990 ई.), विनायक (2011 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार उषा प्रियंवदा के उपन्यासों का सही क्रम है —पचपन खंभे लाल दीवारें (1961 ई.), रुकोगी नहीं राधिका (1966 ई.), शेष यात्रा (1984 ई.), अंतर्वशी (2000 ई.)
- लेखनकाल के अनुसार पाश्चात्य आलोचकों का सही अनुक्रम है —वर्ड्सवर्थ (1770 ई.), क्रोचे (1866 ई.), टी.एस. इलियट (1888 ई.), आई.ए. रिचर्ड्स (1893 ई.)
- सही सुमेलित हैं—
- | पात्र | ग्रन्थ |
|------------|---------------------|
| (a) चंदा | — चंदायन |
| (b) नागमती | — पद्मावत |
| (c) राजमती | — बीसलदेव रासो |
| (d) मालवणी | — ढोला-मारू रा दूहा |

सही सुमेलित हैं-

रचनाकार	—	आश्रयदाता राजा
(a) चन्दबरदाई	—	पृथ्वीराज चौहान
(b) बिहारी	—	जयसिंह
(c) जगनिक	—	परमाल
(d) भूषण	—	छत्रासाल

सही सुमेलित हैं-

काव्यकृति	—	कवि
(a) मुक्तिप्रसंग	—	राजकमल चौधरी
(b) खुशबू के शिलालेख	—	भवानीप्रसाद मिश्र
(c) अनुभव के आकाश में चाँद	—	लीलाधर जगूड़ी
(d) रेणुका	—	रामधारी सिंह 'दिनकर'

सही सुमेलित हैं-

काव्यकृति	—	कवि
(a) आत्मजयी	—	कुँवर नारायण
(b) खूंटियों पर टँगे लोग	—	सर्वेश्वरदयाल सकसेना
(c) मगध	—	श्रीकान्त वर्मा
(d) पहाड़ पर लालटेन	—	मंगलेश डबराल

सही सुमेलित हैं-

काव्य पंक्ति	—	रचनाकार
(a) पराधीन रहकर अपना सुख शोक न कह सकता है। वह अपमान जगत में	—	रामनरेश त्रिपाठी
(b) केवल पशु ही रह सकता है। धरती हिल कर नींद भगा दे। वज्रनाद से व्योम जगा दे। दैव, और कुछ लाग लगा दे।	—	मैथिलीशरण गुप्त
(c) दिवस का अवसान समीप था गगन था कुछ लोहित हो चला।	—	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की, सुधि ब्रज-गाँवनि में पावन जबै लगी।	—	जगन्नाथदास रत्नाकर

जयशंकर प्रसाद के नाट्यगीतों को उनके नाटकों के साथ सही सुमेलित हैं-

नाट्यगीत	—	नाटक
(a) आह वेदना मिली विदाई, मैंने भ्रमवश जीवन संचित मधुकरियों की भीख लुटाई।	—	स्कन्दगुप्त
(b) यौवन तेरी चंचल छाया इसमें बैठ घूँट भर पी लूँ जो रस तू है लाया	—	ध्रुवस्वामिनी
(c) कैसी कड़ी रूप की ज्वाला पड़ता है पतंग-सा इसमें मन हो कर मतवाला।	—	चन्द्रगुप्त

(d) स्वर्ग है नहीं दूसरा और सज्जन हृदय परम करुणामय यही एक है ठौर।

सही सुमेलित हैं-

निबंध संग्रह	—	लेखक
(a) आस्था और सौंदर्य	—	रामविलास शर्मा
(b) अपनी अपनी बीमारी	—	हरिशंकर परसाई
(c) कला का जोखिम	—	निर्मल वर्मा
(d) तमाल के झरोखे से	—	विद्यानिवास मिश्र

सही सुमेलित हैं-

उपन्यास	—	चित्रित गाँव
(a) रागदरबारी	—	शिवपालगंज
(b) आधा गाँव	—	गंगौली
(c) मैला आँघल	—	मेरीगंज
(d) गोदान	—	बेलारी

सही सुमेलित हैं-

सम्प्रदाय	—	आचार्य
(a) औचित्य	—	क्षेमेन्द्र
(b) वक्रोक्ति	—	कुन्तक
(c) ध्वनि	—	आनन्दवर्द्धन
(d) रस	—	भरत मुनि

सही सुमेलित हैं-

रचना	—	रचनाकार
(a) चर्च एण्ड स्टेट	—	कॉलरिज
(b) लिटरेचर एण्ड डोगमा	—	मैथ्यू आर्नाल्ड
(c) द फाउंडेशन ऑफ एस्थेटिक्स	—	आई.ए. रिचर्ड्स
(d) आर्स पोएटिका	—	होरेस

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में लिटरेचर एण्ड ड्रामा दिया गया है, जबकि वास्तव में यह लिटरेचर एण्ड डोगमा है जिसके लेखक मैथ्यू आर्नाल्ड हैं।

अभिकथन (A) : परम्परा आधुनिकता की विरोधी है।

कारण (R) : क्योंकि परम्परा पुरातनता को पोषित कर भविष्य का मार्ग अवरुद्ध करती है।

— (A) गलत (R) गलत है

अभिकथन (A) : धर्म और विज्ञान की तरह साहित्य में प्रतीक एक निश्चित अर्थ का प्रतिपादक होता है।

कारण (R) : इसीलिए रचनात्मक स्तर पर साहित्यिक प्रतीक के सम्बन्ध में पाठक और प्रयोक्ता के बीच मतभेद नहीं हो सकता।

— (A) सही (R) सही है

जुलाई - 2016 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ❧ 'चौपाई' छंद का पूर्व रूप है —अरिल्ल
- ❧ "डिंगल कवियों की वीर-गाथाएँ, निर्गुणिया संतों की वाणियाँ, कृष्ण भक्त या रागानुगा भक्तिमार्ग के साधकों के पद, राम-भक्त या वैधी भक्तिमार्ग के उपासकों की कविताएँ, सूफी साधना से पुष्ट मुसलमान कवियों के तथा ऐतिहासिक हिन्दू कवियों के रोमांस और रीति-काव्य ये छः धाराएँ अपभ्रंश कविता का स्वाभाविक विकास हैं।" यह कथन है —हजारी प्रसाद द्विवेदी का
- ❧ कुंडलिनी के उद्बुद्ध होने पर जो स्फोट होता है, उसे कहते हैं —नाद
- ❧ स्वामी अग्रदास का सम्बन्ध है —रामभक्ति शाखा से
- ❧ जायसी ने अपनी काव्यकृति में कयामत का वर्णन किया है —आखिरी कलाम में
- ❧ विशिष्टाद्वैत के प्रस्तोता आचार्य हैं —रामानुजाचार्य
- ❧ गौड़ीय सम्प्रदाय के संस्थापक हैं —चैतन्य महाप्रभु
- ❧ 'हितचौरासी' के रचयिता हैं —हितहरिवंश
- ❧ "यह सूचित करने की आवश्यकता नहीं है कि न तो सूर का अवधी पर अधिकार था और न जायसी का ब्रजभाषा पर।" यह कथन है —रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ 'गिरा अरथ, जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न। बंदों सीताराम पद जिनहि परम प्रिय खिन्ना।' उक्त काव्य पंक्तियाँ हैं —तुलसीदास की
- ❧ "धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति, इन तीन धाराओं में चलता है। इन तीनों के सामंजस्य से धर्म अपनी पूर्ण सजीव दशा में रहता है। किसी एक के भी अभाव से वह विकलांग रहता है।" यह कथन है —रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ कुलपति मिश्र, सूरति मिश्र, नृपशम्भू तथा पजनेस कवि में से 'नखशिख' शीर्षक से काव्य ग्रन्थ की रचना नहीं की —पजनेस ने
- ❧ 'अंग दर्पण' रचना है —रसलीन की
- ❧ 'चिरजीवो जोरी जुरै क्यों न सनेह गँभीर। को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के बीर।' 'वृषभानुजा' और 'हलधर' में है —श्लेष अलंकार
- ❧ "अष्टछाप में सूरदास के पीछे इन्हीं का नाम लेना पड़ता है। इनकी रचना भी बड़ी सरस और मधुर है। इनके सम्बन्ध में यह कहावत प्रसिद्ध है कि "और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।" यह कथन है —रामचन्द्र शुक्ल का
- ❧ यशोधरा, पंचवटी, साकेत एवं विष्णुप्रिया में से मैथिलीशरण गुप्त की नायिका प्रधान रचना नहीं है —पंचवटी
- ❧ 'छोड़ दुमों की मृदु छाया तोड़ प्रकृति से भी माया बाले ! तेरे बाल-जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?' इन काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं —सुमित्रानन्दन पन्त
- ❧ दिनकर की कृति कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा तथा उर्वशी में से कथानायक कर्ण है —रश्मिरथी में
- ❧ 'अब तक क्या किया, जीवन क्या जिया, ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम.....' उपर्युक्त पंक्तियों के रचयिता हैं —मुक्तिबोध
- ❧ 'मौन भी अभिव्यंजना है जितना तुम्हारा सच है उतना ही कहो।' 'मौन' के इस रचनात्मक संदर्भ की अभिव्यक्ति अज्ञेय ने की है —'इंद्रधनुष रौंदे हुए ये' में
- ❧ 'विद्रोहिणी अम्बा' नाटक के रचयिता हैं —उदयशंकर भट्ट
- ❧ अजातशत्रु, विक्रमादित्य, लहरों के राजहंस एवं दशाश्वमेध नाटक में से प्रच्छन्न नायक गौतम बुद्ध हैं —लहरों के राजहंस में
- ❧ ज्ञानदेव अग्निहोत्री, लक्ष्मीनारायण लाल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं सर्वेश्वरदयाल सक्सेना में से सर्वाधिक नाटकों के रचयिता हैं —लक्ष्मीनारायण लाल
- ❧ 'पूस की रात' कहानी का प्रमुख पात्र है —हल्कू
- ❧ 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के लेखक हैं —धर्मवीर भारती
- ❧ औपन्यासिक जीवनी 'आवारा मसीहा' आधारित है —शरतचन्द्र के जीवन पर
- ❧ झरोखे, कड़ियाँ, बसंती तथा पीढ़ियाँ उपन्यास में से भीष्म साहनी द्वारा रचित नहीं है —पीढ़ियाँ
- ❧ नागार्जुन द्वारा रचित मछुआरों के जीवन पर आधारित उपन्यास है —वरुण के बेटे
- ❧ 'माटी की मूरतें' के लेखक हैं —रामवृक्ष बेनीपुरी
- ❧ 'कर्मवीर' पत्रिका के सम्पादक थे —माखनलाल चतुर्वेदी
- ❧ महात्मा गाँधी की जीवनी 'अकाल पुरुष गाँधी' के लेखक हैं —जैनेन्द्र कुमार
- ❧ कृष्णा सोबती द्वारा रचित संस्मरणात्मक ग्रन्थ है —हम हशमत

- ‘कविता कवि व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।’
यह कथन है —टी.एस. इलियट का
- ‘बायोग्राफिया लिटरेरिया’ के लेखक हैं —कॉलरिज
- ‘पेरिडप्सुस’ के आधार पर ‘काव्य में उदात्त तत्व’ की अवधारणा का प्रवर्तन किया —लौजाइनस ने
- ‘श्रेष्ठ कविता प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन है, किन्तु इसके पीछे कवि की विचारशीलता और गहन चिन्तन होना चाहिए।’ यह विचार है —पाश्चात्य चिंतक वड्सवर्थ का
- ‘नया साहित्य : नये प्रश्न’ ग्रन्थ के लेखक हैं —नन्ददुलारे वाजपेयी
- प्रतिभा का सम्बन्ध है —काव्य हेतु से
- ‘कविवचनसुधा’ के सम्पादक हैं —भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- रचनाकाल के आधार पर रचनाओं का सही अनुक्रम है —ज्ञानदीप (1619 ई.), प्रेमरतन (रचनाकाल अज्ञात), हंसजवाहिर (1736 ई.), इन्द्रावती (1744 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर रचनाकारों का सही अनुक्रम है —चंदायन, मृगावती, मधुमालती, चित्रावली
- जन्मकाल के आधार पर रचनाकारों का सही अनुक्रम है —केशवदास (1555 ई.), सेनापति (1589 ई.), चिंतामणि (1600 ई.), भूषण (1613 ई.)
- जन्मकाल के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (1850 ई.), बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन (1855 ई.), प्रतापनारायण मिश्र (1856 ई.), जगमोहन सिंह (1857 ई.)
- जयशंकर प्रसाद की काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है —कानन कुसुम (1913 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.)
- जन्मकाल के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है —नागार्जुन (1910 ई.), भवानी प्रसाद मिश्र (1914 ई.), त्रिलोचन (1917 ई.), नरेश मेहता (1922 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है —हानूश (1977 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), माधवी (1984 ई.), आलमगीर (1999 ई.)
- कथावस्तु को प्रधान फल की प्राप्ति की ओर अग्रसर कराने वाले चमत्कारपूर्ण अंश को अर्थ प्रकृति कहा जाता है। पांच अर्थ प्रकृतियों का सही अनुक्रम है —बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी, कार्य
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार मृदुला गर्ग के उपन्यासों का सही अनुक्रम है—उसके हिस्से की धूप (1975 ई.), चित्तकोबरा (1979 ई.), मैं और मैं (1984 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के आधार पर जयशंकर प्रसाद के कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है —छाया (1912 ई.), प्रतिध्वनि (1926 ई.), आकाशदीप (1929 ई.), इन्द्रजाल (1936 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है —सूनी घाटी का सूरज (1957 ई.), सीमाएँ टूटती हैं (1973 ई.), मकान (1976 ई.), विग्रामपुर का संत (1998 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है —क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), बसेरे से दूर (1978 ई.), टुकड़े टुकड़े दास्तान (1986 ई.), जो मैंने जिया (1992 ई.)
- नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गए इस प्रश्न में एक आत्मकथा का नाम ‘जो मैंने किया’ दिया गया है जो कि गलत है। सही आत्मकथा ‘जो मैंने जिया’ है, जिसे कमलेश्वर ने वर्ष 1992 में लिखा है।
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है — अशोक के फूल (1948 ई.), कल्पलता (1951 ई.), कुटज (1964 ई.), आलोक पर्व (1972 ई.)
- सही सुमेलित हैं—
- | रचना | रचनाकार |
|---------------------|-----------|
| (a) रास पंचाध्यायी | — नंददास |
| (b) प्रेमवाटिका | — रसखान |
| (c) कवित्व रत्नाकर | — सेनापति |
| (d) बरवै नायिका भेद | — रहीम |
- सही सुमेलित हैं—
- | पंक्ति | रचनाकार |
|---------------------------------------------------------------------------|---------------|
| (a) कौन परी यह बानि, अरी।
नित नीर भरी गगरी ढरकावै।। | — प्रताप साहि |
| (b) यह प्रेम को पंथ कराल महा।
तरवारि की धार पै धावनौ है। | — बोधा |
| (c) चोजिन के चोजी, मौजिन के महाराज
हम कविराज हैं, पैचाकर चतुर के | — ठाकुर |
| (d) चांदनी के भारन दिखात उनयो सो चंद,
गंध ही के भारन बहत मंद मंद पौन।। | — द्विजदेव |
- सही सुमेलित हैं—
- | रचना | रचनाकार |
|------------------------|----------------------|
| (a) प्रबंध चिंतामणि | — जैनाचार्य मेरुतुंग |
| (b) रणमल्ल छंद | — श्रीधर |
| (c) जयचंद प्रकाश | — भट्ट केदार |
| (d) जयमयंक जसचन्द्रिका | — मधुकर कवि |

सही सुमेलित हैं-

कविता	प्रकाशन वर्ष
(a) प्रेम माधुरी	— 1875
(b) एकांतवासी योगी	— 1886
(c) हिमतरंगिणी	— 1949
(d) नीहार	— 1930

सही सुमेलित हैं

कविता	प्रकाशन वर्ष
(a) कुकुरमुत्ता	— 1942
(b) हुंकार	— 1939(1940)
(c) भग्नदूत	— 1933
(d) प्रेमसंगीत	— 1937

नोट—हुंकार का प्रकाशन वर्ष 1940 में हुआ था।

सही सुमेलित हैं

पात्र	रचना
(a) राधा	— प्रियप्रवास
(b) जाम्बवान	— राम की शक्ति पूजा
(c) युधिष्ठिर	— महाप्रस्थान
(d) केशकंबली	— असाध्य वीणा

सही सुमेलित हैं-

स्त्री चरित्र (पात्र)	नाटक
(a) शीलवती	— सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
(b) शर्मिष्ठा	— देहान्तर
(c) सुरेखा	— द्रौपदी
(d) उर्वी	— पहला राजा

सही सुमेलित हैं

उपन्यास	लेखक
(a) भाग्यवती	— श्रद्धाराम फिल्लौरी
(b) नूतन ब्रह्मचारी	— बालकृष्ण भट्ट
(c) अधखिला फूल	— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) आदर्श दंपति	— लज्जाराम मेहता

सही सुमेलित हैं

आत्मकथा	लेखक
(a) पानी बिच मीन पियासी	— मिथिलेश्वर
(b) आज के अतीत	— भीष्म साहनी
(c) पिंजरे की मैना	— चंद्रकिरण सौनरेक्सा
(d) हाद से	— रमणिका गुप्ता

सही सुमेलित हैं

रचनाकार	रचना
(a) भरत	— नाट्य शास्त्र
(b) धनंजय	— दशरूपक
(c) सागरनंदी	— नाटक लक्षण रत्नकोष
(d) रामचंद्र गुणवंद्र	— नाट्य दर्पण

अभिकथन (A) : 'रसो वै सः।'

कारण (R) : इसीलिए रस को ब्रह्मास्वाद सहोदर कहा गया है।

— (A) सही और (R) गलत है

अभिकथन (A) : छायावाद केवल व्यक्ति के प्रेम, सौन्दर्य और यौवन की कविता है।

कारण (R) : इसीलिए उसमें सामाजिक नैतिकता की उपेक्षा मिलती है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

अभिकथन (A) : रहस्य-भावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी।

कारण (R) : क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असम्भव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

अभिकथन (A) : प्रसाद के अनुसार, काव्य मन और आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है, जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।

कारण (R) : क्योंकि काव्य आत्मा की मनन-शक्ति की वह असाधारण अवस्था है, जो श्रेय सत्य को उसके मूल चारुत्व में सहसा ग्रहण कर युगों की समष्टि अनुभूतियों में अन्तर्निहित शाश्वत चेतनता का काव्यमय सृजन करती है। इसीलिए छायावादी काव्य की मूल चेतना रहस्यवादी है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

अभिकथन (A) : शुद्ध वियोग का दुख केवल प्रिय के अलग हो जाने की भावना से उत्पन्न क्षोभ या विषाद है, जिसमें प्रिय के दुख या कष्ट आदि की कोई भावना नहीं रहती है।

कारण (R) : क्योंकि जिस व्यक्ति से किसी की घनिष्ठता और प्रीति होती है, वह उसके जीवन के बहुत से व्यापारों तथा मनोवृत्तियों का आधार होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

अभिकथन (A) : दार्शनिकता और अनुभूति सम्पन्नता से ही व्यक्तित्व का समाजीकरण नहीं हो जाता।

कारण (R) : क्योंकि व्यक्तित्व के समाजीकरण के लिए अपनी शक्तियों को मानव कल्याण और सामाजिक कार्य की ओर उन्मुख करना होता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

दिसम्बर - 2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ❧ अवधी, मगही, भोजपुरी तथा मैथिली बोली में से बिहारी हिन्दी से सम्बन्ध नहीं है — अवधी का — एक और द्रोणाचार्य
- ❧ “हिन्दी साहित्य का अतीत” रचना के लेखक हैं — विश्वनाथ प्रसाद मिश्र — “कविता करना अनन्त पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनन्त उत्कण्ठा से कवि जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई।”
- ❧ दोहा (दूहा) मूलतः छंद है — अपभ्रंश का यह संवाद-पंक्ति है — स्कन्दगुप्त से
- ❧ संदेशडउ सवित्थरउ हउँ कहणहँ असमत्था। — फणीश्वरनाथ रेणु
- ❧ भण पिय इक्कति बलियडइ बेवि समाणा हत्था। — अर्थ सौरस्य ही कविता का प्राण है।” कथन है
- ❧ दोहा है — अब्दुर्रहमान का — महावीर प्रसाद द्विवेदी का
- ❧ जो नर दुख में दुख नहि माँ। — आई.ए. रिचर्ड्स की कृति नहीं है — कल्चर एण्ड अनाकी
- ❧ सुख सनेह अरु भय नहि जाके, कंचन माटी जानै। — रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है
- ❧ काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं — गुरुनानक — दोहाकोश (8वीं शताब्दी), श्रावकाचर (10वीं शताब्दी), संदेशरसक (12वीं-13वीं शताब्दी), कीर्तिलता (14वीं-15वीं शताब्दी)
- ❧ कुम्भनदास, कृष्णदास, छीतस्वामी तथा ध्रुवदास में से ‘अष्टछाप’ के कवि नहीं हैं — ध्रुवदास — रचनाकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
- ❧ तुम नीके दुहि जानत गैया। — कुतुबन (16वीं शताब्दी), उसमान (1613 ई.), नूर मुहम्मद (1644 ई.) कासिमशाह (1793 ई.)
- ❧ चलिए कुँवर रसिक मनमोहन लागौ तिहारे पैयाँ। — कुम्भनदास — रचनाकाल के अनुसार काव्यकृतियों का सही क्रम है
- ❧ काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं — रायमल्ल पांडे — ललितललाम (संवत् 1716-1745), भावविलास (संवत् 1746), शृंगार निर्णय (संवत् 1809), जगद् विनोद (संवत् 1810)
- ❧ ‘हनुमच्चरित’ के रचयिता हैं — मतिराम का — जन्मकाल के अनुसार कथाकारों का सही अनुक्रम है
- ❧ ‘ललित ललाम’ किसका ग्रन्थ है — भगवतीचरण वर्मा (1903-1981 ई.), जैनेन्द्र (1905-1988 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979 ई.), अमृतलाल नागर (1916-1990 ई.)
- ❧ डेल सो बनाय आय मेलत सभा के बीच लोगन कबित्त कीबो खेल करि जानो है। ये काव्य पंक्तियाँ हैं — ठाकुर की — प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
- ❧ भारतेन्दु-मण्डल के लेखक नहीं हैं — राजा लक्ष्मण सिंह — इन्दुमती (1900 ई.), उसने कहा था (1915 ई.), मक्रील (1934 ई.), कफन (1936 ई.)
- ❧ ‘रसकलस’ रचना है — अयोध्यासिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ की — प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है
- ❧ “क्या कहा मैं अपना खंडन करता हूँ? — आजकल (1945 ई.), सारिका (1960 ई.), समकालीन भारतीय साहित्य (1980 ई.), नया ज्ञानोदय (2002 ई.)
- ❧ ठीक है तो, मैं अपना खंडन करता हूँ; — आजकल (1945 ई.), सारिका (1960 ई.), समकालीन भारतीय साहित्य (1980 ई.), नया ज्ञानोदय (2002 ई.)
- ❧ मैं विराट् हूँ-मैं समूहों को समोये हूँ।” पंक्तियाँ हैं — सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ की — नोट— ज्ञानोदय पत्रिका का प्रकाशन सन् 1955 से हो रहा है, अब इसका नाम ‘नया ज्ञानोदय’ है।
- ❧ “आज मैं अकेला हूँ, अकेले रहा नहीं जाता जीवन मिला है यह, रतन मिला है यह” पंक्तियाँ हैं — त्रिलोचन की — प्रकाशन काल के आधार पर भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है
- ❧ स्त्री लेखन का प्रस्थान बिन्दु माना जाता है — मित्रो मरजानी उपन्यास को — हानूश (1977 ई.), माधवी (1985 ई.), मुआवजे (1993 ई.), आलमगीर (1999 ई.)

प्रकाशन काल की दृष्टि से महिला नाटककारों के नाटकों का सही

अनुक्रम है

- बिना दीवारों का घर (1965 ई.), ठहरा हुआ पानी (1975 ई.),
जो राम रचि रखा (1981 ई.), नेपथ्य राग (2004 ई.)

प्रकाशन वर्ष के आधार पर रचनाओं का सही अनुक्रम है

- सम्पत्तिशास्त्र (1908 ई.), साहित्यालोचन (1949 ई.), संस्कृति
के चार अध्याय (1956 ई.), मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970 ई.)

रचनाकाल के आधार पर ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

- काव्यादर्श (650 ई.), ध्वन्यालोक (9वीं शताब्दी), काव्यमीमांसा
(880-920 ई.), साहित्यदर्पण (14वीं शताब्दी)

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) हिन्दी साहित्य की भूमिका	— हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	— रामकुमार वर्मा
(c) उत्तरी भारत की संत परम्परा	— परशुराम चतुर्वेदी
(d) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास	— बच्चन सिंह

सही सुमेलित हैं—

सम्प्रदाय	प्रवर्तक
(a) श्री सम्प्रदाय	— रामानुजाचार्य
(b) रुद्र सम्प्रदाय	— विष्णु स्वामी
(c) सनकादि सम्प्रदाय	— निम्बार्काचार्य
(d) राधा वल्लभी सम्प्रदाय	— श्री हितजी

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) कुमारपाल प्रतिबोध	— सोमप्रभु सूरि
(b) प्रबन्ध चिंतामणि	— जैनाचार्य मेरुतुंग
(c) कुमारपाल चरित	— हेम चंद्र
(d) हम्मीर रासो	— शारंगधर

सही सुमेलित हैं—

सम्पादक	पत्रिका
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	— कविवचन सुधा
(b) प्रेमचन्द	— हंस
(c) महावीर प्रसाद द्विवेदी	— सरस्वती
(d) अज्ञेय	— प्रतीक

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	रचनाकार
(a) काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध	— जयशंकर प्रसाद
(b) शेष स्मृतियाँ	— रघुवीर सिंह
(c) मेरी जीवन यात्रा	— राहुल सांकृत्यायन
(d) शृंखला की कड़ियाँ	— महादेवी वर्मा

सही सुमेलित हैं—

पंक्तियाँ	कवि
(a) कर्म का भोग भोग का कर्म यही जड़ का चेतन आनन्द	— जयशंकर प्रसाद
(b) होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन! — निराला कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।	
(c) मौन भी अभिव्यंजना है: जितना — अज्ञेय तुम्हारा सच है उतना ही कहो।	
(d) परम अभिव्यक्ति लगातार घूमती है जग में — मुक्तिबोध पता नहीं जाने कहाँ, जाने कहाँ वह है।	

सही सुमेलित हैं—

पात्र	नाटक
(a) पर्णदत्त	— स्कन्दगुप्त
(b) हेरूप	— कलंकी
(c) ओक्काक	— सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक
(d) गालव	— माधवी

सही सुमेलित हैं—

एकांकी	एकांकीकार
(a) जोंक	— उपेन्द्रनाथ अशक
(b) शिवाजी का सच्चा स्वरूप	— सेठ गोविन्ददास
(c) प्रतिभा का विवाह	— भुवनेश्वर प्रसाद
(d) पृथ्वीराज की आँखें	— रामकुमार वर्मा

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) काव्य में अभिव्यंजनावाद	— लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'
(b) रसपीयूषनिधि	— सोमनाथ
(c) रसकलस	— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) हिन्दी नवरत्न	— मिश्रबन्धु

दिसम्बर - 2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ग, घ, ङ, द, प, फ तथा द, ध में से अघोष ध्वनि है — प, फ
- रामदहिन मिश्र की कृति है — प्रवेशिका हिन्दी व्याकरण
- 'हिन्दी रीति ग्रन्थों की परम्परा चिंतामणि त्रिपाठी से चली, अतः रीतिकाल का आरम्भ उन्हीं से मानना चाहिए' कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- हिन्दी साहित्य के रीतिकाल का 'शृंगार काल' नाम रखा — विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने
- बालचंद विज्जावड़ भासा दुहु नहि लगइ दुज्जन हासा। काव्य पंक्तियाँ हैं — विद्यापति की
- शुक और शुकी द्वारा कथा का वर्णन किया गया है — पृथ्वीराज रासो में
- संत मत के अलावा 'शब्द' (सबद) का प्रचलन और पंथ में हुआ था — नाथ पंथ में
- कुछ नहीं का नाँव धरि भरमा सब संसार। साँच झूठ समझे नहीं, ना कुछ किया विचार।। उपर्युक्त दोहा है — दादूदयाल का
- 'ब्राह्म सम्प्रदाय' के प्रवर्तक हैं — मध्वाचार्य
- कहा करें बैकुंठहि जाय? जहँ नहि नंद, जहाँ न जसोदा, नहि जहँ गोपी ग्वाल न गाया उपर्युक्त काव्य पंक्तियाँ हैं — परमानन्ददास की
- 'ज्ञानदीप' के रचनाकार हैं — शेख नबी
- गगन हुता नहिं महि हुती हुते चंद नहिं सूर। ऐसे अन्धकार महँ रचा मुहम्मद नूर।। यह दोहा जायसी के इस काव्य कृति से है — अखरावट
- नोट—यूजीसी/सीबीएसई ने इस प्रश्न का उत्तर 'अखिरी कलाम' माना है।
- कमलदल नैननि की उनमानि। बिसरत नाहिं, सखी! मो मन तें मंद-मंद मुस्कनि। पंक्तियों के रचनाकार हैं — रहीम
- गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग। यह पंक्ति है — तुलसीदास की
- 'हिन्दू हृदय और मुसलमान हृदय आमने-सामने करके अजनबीपन मिटाने वालों में इन्हीं का नाम लेना पड़ेगा'-रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन है — जायसी के सम्बन्ध में
- हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कति मो अकुलानि समानै। नीर सनेही को लाय कलंक निरास हवै कायर त्यागत प्रानै।। 'नीर सनेही' में अलंकार है — सभंगपद श्लेष
- भिखारीदास ने 'काव्य निर्णय' में विवेचन किया है — सर्वांग विवेचन
- रामचन्द्र शुक्ल ने बिहारी की भाषा के बारे में लिखा है — बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है
- जहाँ कलह तहँ सुख नहीं, कलह सुखन को सूला। सबै कलह इक राज में, राज कलह को मूला।। इस दोहे के द्वारा अतीतकालीन चित्तवृत्ति का वर्णन किया है — नागरीदास ने
- "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को भी नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया।" यह कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- 'क्या हिन्दी नाम की कोई भाषा ही नहीं' लेख के रचनाकार हैं — महावीर प्रसाद द्विवेदी
- "सुधि मेरे आगम की जग में सुख की सिहरन को अंत खिली!" पंक्तियाँ हैं — महादेवी वर्मा की
- 'देहाती दुनिया' के लेखक हैं — शिवपूजन सहाय
- "यद्यपि 1942 के जन-आन्दोलन के समय इस गाँव में न तो फौजियों का कोई उत्पात हुआ था और न आन्दोलन की लहर ही इस गाँव में पहुँच पायी थी, किन्तु जिले भर की घटनाओं की खबर अफवाहों के रूप में यहाँ तक जरूर पहुँची थी।" पंक्तियाँ हैं — मैला आँचल उपन्यास से
- लियो लावेंथल, जॉर्ज लूकाच, जॉक देरिदा तथा इप्पोलित तेन में से मौर्क्सवादी विचारक हैं — जॉर्ज लूकाच
- निर्मल वर्मा का यात्रा-संस्मरण 'चीड़ों पर चाँदनी' आधारित है — यूरोप प्रवास से
- 'अछूत की शिकायत' कविता का प्रकाशन वर्ष है — 1914
- उपन्यासों 'वे दिन, लाल पसीना, लेकिन दरवाजा तथा निर्वासन' में से किसका सम्बन्ध आप्रवासी जीवन से है — लाल पसीना का
- 'स्त्रीत्व का मानचित्र' रचना है — अनामिका की

- विषय विषमौषध, नीलदेवी, अन्धेर नगरी तथा भारत दुर्दशा में से भारतेन्दु ने नाट्य रासक व लास्य रूपक कहा है
- भारत दुर्दशा नाटक को
- नाटक बाल भगवान, जलता हुआ रथ, कोर्ट मार्शल तथा सबसे उदास कविता नाटक में से जातिवाद की समस्या को उठाया गया है
- कोर्ट मार्शल में
- बेन जॉनसन के नाटक 'वालपोनि' या 'दी फॉक्स' का हिन्दी रूपान्तर रामेश्वर प्रेम का नाटक है
- लोमड़ वेश
- अधिकार का रक्षक, बहनें, सूखी डाली तथा तौलिए एकांकी में से संयुक्त परिवार की समस्या को उठाया गया है
- सूखी डाली में
- 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' का प्रकाशन वर्ष है
- 1817 ई.
- रेम्बलर, साइंस एंड पोइट्री, इल्यूजन एंड रियलिटी तथा एस्थेटिक में से डॉ. जॉनसन की कृति है
- रेम्बलर
- आचार्य विश्वनाथ का कथन नहीं है
- रस अपने आकार से भिन्न रूप में आस्वादित किया जाता है
- 'ध्वन्यालोक' ग्रन्थ है
- नौवीं शताब्दी का
- "सौन्दर्य की वस्तुगत सत्ता होती है, इसलिए यह शुद्ध सौन्दर्य नाम की कोई चीज नहीं होती" कथन है
- रामविलास शर्मा का
- रचनाकाल की दृष्टि से सही क्रम है
- जयचन्द प्रकाश (12वीं सदी), मृगावती (1500 ई.), मधुमालती (1543 ई.) तथा हंसजवाहिर (1726 ई.)
- जन्मकाल की दृष्टि से कवियों का सही क्रम है
- चन्दबरदाई (12वीं सदी), जगनिक (1173 ई.), खुसरो (1255-1315 ई.), श्रीधर (1859-1928 ई.)
- जन्मकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही क्रम है—
- बिहारी, चिन्तामणि, मतिराम, घनानंद
- 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में रामचन्द्र शुक्ल ने कृष्णभक्ति शाखा के कवियों का क्रम प्रस्तुत किया है
- परमानन्ददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी
- रचनाकाल के अनुसार विष्णु प्रभाकर के उपन्यासों का सही क्रम है
- ढलतीरात (1951 ई.), स्वप्नमयी (1956 ई.), कोई तो (1980 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1992 ई.)
- कथाकारों का जन्मकाल के आधार पर सही अनुक्रम है
- विष्णु प्रभाकर (21 जून, 1912-11 अप्रैल, 2009 ई.), धर्मवीर भारती (25 दिसम्बर, 1926-4 सितम्बर, 1997 ई.), मन्नु भण्डारी (3 अप्रैल, 1931 ई.), नरेन्द्र कोहली (6 जनवरी, 1940 ई.)
- रचनाकाल के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है
- नूतन ब्रह्मचारी (1886 ई.), अधखिला फूल (1907 ई.), सेवासदन (1919 ई.), बूँद और समुद्र (1956 ई.)

- रचनाकाल के अनुसार कहानी संग्रहों का सही अनुक्रम है
- सतह से उठता आदमी (1957 ई.), ये तेरे प्रतिरूप (1961 ई.), भूख के तीन दिन (1965 ई.), एक धनी व्यक्ति का बयान (1997 ई.)
- नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में रचनाकाल के आधार पर कहानी संग्रहों का अनुक्रम स्पष्ट करना कठिन है, क्योंकि भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित मुक्तिबोध की कहानी संग्रह 'सतह से उठता आदमी' का प्रथम संस्करण वर्ष 1957 में दर्शित है, जबकि कई पुस्तकों में यह लिखा है कि 'सतह से उठता आदमी' मुक्तिबोध की मृत्यु (1964) के बाद प्रकाशित हुई। कहीं-कहीं इस कहानी संग्रह का प्रकाशन वर्ष (1971) माना गया है। सम्भवतः इस आधार पर यूजीसी/सीबीएसई ने अपने उत्तर कुंजी में यह अनुक्रम दर्शित किया है—ये तेरे प्रतिरूप, भूख के तीन दिन, सतह से उठता आदमी, एक धनी व्यक्ति का बयान।
- जयशंकर प्रसाद के काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है
- प्रेमपथिक (1910 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1926 ई.), लहर (1935 ई.)
- काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है
- युगांत (1936 ई.), स्वर्णधूलि (1947 ई.), लोकायतन (1964 ई.), सत्यकाम (1975 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार पुस्तकों का सही अनुक्रम है
- मध्यकालीन बोध का स्वरूप (1970 ई.), हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास (1986 ई.), हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास (1996 ई.), हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास (2003 ई.)
- कालक्रम की दृष्टि से नाटकों का सही अनुक्रम है
- त्रिशंकु (1973 ई.), आला अफसर (1979 ई.), भूख आग है (1998 ई.), विषवंश (1999 ई.)
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
- एस्थेटिक (1902 ई.), द सेक्रेड वुड (1920 ई.), प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म (1929 ई.), रिवेल्युशन (1966 ई.)
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से आलोचना-ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
- कालिदास की निरंकुशता (1911 ई.), रस मीमांसा (1950 ई.), शुद्ध कविता की खोज (1966 ई.), महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण (1977 ई.)
- स्थापना (A) : काव्येषु नाटकं रम्यम्।
- तर्क (R) : क्योंकि उसमें काव्य के साथ-साथ सभी ललित कलाओं का समन्वय होता है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : काव्यानुभूति का मूल आधार लोकानुभूति ही है।
 तर्क (R) : क्योंकि केवल लोक जीवन का यथार्थ ही उसके ज्ञान और भाव-क्षेत्रों का विस्तार करता है, कल्पना नहीं।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : केवल सुन्दरता ही कविता का लक्ष्य और उसका एकमात्र नियम है और सौन्दर्य ही अनन्तकाल तक कविता में रूँजता है।
 तर्क (R) : क्योंकि सत्य और शिव कविता कामिनी के सौन्दर्यवर्द्धन के लिए न तो उतने उपयोगी हैं और न कालजयी।

— (A) गलत और (R) गलत है

स्थापना (A) : आधुनिक मनुष्य को इतिहास और समय के नियमों-कानूनों का जितना ज्ञान है, उतना पहले किसी युग में प्राप्त नहीं था।
 तर्क (R) : क्योंकि मध्यकालीन संस्कृति में धर्म का जो केन्द्रीय स्थान था, उसने धीरे-धीरे पीछे हटते हुए अपनी जगह इतिहास को समर्पित कर दी।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : साहित्य-सर्जना का एक आधार सामूहिक अचेतन को माना गया है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मूलतः सामूहिक वाचन के लिए ही होती है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : आधुनिकता परम्परा का विलोम नहीं है, क्योंकि यह प्राचीन और नवीन के द्वन्द्व का परिणाम है।

तर्क (R) : क्योंकि आधुनिकता ने मानव-ज्ञान को निरन्तरता और नूतनता प्रदान की है, संस्कृति को गतिशीलता दी है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : भारतेन्दु युगीन गद्य की भाषा तो खड़ी बोली हो गई पर कविता की भाषा ब्रज भाषा ही रही।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन अधिकांश कवि ब्रज क्षेत्र के थे।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : शब्द को सुनते ही संकेत के बल पर जो अर्थ साक्षात् समझ में आता है, उसे वाच्यार्थ कहते हैं। इस अर्थ को सूचित करने वाली शब्दवृत्ति अभिधावृत्ति कहलाती है।

तर्क (R) : क्योंकि भाषा में अर्थ-ग्रहण अभिधावृत्ति से ही होता है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है, उसका साहित्य भी वैसा ही होता है।

तर्क (R) : क्योंकि जाति साहित्य का निर्णायक तत्व है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : उत्तर आधुनिकता, पूँजीवादी विकास की नई स्थिति और विश्व की नई अर्थव्यवस्था का परिणाम है।

तर्क (R) : क्योंकि नवपूँजीवाद की नाना विकृतियों और नाना रूपों से सामाजिक साक्षात्कार ही उत्तर आधुनिकता है।

— (A) सही और (R) सही है

सही सुमेलित हैं—

सिद्धान्त

सिद्धान्तकार

(a) द्वैत	—	मध्वाचार्य
(b) द्वैताद्वैत	—	निम्बार्काचार्य
(c) शुद्धद्वैत	—	वल्लभाचार्य
(d) विशिष्टाद्वैत	—	रामानुजाचार्य

सही सुमेलित हैं—

रचनाकार

रचना

(a) चतुर्भुजदास	—	द्वादशयश
(b) मीराबाई	—	रागगोविन्द
(c) श्रीभट्ट	—	युगलशतक
(d) नन्ददास	—	अनेकार्थमंजरी

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ

लेखक

(a) हिततरंगिणी	—	कृपाराम
(b) सुदामाचरित्र	—	नरोत्तमदास
(c) माधवानलकामकंदला	—	आलम
(d) विज्ञानगीता	—	केशवदास

सही सुमेलित हैं—

रचना

रचनाकार

(a) अर्द्धकथानक	—	बनारसीदास
(b) काव्यकल्पद्रुम	—	सेनापति
(c) अलकशतक	—	मुबारक
(d) बारहमासा	—	सुन्दरदास

सही सुमेलित हैं—

रचना

रचनाकार

(a) राठौड़ों की ख्यात	—	दयालदास
(b) विराट पुराण	—	गोरखनाथ
(c) पुष्पदंत	—	उत्तर पुराण
(d) जिनदत्त सूरि	—	उपदेशरसायनरास

नोट—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार विराट पुराण की रचना गोरखनाथ के अनुयायी शिष्यों द्वारा की गयी है।

सही सुमेलित हैं—

कवि	पंक्ति
(a) मैथिलीशरण गुप्त	— वैश्यो! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का, सब धन विदेशी हर रहे हैं पार है क्या क्लेश का?
(b) जयशंकर प्रसाद	— तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में, कुछ सत्ता है नारी की। समरसता है सम्बन्ध बनी अधिकार और अधिकारी की।
(c) पन्त	— प्रथम रश्मि का आना रेगिणि! तू ने कैसे पहचाना? कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनि? पाया तू ने यह गाना?
(d) महादेवी वर्मा	— क्या अमरों का लोक मिलेगा तेरी करुणा का उपहार? रहने दो हे देव! अरे यह मेरा मिटने का अधिकार।

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	रचनाकार
(a) साहित्य का समाजशास्त्र	— नगेन्द्र
(b) प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	— रामविलास शर्मा
(c) आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान	— केदारनाथ सिंह
(d) अद्यतन	— अज्ञेय

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) छप्पर	— जयप्रकाश कर्दम

(b) शिकंजे का दर्द	— सुशीला टाकभोरे
(c) अपने-अपने पिंजरे	— मोहनदास नैमिशराय
(d) झोंपड़ी से राजभवन	— माताप्रसाद

सही सुमेलित हैं—

कहानी	रचनाकार
(a) यारों के यार	— कृष्णा सोबती
(b) मछली मरी हुई	— राजकमल चौधरी
(c) सपाट चेहरे वाला आदमी	— दूधनाथ सिंह
(d) कोसी का घटवार	— शेखर जोशी

नोट—यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कुछ त्रुटियाँ हैं। रामकमल चौधरी द्वारा लिखित 'मछली मरी हुई' उपन्यास है, न कि कहानी। 'सपाट चेहरे वाला आदमी' शीर्षक से बच्चन सिंह ने भी एक कहानी संग्रह लिखा है।

सही सुमेलित हैं—

संवाद-पंक्ति	नाटक
(a) मैंने भावना में भावना का वरण किया है.....	— आषाढ़ का एक दिन
(b) अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है.....	— स्कन्दगुप्त
(c) समझदारी आने पर यौवन चला जाता है जब तक माला गूँथी जाती है फूल कुम्हला जाते हैं.....	— चन्द्रगुप्त
(d) नारी का आकर्षण पुरुष को पुरुष बनाता है और उसका अपकर्षण उसे गौतम बुद्ध.....	— लहरों के राजहंस

जून - 2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

स्वयंभू, सरहपाद, पुष्पदंत तथा गोरखनाथ में से महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का पहला कवि माना है — **सरहपाद को**

“संदेसडउ सबित्थरउ पइ मइ कहणु न जाइ। जे कालांगुलि मूंदडऊ सो बाँहडी समाइ।” पंक्तियों के रचनाकार हैं — **अदहमाण**

“कबीर की अपेक्षा खुसरो का ध्यान बोलवाल की भाषा की ओर अधिक था”, कथन है — **रामचन्द्र शुक्ल का**

वैराग्य संदीपनी, कृष्ण गीतावली, हनुमच्चरित तथा पार्वती मंगल ग्रन्थों में से तुलसीदास की रचना नहीं है — **हनुमच्चरित**

“जायसी पहले कवि हैं, सूफी बाद में”, कथन है — **विजयदेव नारायण साही**

“जसोदा! कहा कहीं हों बात? तुम्हारे सुत के करतब मो पै कहे नहिं जात” पंक्तियों के रचयिता हैं — **चतुर्भुजदास**

- “अधर-मधुरता, कठिनता-कुच, तीक्ष्णता-त्यूँर।
रस-कवित्त-परिपक्वता जाने रसिक न और॥” उक्त दोहे द्वारा काव्य-
रसिक को परिभाषित किया है — **भिखारीदास ने**
- स्वच्छंदता, सामाजिकता, निर्वैयक्तिकता तथा ऐतिहासिकता में से रीतिमुक्त
कविता की विशेषता है — **स्वच्छंदता**
- ‘एकांत संगीत’ रचना है — **हरिवंशराय बच्चन की**
- ‘दुःखिनी बाला’ नाटक के लेखक हैं — **राधाकृष्णदास**
- प्रेमपवीसी, प्रेमद्वादशी, मुहब्बत की राहें तथा सप्त सरोज में से
प्रेमचन्द का कहानी-संग्रह नहीं है — **मुहब्बत की राहें**
- आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर, अच्छे आदमी तथा गरीबी हटाओ
में से फणीश्वरनाथ रेणु का कहानी-संग्रह नहीं है — **गरीबी हटाओ**
- मृणाल किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है — **त्यागपत्र का**
- बम्बई के मजदूर संगठनों के जीवन-संघर्ष पर आधारित उपन्यास है
— **आवाँ**
- ‘शिवशंभु के चिट्ठे’ के रचनाकार हैं — **बालमुकुंद गुप्त**
- काशी नागरी प्रचारिणी सभा के प्रथम सभापति थे — **बाबू राधाकृष्णदास**
- कामा (.), अत्यविराम (:), प्रश्नवाचक (?) तथा पूर्ण विराम (!) में से
कौन-सा विराम चिह्न ऐसा है जो हिन्दी में अंग्रेजी भाषा से नहीं लिया
गया है — **पूर्ण विराम (!)**
- पार्श्विक, उत्क्षिप्त, प्रकंपित तथा संघर्षहीन में से प्रयत्न के आधार पर
‘ल’ ध्वनि है — **पार्श्विक**
- श्लेष, वीप्सा, उपमा तथा वक्रोक्ति में से शब्दालंकार नहीं है — **उपमा**
- रस-सूत्र की व्याख्या करते हुए ‘अभिव्यक्तिवाद’ की स्थापना की
— **अभिनव गुप्त ने**
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
— **श्रावकाचार (933 ई.), भरतेश्वर बाहुबली रास (1184 ई.),
चंदनबाला रास (1200 ई.) रेवंतगिरि रास (1231 ई.)**
- अलंकार सम्प्रदाय से सम्बद्ध अलंकार ग्रन्थों का सही कालानुक्रम है
— **काव्यालंकार (7वीं शताब्दी), काव्यालंकार सार संग्रह (8वीं
शताब्दी), अलंकार सर्वस्य (12वीं शताब्दी), अलंकार कौस्तुभ
(17वीं-18वीं शताब्दी)**
- जन्मकाल के अनुसार पाश्चात्य आलोचकों का सही कालानुक्रम है
— **जॉन ड्राइडन (1631-1700 ई.), कॉलरिज (1772-1834
ई.), मैथ्यू आर्नाल्ड (1822-1888 ई.), क्रोचे (1866-1952 ई.)**

- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है — **घाराऊ
घटना (1893 ई.), स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी (1899 ई.),
अद्भुत प्रायश्चित (1905 ई.), अँगूठी का नगीना (1918 ई.)**
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है
— **अपने-अपने पिंजरे (1995 ई.), जूठन (1997 ई.), मुर्दहिया
(2010 ई.), शिकंजे का दर्द (2012 ई.)**
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही
अनुक्रम है — **मैला आँचल (1954 ई.), परती परिकथा (1957 ई.),
दीर्घतपा (1963 ई.), जुलूस (1965 ई.)**
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार कहानी-संग्रहों का सही अनुक्रम है
— **फाँसी (1929 ई.), बिखरे मोती (1932 ई.), सतमी के बच्चे
(1935 ई.), दो बँके (1936 ई.)**
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
— **सियाराम शरण गुप्त (1895-1963 ई.), सोहनलाल द्विवेदी
(1906-1988 ई.), श्याम नारायण पाण्डेय (1907-1991 ई.),
रामधारी सिंह दिनकर (1908-1974 ई.)**
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्र-पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है
— **हरिश्चन्द्र भैगजीन (1873 ई.), आनंदकादंबिनी (1881 ई.),
नागरी प्रचारिणी (1897 ई.), सरस्वती (1900 ई.)**

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) जयमयंक जसवन्धिका	मधुकर कवि
(b) पृथ्वीराज रासो	चंदबरदाई
(c) श्रावकाचार	देवसेन
(d) नेमिनाथ रास	सुमति मणि

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	लेखक
(a) साहित्य लहरी	सूर दास
(b) प्रेम वाटिका	रसखान
(c) रसमंजरी	नंददास
(d) भक्त नामावली	ध्रुवदास

कवि	रचना
(a) आलम	माधवानल कामकंदला
(b) घनानंद	सुजानहित प्रबंध
(c) ठाकुर	ठाकुर ठसक
(d) द्विजदेव	शृंगारलतिका सौरभ

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) एक पतंग अनंत में	— अशोक वाजपेयी
(b) यहाँ से देखो	— केदारनाथ सिंह
(c) बात बोलेगी	— शमशेर बहादुर सिंह
(d) आत्मजयी	— कुँवर नारायण

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) सूखी डाली	— उपेन्द्रनाथ अशक
(b) कारवाँ	— भुवनेश्वर प्रसाद
(c) बादल की मृत्यु	— रामकुमार वर्मा
(d) एक घूँट	— जयशंकर प्रसाद

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) मेरी आत्म कहानी	— श्यामसुन्दर दास
(b) स्मृति की रेखाएँ	— महादेवी वर्मा
(c) माटी की मूरतें	— रामवृक्ष बेनीपुरी
(d) हरिश्चन्द्र	— शिवनंदन सहाय

सही सुमेलित हैं—

लेखिका	रचना
(a) ममता कालिया	— एक पत्नी के नोट्स
(b) नासिरा शर्मा	— जिंदा मुहावरे
(c) चित्रा मुद्गल	— एक जमीन अपनी
(d) अलका सरावगी	— शेष कादंबरी

सही सुमेलित हैं—

काव्य शास्त्रीय कृति	आचार्य
(a) औचित्य विचार चर्चा	— क्षेमेन्द्र
(b) ध्वन्यालोक	— आनन्द वर्धन
(c) शृंगार प्रकाश	— भोजराज
(d) काव्य मीमांसा	— राजशेखर

सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रन्थ	आलोचक
(a) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	— शिवदान सिंह चौहान
(b) शब्द और मनुष्य	— परमानन्द श्रीवास्तव
(c) अज्ञेयः वागर्थ-वैभव	— रमेशचन्द्र शाह
(d) लोकवादी तुलसीदास	— विश्वनाथ त्रिपाठी

सही सुमेलित हैं—

नाटककार	नाटक
(a) हरिकृष्ण प्रेमी	— रक्षाबंधन
(b) गोविन्द वल्लभ पंत	— अंगूर की बेटी
(c) लक्ष्मी नारायण मिश्र	— संन्यासी
(d) चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	— अशोक

स्थापना (A) : मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली मूल प्रवृत्ति भावात्मिका है। केवल तर्कबुद्धि या विवेचना के बल से हम किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि जहाँ जटिल बुद्धि-व्यापार के अनंतर किसी कर्म का अनुष्ठान देखा जाता है, वहाँ भी तह में कोई भाव या वासना छिपी रहती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : अभिव्यंजनावादियों के अनुसार कवि या कलाकार अपने अंतर की भावना को बाहर प्रकाशित करता है, बाह्य वस्तु को नहीं।

तर्क (R) : क्योंकि अभिव्यंजनावादी अंतर की भावना की जगह बाह्य वस्तु को अधिक महत्व देता है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : मन को अनुरंजित करना, उसे सुख या आनन्द पहुँचाना ही कविता का अंतिम लक्ष्य मानना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि कविता मनोविलास की सामग्री है जिससे सहृदय पाठक अपनी कुंठाओं से मुक्त होता है। इसे ही सहृदय की मुक्तावस्था कहा गया है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

स्थापना (A) : फ्रायड के अनुसार, कला और धर्म, दोनों का उद्भव अचेतन मानस संचित प्रेरणाओं और इच्छाओं में ही होता है। इस कामशक्ति के उन्नयन के फलस्वरूप कलाकार सर्जन करता है।

तर्क (R) : क्योंकि अवचेतन मानस में कामशक्ति के उन्नयन के फलस्वरूप कलाकार सर्जन करता है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : काव्य का जो चरम लक्ष्य सर्वभूत को आत्मभूत कराके अनुभव कराना है, उसके साधन में भी अहंकार का त्याग आवश्यक है।

तर्क (R) : क्योंकि जब तक इस अहंकार से पीछा न छूटेगा, तब तक प्रकृति के सब रूप मनुष्य की अनुभूति के भीतर नहीं आ सकते।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- अंग्रेजी, हिन्दी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा में से हिन्दी साहित्य का इतिहास सर्वप्रथम लिखा गया — फ्रेंच भाषा में
- ‘पंडित सअल सत बरखाणइ। देहहि बुद्ध बसंत न जाणइ।’ इस पंक्ति के रचनाकार हैं — सरहपा
- ‘आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं।’ आचार्य शुक्ल का यह कथन सम्बन्धित है — विद्यापति से
- मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की पहली पुस्तक है — वर्णरत्नाकर
- ‘राजमती’ नायिका है — वीसलदेव रासो की
- ‘शाश्वती’ डायरी के लेखक हैं — अज्ञेय
- काव्य कृतियों गीतगोविन्द टीका, प्रेमतत्वनिरूपण, राग गोविन्द तथा नरसी जी का मायरा में से मीराबाई की रचना नहीं है — प्रेमतत्वनिरूपण
- रीतिकालीन कवियों बिहारी, घनानन्द, देव तथा पद्माकर में से अपनी कविताओं में ऋतुओं और त्योहारों के साथ जीवन को खूबसूरती के साथ मिलाया है — पद्माकर ने
- कविकुलकल्पतरु, भावविलास, भवानीविलास तथा अष्टयाम में से देव की रचना नहीं है — कविकुलकल्पतरु
- ‘सूर समाना चन्द में दहूँ किया घर एक’ काव्य पंक्ति है — कबीरदास की
- रासपंचाध्यायी लिखी गयी है — रोला छन्द में
- ‘प्रकृति के नाना रूपों के साथ केशव के हृदय का सामंजस्य कुछ भी न था’ कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- ‘हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या? रहै आजाद या जग में, हमन दुनियाँ से यारी क्या? काव्य पंक्तियों के रचयिता हैं — कबीरदास
- “हिन्दू मग पर पाँव न राख्यौ। का बहुतैं जो हिन्दी भाख्यौ।” काव्य पंक्तियाँ हैं — अवधी बोली में
- ‘एक तनी हुई रस्सी है जिस पर मैं नाचता हूँ।’ पंक्ति के रचनाकार हैं — अज्ञेय
- ‘युगधारा’ के रचयिता हैं — नागार्जुन
- ‘शब्द जादू हैं। मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है।’ इन पंक्तियों के रचनाकार हैं — सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन ‘अज्ञेय’
- ‘बीती विभावरी जाग री। अम्बर पनघट में डुबो रही, तारा-घट उषा-नागरी।’ उपर्युक्त पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के काव्य संग्रह में संकलित हैं — लहर में
- ‘अन्धा कुआँ’ नाट्यकृति है — लक्ष्मीनारायण लाल की
- ‘मल्लिका’ पात्र है — आषाढ़ का एक दिन नाटक की
- समान्तर चलते हुए, अपने दायरे, गलत होता पंचतंत्र तथा जाह्नवी में से राजी सेठ की कहानी नहीं है — जाह्नवी
- ‘आधा गाँव’ उपन्यास में चित्रित गाँव है — गंगौली
- महिला पुलिस कर्मियों के जीवन पर आधारित उपन्यास है — गुनाह बेगुनाह
- छप्पर के लेखक हैं — जयप्रकाश कर्दम
- नादान दोस्त, चोरी, कजाकी तथा दो सखियाँ में से शिशु संवेदना की कहानी नहीं है — दो सखियाँ
- भुवनेश्वर प्रसाद की एकांकी है — स्ट्राइक
- ‘भारतेन्दुबाबू हरिश्चन्द्र का जीवन-चरित’ ग्रन्थ के रचनाकार हैं — राधाकृष्णदास
- ‘विभक्ति विचार’ नामक पुस्तक की रचना की है — गोविन्द नारायण ने
- ‘जादुई यथार्थवाद’ (Magical Realism) शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया था — फ्रेन्ज रोह ने
- जोसेफ एडीसन, लुकाच, राफ़ फॉक्स तथा कॉडवेल में से मार्क्सवादी विचारक नहीं हैं — जोसेफ एडीसन
- ‘विरुद्धों का सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है’ धारणा है — रामचन्द्र शुक्ल की
- स्वकीया नायिका का भेद नहीं है — वासकसज्जा
- ध्वनि सिद्धान्त के आचार्य हैं — आनन्दवर्धन
- संवेदनशीलता का असाहचर्य (Dissociation of Sensibility) अवधारणा है — टी.एस. इलियट की
- महादेवी वर्मा की कृति में जीव-जन्तुओं और पशु-पक्षियों से सम्बन्धित संस्मरण है — मेरा परिवार
- भारतीय काव्य शास्त्र में रसगत दोषों की संख्या है — 10
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है — कबीरदास (1398-1518 ई.), गुरुनानक (1469-1539 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.), मलूकदास (1574-1682 ई.)

- रचनाकाल के आधार पर रचनाओं का सही क्रम है
- रसिकप्रिया (1485 ई.), कविकुलकल्पतरु (1650 ई.), ललित ललाम (1659-1688 ई.), अलंकारमाला (1766 ई.),
- टी.एस. इलियट के आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है— द सेक्रेड वुड (1920-21 ई.), सेलेक्टेड एसेज (1917-32 ई.), एलिजाबेथेन एसेज (1934 ई.), एसेज : एन्सिएंट एण्ड मॉडर्न (1936 ई.)
- नोट : यूजीसी/सीबीएसई द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिये गये विकल्पों में से कोई भी विकल्प सही नहीं है। हालांकि यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में यह अनुक्रम सही माना है—द सेक्रेड वुड, एलिजाबेथेन एसेज, सेलेक्टेड एसेज, एसेज : एन्सिएंट एण्ड मॉडर्न।
- नाट्यशास्त्र से सम्बद्ध ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
- अभिनव भारती (10वीं शती), दशरूपक (974-995 ई.), नाट्यदर्पण (12वीं शती), भाव प्रकाशन (13वीं शती)
- ग्रन्थों का सही कालानुक्रम है — प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), जनान्तिक (1981 ई.), मुक्तिबोध : ज्ञान और संवेदना (1998 ई.), कवि कह गया है (2000 ई.)
- हिन्दी काव्यशास्त्र कृतियों का सही कालानुक्रम है
- रसराज (1617-1736 ई.), शृंगारनिर्णय (1751 ई.), रसिकानन्द (1847 ई.), रसकलस (1931 ई.)
- नाटकों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है
- डॉक्टर (1961 ई.), कर्पूर (1972 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1985 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)
- निर्मल वर्मा के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशनकाल के अनुसार सही अनुक्रम है — शब्द और स्मृति (1976 ई.), कला का जोखिम (1981 ई.), ढलान से उतरते हुए (1985 ई.), आदि, अंत और आरम्भ (2001 ई.)
- प्रसाद की काव्यकृतियों का सही अनुक्रम है — उर्वशी (1909 ई.), झरना (1918 ई.), आँसू (1926 ई.), लहर (1926 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
- रश्मिरथी (1952 ई.), कनुप्रिया (1959 ई.), लोकायतन (1964 ई.), आत्मजयी (1965 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है
- प्रागति और परम्परा (1948 ई.), अद्यतन (1977 ई.), अंगद की नियति (1984 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2006 ई.)
- उपन्यासों का सही कालानुक्रम है
- देशद्रोही (1943 ई.), नदी के द्वीप (1951 ई.), शहर में घूमता आईना (1963 ई.), तमस (1993 ई.)
- जगदीश चन्द्र के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — यादों का पहाड़ (1966 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), मुट्ठी भर कांकर (1982 ई.), नरक कुण्ड में वास (1994 ई.)

- प्रकाशन वर्ष के अनुसार ऐतिहासिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है
- मृगयनी (1950 ई.), एकदा नैमिषारण्ये (1972 ई.), अनामदास का पोथा (1976 ई.), अभिज्ञान (1981 ई.)
- स्थापना (A) : मनुष्य के लिए कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य-असभ्य सभी जातियों में, किसी न किसी रूप में पायी जाती है।
- तर्क (R) : इसीलिए कविता की जरूरत मनुष्य जाति को हमेशा रहेगी।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : वैचारिक स्वतन्त्रता साहित्यकार को व्यापक सामाजिक सत्य और संवेदना से विमुख करती है।
- तर्क (R) : क्योंकि विचारबद्धता उसकी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति को सर्वस्वीकृति सामाजिक विस्तार देती है।
- (A) और (R) दोनों गलत हैं
- स्थापना (A) : कवियों ने लोकरक्षा के विधान में करुणा को ही बीज भाव माना है। करुणा से रक्षा का विधान होता है।
- तर्क (R) : क्योंकि कविता में अभिव्यक्त अन्य भाषाओं में लोकरक्षा का विधान नहीं पाया जाता।
- (A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : मिथक सार्वकालिक और सार्वदेशिक होते हैं।
- तर्क (R) : इसीलिए मिथक के माध्यम से किसी भी समय और समाज के अन्तर्विरोध और संवेदना की अभिव्यक्ति सम्भव है।
- (A) गलत और (R) सही है
- स्थापना (A) : नाद सौन्दर्य से कविता की आयु नहीं बढ़ती।
- तर्क (R) : क्योंकि नाद सौन्दर्य का योग कविता का पूर्ण स्वरूप खड़ा करने के लिए कुछ-न-कुछ आवश्यक होता है।
- (A) गलत और (R) सही है
- अभिकथन (A) : मरणासन्न महाकाव्य के गर्भ से उपन्यास का जन्म हुआ है।
- तर्क (R) : क्योंकि उपन्यास का उदय पश्चिम में मध्यवर्ग के उदय के साथ हुआ।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : साधारणीकरण की प्रमुख आधारशिला मानव सुलभ समानानुभूति है।
- तर्क (R) : क्योंकि मानव सुलभ समानानुभूति, स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्ति है, जिसे भारतीय दर्शन का बल भी प्राप्त है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : प्रसाद के नाटकों में रस और द्वन्द्व का आद्यन्त समन्वय हुआ है।

तर्क (R) : कारण कि यह केवल उन पर पश्चिमी नाट्य चिन्तन के प्रभाव से ही सम्भव हुआ।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : आदर्श नागरिक को आत्म विकास करते हुए सारी धरती के सुख में ही अपना सुख मानना चाहिए।

तर्क (R) : क्योंकि प्रत्येक नागरिक के व्यवहार की, उसकी अच्छाई-बुराई की मूल कसौटी समाज-कल्याण की भावना है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : गोदान ग्रामीण जीवन का महाकाव्य है।

तर्क (R) : क्योंकि गोदान में समग्र युग-जीवन का चित्रण हुआ है।

— (A) सही और (R) गलत है

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	लेखक
(a) सर्वगी	— रज्जब
(b) ज्ञानबोध	— मलूकदास
(c) प्रेमप्रागास	— धरणीदास
(d) शब्दसागर	— बूला साहब

नोट—यूजीसी/सीबीएसई ने अपने प्रश्न-पत्र में ज्ञानबोध की जगह 'ग्यानबोध' दिया है।

सही सुमेलित हैं—

रचनाकार	रचना
(a) भूषण	— रस सारांश
(b) घनानन्द	— इश्कलता
(c) सूरति मिश्र	— रस रत्नाकर
(d) मतिराम	— रसराज

सही सुमेलित हैं—

रचना	लेखक
(a) सूरासुरनिर्णय	— मुंशी सदासुखलाल
(b) भाषायोग वशिष्ठ	— रामप्रसाद निरंजनी
(c) भाषा पद्म पुराण	— दौलतराम जैन
(d) चिद्विलास	— दीपचन्द जैन

सही सुमेलित हैं—

रचना	रचनाकार
(a) निशा निमंत्रण	— हरिवंशराय बच्चन
(b) प्रभात फेरी	— नरेन्द्र शर्मा
(c) नींद के बादल	— केदारनाथ अग्रवाल
(d) जीवन के गान	— शिवमंगल सिंह सुमन

सही सुमेलित हैं—

नाटक	रचनाकार
(a) भारत दुर्दशा	— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(b) मयंक मंजरी	— किशोरी लाल गोस्वामी
(c) रुक्मिणी परिणय	— अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(d) सीता वनवास	— ज्वाला प्रसाद मिश्र

सही सुमेलित हैं—

कहानी	रचनाकार
(a) गुलबहार	— किशोरी लाल गोस्वामी
(b) ग्यारह वर्ष का समय	— रामचन्द्र शुक्ल
(c) पंडित और पंडितानी	— गिरिजादत्त वाजपेयी
(d) कुम्भ में छोटी बहू	— बंग महिला

सही सुमेलित हैं—

निबन्ध संग्रह	लेखक
(a) साहित्य का श्रेय और प्रेम	— जैनेन्द्र
(b) आलोक पर्व	— हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) रेती के फूल	— दिनकर
(d) आस्था और सौन्दर्य	— रामविलास शर्मा

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ	लेखक
(a) तिरिकल बैलड्स	— वर्ड्सवर्थ
(b) बायोग्राफिया लिटरोरिया	— कॉलरिज
(c) एस्थेटिक	— क्रोचे
(d) दि फाउन्डेशन ऑफ एस्थेटिक्स	— रिचर्ड्स

सही सुमेलित हैं—

कृति	लेखक
(a) नया साहित्य : नये प्रश्न	— नन्ददुलारे वाजपेयी
(b) रस सिद्धान्त	— नगेन्द्र
(c) मार्क्सवादी साहित्य चिन्तन	— शिवकुमार मिश्र
(d) रोमांटिक साहित्य शास्त्र	— देवराज उपाध्याय

सही सुमेलित हैं—

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ	आचार्य
(a) उज्जवल नीलमणि	— रूप गोस्वामी
(b) कुवलयानन्द	— अप्पय दीक्षित
(c) साहित्य दर्पण	— विश्वनाथ
(d) रस गंगाधर	— पंडितराज जगन्नाथ

दिसम्बर - 2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'प्रेमवाटिका' काव्यकृति है —रसखान की
- ☞ 'अनघ' नाटक लिखा है — मैथिलीशरण गुप्त ने
- ☞ 'घुमक्कड़शास्त्र' के लेखक हैं —राहुल सांकृत्यायन
- ☞ 'प्रेमसागर' के लेखक हैं —लल्लूलाल जी
- ☞ 'आत्म निरीक्षण' के लेखक हैं —सेठ गोविन्ददास
- ☞ 'पृथ्वी प्रदक्षिणा' के लेखक हैं —शिवप्रसाद गुप्त
- ☞ सुहाग के नूपुर, मानस का हंस, भूले बिसरे चित्र तथा बूंद और समुद्र में से अमृतलाल नागर का उपन्यास नहीं है —भूले बिसरे चित्र
- ☞ एक दूनी एक, मादा कैक्टस, सेतुबंध तथा कैद-ए-हयात में से सुरेन्द्र वर्मा का नाटक नहीं है —मादा कैक्टस
- ☞ सिंह सेनापति, जय यौधेय, दिवोदास तथा व्यतीत में से राहुल सांकृत्यायन का उपन्यास नहीं है —व्यतीत
- ☞ ओ, ए, क तथा त में से कंट्योष्ट्य ध्वनि का उदाहरण है —औ
- ☞ बाँगरू, बघेली, ब्रजभाषा तथा भोजपुरी में से अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित बोली है —बघेली
- ☞ "ज्ञान दूर क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सकें
यह विडंबना है जीवन की।" काव्य-पंक्तियों के रचनाकार हैं —जयशंकर प्रसाद
- ☞ पश्चिमी हिन्दी की दो बोलियों का सही युग्म है—खड़ीबोली—बुन्देली
- ☞ शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की योग्यता प्राप्त करता है, तो उसे कहा जाता है —पद
- ☞ 'भाषा काव्य संग्रह' कृति है —महेशदत्त शुक्ल की
- ☞ वल्लभाचार्य का 'वेदांत सूत्र' पर लिखा प्रसिद्ध ग्रन्थ है —अणु भाष्य
- ☞ "पानी परात को हाथ छुयौ नहीं
नैन के जल सों पग धोए।" पंक्तियाँ हैं —नरोत्तमदास की
- ☞ तुलसीदास के गुरु थे —नरहर्यानन्द (नरहरिदास)
- ☞ 'कवित रत्नाकर' कृति है —सेनापति की
- ☞ 'उत्तर कबीर' नामक कविता है —केदारनाथ सिंह की
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार जीवनीयों का सही अनुक्रम है—प्रेमचन्द घर में (1944 ई.), आवारा मसीहा (1987 ई.), वटवृक्ष की छाया में (2004 ई.), व्योमकेश दरवेश (2011 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही क्रम है —रंगभूमि (1925 ई.), निर्मला (1927 ई.), कर्मभूमि (1932 ई.), गोदान (1936 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार अमृतलाल नागर के उपन्यासों का सही क्रम है —महाकाल (1947 ई.), बूंद और समुद्र (1956 ई.), मानस का हंस (1973 ई.), खंजन नयन (1981 ई.)
- ☞ प्रकाशन के आरम्भ की दृष्टि से पत्रिकाओं का सही क्रम है —माधुरी (1921 ई.), विशाल भारत (1928 ई.), जागरण (1932 ई.), साहित्य संदेश (1937 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार महादेवी वर्मा की गद्य कृतियों का सही क्रम है —अतीत के चलचित्र (1941 ई.), शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), स्मृति की रेखाएँ (1943 ई.), पथ के साथी (1956 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के निबन्ध-संग्रहों का सही क्रम है —आत्मनेपद (1960 ई.), लिखि कागद कोरे (1972 ई.), अद्यतन (1977 ई.), कहाँ है द्वारका (1982 ई.)
- ☞ व्यंग्य रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —भित्तिचित्र (1966 ई.), जीप पर सवार इल्लियाँ (1971 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2000 ई.), जो घर फूँके (2006 ई.)
- ☞ उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है —त्यागपत्र (1937 ई.), नदी के द्वीप (1952 ई.), मेरी तेरी उसकी बात (1975 ई.), खंजन नयन (1981 ई.)
- ☞ जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही क्रम है —बिहारी, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम
- ☞ भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1946 ई.), भूले बिसरे चित्र (1959 ई.), सामर्थ्य और सीमा (1962 ई.), सीधी सच्ची बातें (1968 ई.)
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | रचनाकार | आत्मकथा |
|-------------------------------|-------------------------|
| (a) शिवपूजन सहाय | — मेरा जीवन |
| (b) सुमित्रानन्दन पन्त | — साठ वर्ष : एक रेखांकन |
| (c) हरिवंशराय बच्चन | — दश द्वार से सोपान तक |
| (d) पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' | — अपनी खबर |

सही सुमेलित हैं—

आलोचक

- (a) नन्ददुलारे वाजपेयी —
(b) लक्ष्मीकांत वर्मा —
(c) रामविलास शर्मा —
(d) विजयदेव नारायण —
साही

सही सुमेलित हैं—

संस्मरणात्मक रेखाचित्र

- (a) चेतना के बिम्ब —
(b) रेखाएँ बोल उठीं —
(c) जिन्दगी मुस्कुराई —
(d) सिंहावलोकन —

सही सुमेलित हैं—

कहानीकार

- (a) भगवतीचरण वर्मा —
(b) इलाचन्द्र जोशी —
(c) यशपाल —
(d) उपेन्द्रनाथ अशक —

सही सुमेलित हैं—

उपन्यासकार

- (a) राधाकृष्णदास —
(b) किशोरीलाल गोस्वामी —
(c) देवकीनन्दन खत्री —
(d) श्रद्धाराम फिल्लौरी —

सही सुमेलित हैं—

नाटककार

- (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र —
(b) राधाचरण गोस्वामी —
(c) प्रतापनारायण मिश्र —
(d) बालकृष्ण भट्ट —

सही सुमेलित हैं—

कृति

- (a) आत्मा की आँखें —
(b) काठ का सपना —
(c) समय और हम —
(d) मिलन यामिनी —

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य-संग्रहों को उनके प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही सुमेलित हैं—

काव्य-संग्रह

- (a) पल्लव —
(b) वीणा —

ग्रंथ

- हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी
नई कविता के प्रतिमान
निराला
जायसी

लेखक

- नगेन्द्र
देवेन्द्र सत्यार्थी
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
यशपाल

कहानी

- दो बाँके
दीवाली और होली
मक्रील
फिंजरा

उपन्यास

- निःसहाय हिन्दू
तारा
चन्द्रकान्ता
भाग्यवती

नाटक

- अंधेर नगरी
अमरसिंह राठौर
संगीत शाकुंतल
नल दमयन्ती

रचनाकार

- रामधारी सिंह दिनकर
गजानन माधव मुक्तिबोध
जैनेन्द्र कुमार
हरिवंशराय बच्चन

प्रकाशन-वर्ष

- 1926
1927

(c) गुंजन — 1932

(d) स्वर्ण किरण — 1947

सही सुमेलित हैं—

पत्रिका

- (a) आनन्द कादम्बिनी — मिर्जापुर
(b) ब्राह्मण — कानपुर
(c) हिन्दी प्रदीप — प्रयाग
(d) उचित वक्ता — कलकत्ता

सही सुमेलित हैं—

निबन्धकार

- (a) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' — कछुआ धर्म
(b) वासुदेव शरण अग्रवाल — पृथ्वीपुत्र
(c) रामवृक्ष बेनीपुरी — वन्दे वाणी विनायकौ
(d) कुबेरनाथ राय — मराल

स्थापना (A) : काव्य का उत्कर्ष केवल प्रेमभाव की कोमल व्यंजना में ही माना जा सकता है।

तर्क (R) : क्रोध जैसे उग्र एवं प्रचंड भावों के विधान के साथ-साथ करुण-भाव की अभिव्यक्ति से काव्य में पूर्ण सौन्दर्य के साक्षात्कार होते हैं।

— (A) गलत, (R) सही है

स्थापना (A) : भूमंडलीकरण ने 'जन' की पुरानी धारणा बदल कर रख दी है। उसने 'जन' को 'मास' में बदल दिया है।

तर्क (R) : क्योंकि भूमंडलीकरण के 'मास' में वहीं लोग शामिल हैं। जिनके पास क्रयशक्ति है और जो जनसंचार साधनों के उपयोग में दक्ष हैं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : शृंगार को रसराज माना जाता है। इसलिए वह सभी रसों में प्रधान है।

तर्क (R) : क्योंकि जीवन के आदि से लेकर अन्त तक उसी का प्रसार है और जीवन की सभी भावनाएँ उसी से निःसृत हैं।

— (A) गलत, (R) सही है

स्थापना (A) : भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि वह मध्यकालीन परम्पराओं का पूर्ण विरोधी है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : प्रतीक अमूर्त का मूर्तीकरण है, जिसमें अदृश्य सारतत्त्व की अभिव्यक्ति है।

तर्क (R) : क्योंकि जब किसी वस्तु का कोई एक भाग गोचर हो; और फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो, तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

दिसम्बर - 2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- कय, च्य, ट एवं औ ध्वनियों में से संयुक्त व्यंजन है— **-कय** “हम दीवानों की क्या हस्ती, हैं आज यहाँ कल वहाँ चलो” काव्य—
 डोगरी, मणिपुरी, मैथिली तथा छत्तीसगढ़ी भाषा में से संविधान की पंक्तियाँ हैं **—भगवतीचरण वर्मा की**
 अष्टम सूची में सम्मिलित नहीं किया गया **—छत्तीसगढ़ी को** काव्य—पंक्तियाँ हैं **—शमशेर बहादुर सिंह की**
 पुष्पदंत की प्रबंध की रचना है **—णयकुमार चरित की** “जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपति भेला” काव्य—पंक्तियाँ
 मुसलमान अनुयायी कबीरदास को शिष्य मानते हैं **—शेख तकी का** के रचयिता हैं **—विद्यापति**
 फोर्ट विलियम कॉलेज के शिक्षक जिसने हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकों **—रूप की आराधना का मार्ग** आलिंगन नहीं तो और क्या है? ”
 का प्रकाशन आरंभ कराया **—गिल क्राइस्ट** काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं **—रामधारी सिंह दिनकर**
 ‘संशयात्मा’ रचना है **—ज्ञानेन्द्रपति की** “लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्” कथन है—**आचार्य भरत का**
 एकांकी में अन्विति अथवा संकलनत्रय के अंतर्गत काल, स्थान के **—कार्य का** “काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः।” उक्ति है
 साथ निर्वह की गणना की जाती है **—आचार्य भामह की**
 निर्वेद, ब्रीड़ा, उन्माद तथा आहार्य में से अनुभव का एक भेद है **—आहार्य** “औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्” उक्ति है
 शब्द में जहाँ मूल अर्थ नहीं, बल्कि उसका व्यंग्यार्थ अभिप्रेत होता है **—क्षेमेन्द्र की**
 वहाँ शब्द शक्ति होती है **—व्यंजना** “कविता सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम विधान है” पाश्चात्य आलोचक
 जयशंकर प्रसाद कृत ‘उर्वशी’ रचना है **—चम्पू काव्य की** का मत है **—कॉलरिज का**
 दंडी, भामह, वामन तथा आनन्दवर्धन में से काव्यदोष की परिभाषा **—कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।” कथन है**
 सबसे पहले दी **—वामन ने** **—सुमित्रानन्दन पंत का**
 “पाय महावर दैन को नाइन बैठी आयाफिरि फिरि जानि महावरी एड़ी **—कारणमाला, माला दीपक, एकावली तथा काव्यलिंग में से शृंखलामूलक**
 मीड़ति जाया। काव्य पंक्तियों में अलंकार है **—अलंकार नहीं है** **—काव्यलिंग**
 ‘यथार्थवाद और छायावाद’ निबन्ध के रचयिता हैं—**जयशंकर प्रसाद** **—खड़ी बोली**
 ‘मिला तेज से तेज’ रचना है **—जीवनी** **—केशवदास की**
 ‘छायावाद का पतन’ पुस्तक के लेखक हैं **—देवरज** **—सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ की**
 ‘एक पत्नी के नोट्स’ रचना है **—ममता कालिया की** **—सुदर्शन**
 निर्मल वर्मा का पहला कहानी—संग्रह है **—कव्हे और कालापानी** **—जहाँ लक्ष्मी कैद है**
 रस निष्पत्ति के सन्दर्भ में ‘भुक्तिवाद’ मत है **—भट्टनायक का** **—नगेन्द्र ने**
 कायिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक में से स्वरभंग अनुभाव है **—श्लेष’ अलंकार के प्रकार हैं** **—दो**
—सात्विक **—प्रकाशन वर्ष के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है**
 जयशंकर प्रसाद के नाटक राज्यश्री, स्कन्दगुप्त, जनमेजय का नागयज्ञ **—अलका (1933 ई.), राम रहीम (1937 ई.), शेखर : एक**
 तथा विशाख में से एक पात्र ‘शर्वनाग’ है **—रकंदगुप्त का** **जीवनी (प्रथम भाग) (1941 ई.), सिंह सेनापति (1944 ई.)**
 अंधा कुआँ, चिंदियों की एक झालर, साँच कहीं तो तथा नेपथ्य राग में **—फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों का सही क्रम है**
 से स्त्री—समस्या से सम्बन्धित नहीं है **—चिंदियों की एक झालर** **—मैला आँचल (1954 ई.), परती परिकथा (1957 ई.),**
 ‘अंत हाजिर हो’ नाटक की महिला नाट्यकार हैं **—मीरा कांत** **दीर्घतपा, (1963ई.), पलटू बाबू रोड (1979 ई.)**

- जयशंकर प्रसाद की कहानियों का सही अनुक्रम है
—प्रतिध्वनि (1926 ई.), आकाशदीप (1929 ई.), आँधी (1931 ई.), इन्द्रजाल (1933 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
—इतिहास तिमिर नाशक (1823-1895 ई.), शिवशंभू के चिट्ठे (1865-1907 ई.), साहित्य देवता (1957 ई.), सीढ़ियों पर धूप में (1960 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रामविलास शर्मा की कृतियों का सही अनुक्रम है
—भारतेन्दु युग (1951 ई.), भाषा साहित्य और संस्कृति (1964 ई.), परम्परा का मूल्यांकन (1981 ई.), बड़े भाई (1986 ई.)
- भाषा—निर्माण की इकाइयों का सही अनुक्रम है
—ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य
- उच्चारण स्थान के आधार पर कंठ से लेकर मुख विवर में उच्चरित व्यंजन ध्वनियों का सही अनुक्रम है
—कंठ्य, तालव्य, वर्त्य, दंत्य, ओष्ठ्य
- प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से भीष्म साहनी के नाटकों का सही अनुक्रम है
—हानूश (1977 ई.), माधवी (1984 ई.), मुआवजे (1993 ई.), आलमगीर (1999 ई.)
- विष्णु प्रभाकर के नाटकों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है
—डॉक्टर (1961 ई.), युगे युगे क्रांति (1969 ई.), टूटते परिवेश (1974 ई.), सत्ता के आर—पार (1981 ई.)
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
—केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000 ई.), त्रिलोचन (1917-2007 ई.), धर्मवीर भारती (1926-1997 ई.), रघुवीर सहाय (1929-1990 ई.)
- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), माखनलाल चतुर्वेदी (1889-1968 ई.), बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897-1960 ई.)
- प्रकाशन वर्ष के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
—मधुशाला (1935 ई.), मधुबाला (1936 ई.), मधुकलश (1937 ई.), निशा निमंत्रण (1938 ई.)
- जन्मकाल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है
—श्रीधर पाठक (1860-1928 ई.), जगन्नाथ दास रत्नाकर (1866-1932 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1881-1962 ई.), मुकुटधर पाण्डेय (1895-1988 ई.)

- जन्मकाल के अनुसार कवियों का सही अनुक्रम है
—गुरुनानक (1469-1539 ई.), दादूदयाल (1544-1603 ई.), मलूक दास (1574-1682 ई.), सुन्दरदास (1596-1686 ई.)
- स्थापना (A) : मनोविश्लेषणवाद में सबसे अधिक महत्व व्यक्ति के मन को दिया जाता है।
तर्क (R) : क्योंकि व्यक्ति का मन सामाजिक प्रतिबंधों में कैद होकर जड़ हो जाता है।
— (A) और (R) गलत हैं
- स्थापना (A) : ईश्वर और मनुष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित करने का एक माध्यम धर्म है। धर्म साधना व्यक्तिनिष्ठ है।
तर्क (R) : क्योंकि साध्य और साधक का एकीकरण साधना के माध्यम से ही होता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : सामाजिक जीवन की स्थिति और पुष्टि के लिए करुणा का प्रसार आवश्यक है।
तर्क (R) : क्योंकि करुणा का व्यक्तिगत स्वार्थ से विरोध है। उसके लिए निजी हित छोड़ना पड़ता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : इतिहास का साहित्य कुछ बड़े-बड़े व्यक्तियों के उत्थान और पतन के लेखे-जोखे के नाम नहीं हैं।
तर्क (R) : क्योंकि इतिहासमूलक साहित्य मनुष्य के धारावाहिक जीवन के सारभूत रस का प्रवाह है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : जाति भेद और छुआ-छूत की प्रथाओं ने हमारे देश को अनेक स्तरों में बाँट रखा है।
तर्क (R) : क्योंकि लोकतंत्र के शक्ति-विकेन्द्रीकरण का सबसे सही मार्ग यही है।
— (A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : काव्य विद्या है और कला उपविद्या। इसलिए चौंसठ कलाओं की सूची में काव्य समाविष्ट नहीं है।
तर्क (R) : क्योंकि कला, कौशल और शिल्प है जबकि काव्य ज्ञान और जीवन का एक व्यापक सर्जनात्मक विधान है, जिसमें सत् और असत् का विवेक रहता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : नाटक शुद्ध साहित्य है, जिसकी आलोचना काव्यालोचन के स्थापित प्रतिमानों द्वारा की जा सकती है।

तर्क (R) : लेकिन नाटक शुद्ध साहित्य नहीं है। यह केवल नट की क्रिया है।

— (A) गलत और (R) गलत है

स्थापना (A) : साहित्य मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य की भूमि पर ले जाता है।

तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य सम्बन्धों का निर्वाह साहित्य से प्रेरित होकर केवल आत्म-संतोष के लिए करता है।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : मनुष्य की रागात्मक प्रवृत्ति उसे सामाजिक बंधनों से मुक्त होने के लिए प्रेरित करती है।

तर्क (R) : क्योंकि समाज मनुष्य की रागात्मकता को स्वीकार नहीं करता।

— (A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : साहित्य में व्यक्तिवादी चेतना समाज के बहुमुखी को अवरुद्ध करती है।

तर्क (R) : क्योंकि व्यक्तिवाद से समाज में अराजकता फैलती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

सही सुमेलित हैं—

उपन्यास

लेखक

- | | | |
|---------------------|---|--------------------------|
| (a) वामाशिक्षा | — | ईश्वरी प्रसाद-कल्याण राय |
| (b) भाग्यवती | — | श्रद्धाराम फिल्लौरी |
| (c) निरसहाय हिन्दू | — | राधाकृष्ण दास |
| (d) नूतन ब्रह्मचारी | — | बालकृष्ण भट्ट |

सही सुमेलित हैं—

पात्र

उपन्यास (प्रेमचन्द)

- | | | |
|-----------------|---|---------|
| (a) अमृतराय | — | प्रेमा |
| (b) कृष्णचन्द्र | — | सेवासदन |
| (c) जानसेवक | — | रंगभूमि |
| (d) उदयभानु | — | निर्मला |

सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ (आई.ए.रिचर्ड्स)

प्रथम संस्करण वर्ष

- | | | |
|------------------------------------------|---|----------|
| (a) दि प्रिंसिपल्स ऑफ लिटररी क्रिटिसिज्म | — | सन् 1924 |
| (b) दि फिलॉसफी ऑफ रेटॉरिक | — | सन् 1936 |
| (c) साईंस एंड पोइट्री | — | सन् 1926 |
| (d) प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म | — | सन् 1929 |

सही सुमेलित हैं—

आचार्य

सम्प्रदाय

- | | | |
|-----------------|---|--------|
| (a) भरत | — | रस |
| (b) दण्डी | — | अलंकार |
| (c) वामन | — | रीति |
| (d) आनन्द वर्धन | — | ध्वनि |

सही सुमेलित हैं—

निबन्धकार

निबन्ध

- | | | |
|-------------------------------------|---|------------------|
| (a) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' | — | माटी हो गयी सोना |
| (b) रामधारी सिंह 'दिनकर' | — | रेती के फूल |
| (c) सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन | — | आलबाल |
| (d) हजारीप्रसाद द्विवेदी | — | आलोक पर्व |

सही सुमेलित हैं—

संस्मरण आत्मक कृति

लेखक

- | | | |
|-----------------------|---|-------------------|
| (a) आछे दिन पाछे गए | — | काशीनाथ सिंह |
| (b) नंगातलाई का गाँव | — | विश्वनाथ त्रिपाठी |
| (c) आँगन के वंदनवार | — | विवेकी राय |
| (d) वे देवता नहीं हैं | — | राजेन्द्र यादव |

सही सुमेलित हैं—

लेखक

यात्रावृत्तांत

- | | | |
|-----------------------|---|----------------------|
| (a) राहुल सांकृत्यायन | — | मेरी तिब्बत यात्रा |
| (b) रामकृष्ण बेनीपुरी | — | पैरों में पंख बाँधकर |
| (c) मोहन राकेश | — | आखिरी चट्टान |
| (d) निर्मल वर्मा | — | चीड़ों पर चाँदनी |

सही सुमेलित हैं—

कहानी

लेखक

- | | | |
|------------------------|---|---------------------|
| (a) ग्यारह वर्ष का समय | — | रामचन्द्र शुक्ल |
| (b) गुलबहार | — | किशोरी लाल गोस्वामी |
| (c) एक टोकरी भर मिट्टी | — | माधव राव सप्रे |
| (d) प्लेग की चुड़ैल | — | भगवान दास |

सही सुमेलित हैं—

काव्य संग्रह

कवि

- | | | |
|--------------------------|---|------------------------|
| (a) आत्महत्या के विरुद्ध | — | रघुवीर सहाय |
| (b) हाशिये का गवाह | — | कुँवर नारायण |
| (c) चाँद का मुँह टेढ़ा | — | गजानन माधव 'मुक्तिबोध' |
| (d) स्वप्न भंग | — | प्रभाकर माचवे |

जून - 2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ महाराष्ट्री, शौरसेनी, अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंश में से अवधी का विकास हुआ है —अर्धमागधी से
- ☞ डोगरी, मैथिली, ब्रज तथा असमिया में से संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है —ब्रज को
- ☞ विकास की दृष्टि से प्राकृत की पूर्वकालीन अवस्था का नाम है—पालि
- ☞ सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, सुख सागर तथा लाल चन्द्रिका में से लल्लूलाल की रचना नहीं है —सुख सागर
- ☞ सुनीता, मुक्ति पथ, सुखदा तथा तेरी मेरी उसकी बात में से इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास है —मुक्ति पथ
- ☞ जैनेन्द्र, चतुरसेन शास्त्री, इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय में से मनो-विश्लेषणवादी कथाकार नहीं हैं —चतुरसेन शास्त्री
- ☞ गोरक्ष विजय, कालिका मंगल, सरस्वती मंगल तथा विद्यासुन्दर में से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाटक है —विद्यासुन्दर
- ☞ भूमिजा, कामायनी, नीरजा तथा यशोधरा में से रामकथा पर आधारित काव्य है —भूमिजा
- ☞ धनुंजय, भट्टनायक, भरतमुनि तथा भानुदत्त में से नाटक को पंचम वेद कहा —भरतमुनि
- ☞ सज्जन, राज्यश्री, कामना तथा विशाख में से जयशंकर प्रसाद का सर्वप्रथम नाटक है —सज्जन (नाट्य कला की दृष्टि से अपरिपक्व रचना है)
- ☞ गोकुलनाथ की रचना है —चौरासी वैष्णवन की वार्ता
- ☞ 'काव्यालंकार' रचना है —भामह की
- ☞ 'आगम—वेअ—पुराणेहि, पाणिअ माण वहन्ति' पंक्ति है —कण्ठपा की
- ☞ खड भाषा पुराण च /कुरानं कथितं मया। —भाषा के सम्बन्ध में यह पंक्ति है —चन्दबरदाई की
- ☞ प्रेमचन्द के 'सेवासदन' उपन्यास का उर्दू शीर्षक है—बाजार ए हुस्न
- ☞ नाक, भौंह, पेट, दाँत, मूँछ आदि विषयों के निबन्धकार हैं —प्रतापनारायण मिश्र
- ☞ शब्दों की पद—रचना पर आधारित भाषाओं के वर्गीकरण को कहा जाता है —आकृतिमूलक वर्गीकरण
- ☞ 'दूसरा दरवाजा' रचना है —नाटक विधा की
- ☞ आत्मकथा है —मेरे सात जनम
- ☞ 'रस गंगाधर' में पंडितराज जगन्नाथ ने प्रशंसा की है —शाहजहाँ की
- ☞ रचनाकाल के अनुसार भारतेन्दु के नाटकों का सही क्रम है —भारत दुर्दशा (1880 ई.), नीलदेवी (1881 ई.), अंधेर नगरी (1881 ई.), सती प्रताप (1883 ई.)
- ☞ पंत की काव्य—रचनाओं का सही क्रम है—पल्लव (1928 ई.), गुंजन (1932 ई.), युगांत (1936 ई.), ग्राम्या (1940 ई.)
- ☞ उपन्यासों का प्रकाशन काल के अनुसार सही क्रम है —मैला आँचल (1954 ई.), बूँद और समुद्र (1956 ई.), अमृत और विष (1966 ई.), कठगुलाब (1996 ई.)
- ☞ पत्रिकाओं का प्रकाशन काल के अनुसार सही क्रम है —ब्राह्मण (1883 ई.), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896 ई.), सरस्वती (1900 ई.), हंस (1930 ई.)
- ☞ रचनाकाल के अनुसार काव्यों का सही क्रम है —गगन कुसुम (1913 ई.), आँसू (1925 ई.), लहर (1933 ई.), कामायनी (1935 ई.)
- ☞ जीवनकाल के आधार पर कवियों का सही क्रम है —अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), विद्यापति (1380-1460 ई.), रैदास (1398-1488 ई.), नानक (1469-1539 ई.)
- ☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है —सेवासदन (1918 ई.), वरदान (1921 ई.), रंगभूमि (1925 ई.), प्रतिज्ञा (1929 ई.)
- ☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से भीष्म साहनी के उपन्यासों का सही क्रम है —कड़िया (1970 ई.), तमस (1973 ई.), मय्यादास की माड़ी (1988 ई.), नीलू नीलिमा नीलोफर (2000)
- ☞ प्रकाशन काल की दृष्टि से विष्णु प्रभाकर की रचनाओं का सही क्रम है —यादों की तीर्थयात्रा (1981 ई.), सृजन के सेतु (1990 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1992 ई.), हमसफर मिलते रहे (1996 ई.)
- नोट—यूजीसी ने इस प्रश्न का उत्तर का क्रम इस प्रकार दिया है—यादों की तीर्थयात्रा, सृजन के सेतु, हमसफर मिलते रहे, अर्द्धनारीश्वर, किन्तु उपर्युक्त क्रम सही हैं। अर्द्धनारीश्वर, विष्णु प्रभाकर का उपन्यास है, जबकि शेष संस्मरण हैं।
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | रचना | रचनाकार |
|----------------------------|-------------------|
| (a) यारों के यार तीन पहाड़ | — कृष्णा सोबती |
| (b) बिना दीवारों का घर | — मन्नू भण्डारी |
| (c) अकेला पलाश | — मेहरुनिसा परवेज |
| (d) शेष यात्रा | — उषा प्रियंवदा |

सही सुमेलित हैं—

कहानीकार

- | | | |
|--------------------|---|--------------------|
| (a) शिवप्रसाद सिंह | — | दादी माँ |
| (b) यशपाल | — | पुतिस की सीटी |
| (c) जैनेन्द्र | — | पाजेब |
| (d) माधवराव सप्रे | — | एक टोकरी भर मिट्टी |

सही सुमेलित हैं—

कृति (काव्यशास्त्रीय)

- | | | |
|-------------------------------------|---|-----------------------|
| (a) भारतीय साहित्य शास्त्र | — | आचार्य बलदेव उपाध्याय |
| (b) भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका— | — | नगेन्द्र |
| (c) रस मीमांसा | — | रामचन्द्र शुक्ल |
| (d) काव्यानुशासन | — | हेमचन्द्र |

सही सुमेलित हैं—

पत्रिका

- | | |
|------------------------------|------------|
| (a) नागरी प्रचारिणी पत्रिका— | काशी |
| (b) सम्मेलन पत्रिका | — इलाहाबाद |
| (c) पहल पत्रिका | — जबतपुर |
| (d) नया प्रतीक | — दिल्ली |

सही सुमेलित हैं—

पात्र

- | | | |
|------------|---|-------------------|
| (a) रेखा | — | रचना नदी के द्वीप |
| (b) नीलिमा | — | अंधेरे बन्द कमरे |
| (c) कमला | — | मैला आँचल |
| (d) रायना | — | वे दिन |

सही सुमेलित हैं—

नाटक

- | | | |
|---------------------|---|---------------------|
| (a) हानूश | — | रचनाकार भीष्म साहनी |
| (b) दशरथ नन्दन | — | जगदीशचन्द्र माथुर |
| (c) पैर तले की जमीन | — | मोहन राकेश |
| (d) तिलचट्टा | — | मुद्राराक्षस |

सही सुमेलित हैं—

सम्प्रदाय

- | | | |
|-------------------------|---|------------------------|
| (a) वल्लभ सम्प्रदाय | — | अनुयायी गोविन्द स्वामी |
| (b) निम्बार्क सम्प्रदाय | — | हरिव्यास देव |
| (c) राधावल्लभ सम्प्रदाय | — | दामोदर दास |
| (d) चैतन्य सम्प्रदाय | — | गदाधर भट्ट |

सही सुमेलित हैं—

रचना

- | | | |
|-------------------|---|-------------------|
| (a) प्रेत की छाया | — | विधा कहानी संग्रह |
| (b) कर्बला | — | नाटक |

(c) छितवन की छाँह — निबन्ध

(d) अन्या से अनन्या — आत्मकथा

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में प्रेत की छाया को उपन्यास माना गया है, जबकि यह कहानी संग्रह है। 'प्रेत और छाया' इलाचन्द्र जोशी का उपन्यास है तथा 'प्रेत की छाया' ज्योतिन्द्रनाथ की कहानी है।

सही सुमेलित हैं—

संस्था

- | | | |
|--------------------|---|---------------------------|
| (a) ब्रह्म समाज | — | संस्थापक राजा राममोहन राय |
| (b) प्रार्थना समाज | — | केशवचन्द्र सेन |
| (c) आर्य समाज | — | दयानंद सरस्वती |
| (d) रामकृष्ण मिशन | — | विवेकानन्द |

सही सुमेलित हैं—

पंक्तियाँ

- | | | |
|---------------------------------------|---|-----------|
| (a) जो बीत गयी सो बात गयी | — | कवि बच्चन |
| (b) मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में | — | अज्ञेय |
| (c) दो पाटों के बीच पिस गया | — | मुक्तिबोध |
| (d) रूप की आराधना का मार्ग | — | दिनकर |

अलिंगन नहीं तो और क्या है?

स्थापना (A) : मनुष्य की श्रेष्ठ साधना ही संस्कृति है।

तर्क (R) : क्योंकि साधनाओं के माध्यम से मनुष्य अविरোধी-सत्य तक पहुँच सका है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : रस का निर्णायक सहृदय है।

तर्क (R) : क्योंकि सहृदय रस का समीक्षक होता है।

— (A) सही (R) गलत है

स्थापना (A) : अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के व्यक्ति की मानसिक उलझनों की सफल अभिव्यक्ति 'एकालाप' के रूप में होती है।

तर्क (R) : क्योंकि 'एकालाप' साहित्यकार की मनोरुग्णता का द्योतक है।

— (A) सही (R) गलत है

स्थापना (A) : युग जीवन के परिवेश में साहित्य की विकास परम्परा का निरूपण करना ही साहित्य के इतिहासकार का कर्तव्य-कर्म है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य का इतिहासकार युग जीवन के परिवेश से इतर होता है।

— (A) सही (R) गलत है

स्थापना (A) : साहित्य में वस्तु और रूप एक-दूसरे से अभिन्न और परस्पर अनुस्यूत होते हैं।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य में वस्तु और रूप की सत्ता एक-दूसरे पर निर्भर है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'कुवलयमाला कथा' के रचनाकार हैं — उद्यतन सूरि
- ☞ 'लालचन्द्रिका' के रचनाकार हैं — लल्लूलाल जी
- ☞ 'साखी सबदी दोहरा कहि कहनी उपखाना भगति निसृपहिं अधम कवि निंदहिं वेद पुराना। पंक्तियाँ हैं — तुलसीदास की
- ☞ 'बीसलदेव रासो' के रचनाकार हैं — नरपति नाल्ह
- ☞ अहमाण की रचना है — संदेश रासक
- ☞ 'काव्यालंकार संग्रह' के रचनाकार हैं — उद्भट
- ☞ 'एवं क्रमहेतुमभिधाय रसविषयं लक्षणसूत्रमाह' रस सम्बन्धी सूत्र है — भरतमुनि का
- ☞ 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' ग्रन्थ का विषय है — व्याकरण
- ☞ 'मस्तीन सुखा डाहिबी। आसीम औरम थाहिबी।। धी धी धुना नुप जाहिबी। फीफी फिना सत साहिबी।। पंक्तियाँ भाषा का नमूना हैं — पैशाची
- ☞ रैदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, नन्ददास में से 'अष्टछाप' के कवि नहीं हैं — रैदास
- ☞ राधावल्लभी सम्प्रदाय के आचार्य हैं — गोस्वामी हितहरिवंश
- ☞ मधुमालती, अखरावट, आखिरी कलाम एवं पद्मावत में से मलिक मुहम्मद जायसी की रचना नहीं है — मधुमालती
- ☞ नायिका-भेद पर आधारित ग्रन्थ 'रसमंजरी' के रचनाकार हैं — नन्ददास
- ☞ कृपाराम द्वारा रचित नायिका-भेद की सबसे पुरानी पुस्तक है — हित-तरंगिणी
- ☞ 'कविकुल कल्पतरु' के रचनाकार हैं — चिन्तामणि
- ☞ सेनापति, द्विजदेव, आलम तथा ठाकुर में से रीति मुक्त शृंगारी कवि नहीं हैं — सेनापति
- ☞ अनुरागबाग, वैराग्य दिनेश, विश्वनाथ नवरत्न एवं छत्र प्रकाश में से नीति कवि 'दीनदयाल गिरि' की रचना नहीं है — छत्र प्रकाश
- ☞ सरहपा, हेमचन्द्र, शबरपा एवं स्वयंभू में से आठवीं शताब्दी के कवि नहीं हैं — हेमचन्द्र (12वीं सदी)
- ☞ सखी सम्प्रदाय को कहा जाता है — हरिदास सम्प्रदाय
- ☞ 'प्रयोगवाद' शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया है — नन्ददुलारे वाजपेयी ने
- ☞ 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की स्थापना हुई — 1800 ई. में
- ☞ 'देहरि भई विदेस' किस विधा की रचना है — आत्मकथा (राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित)
- ☞ केटिक, इतालिक, जर्मनिक तथा सियोयन में से 'भारोपीय परिवार' की भाषा नहीं है — सियोयन
- ☞ मैथिली का प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है — वर्णरत्नाकर (ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचित)
- ☞ 'उत्तरायण' महाकाव्य के रचनाकार हैं — रामकुमार वर्मा
- ☞ उड़िया, मराठी, बिहारी तथा बंगला में से आधुनिक आर्य भाषाओं के वर्गीकरण के अनुसार पूर्वी समुदाय की भाषा नहीं है — मराठी
- ☞ 'हिन्दुस्तानी' शब्द यूरोप के लोगों की देन है। कथन है — ग्रियर्सन का
- ☞ बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली तथा बघेली में से पश्चिमी हिन्दी के अन्तर्गत नहीं आती है — बघेली (पूर्वी हिन्दी)
- ☞ रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, शिवदानसिंह चौहान तथा विजयदेव नारायण साही में से मार्क्सवादी आलोचक नहीं हैं — विजयदेव नारायण साही
- ☞ 'काव्यादर्श' ग्रन्थ के रचनाकार हैं — दण्डी
- ☞ आचार्य कुन्तक काव्य-शास्त्र में प्रवर्तक माने जाते हैं? — वाक्रोक्ति सम्प्रदाय के
- ☞ हिन्दी में 'लोकजागरण' की अवधारणा है — रामविलास शर्मा की
- ☞ "भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की सुधि ब्रज-गांविनि मैं पावन जबै लगी।" पंक्तियाँ हैं — उद्भवशतक की (जगन्नाथ दास रत्नाकर)
- ☞ जादुई यथार्थवाद (मैजिक रियलिज्म) शब्द का सबसे पहले प्रयोग किया — फ्रेन्ज रोह ने
- ☞ 'बौद्धगान ओ दोहा' का सम्पादन किया — हरप्रसाद शास्त्री ने
- ☞ 'दोहा' या 'दूहा' लोकप्रिय छन्द रहा है — अपभ्रंश भाषा का
- ☞ 'शंकर शेष' द्वारा रचित नाटक नहीं है — कोर्ट मार्शल
- ☞ राजेन्द्र यादव, गंगा प्रसाद विमल, कमलेश्वर तथा मोहन राकेश में से 'नई कहानी' आन्दोलन चलाने वाले लेखक नहीं हैं — गंगा प्रसाद विमल
- ☞ 'प्रभा खेतान' की आत्मकथा है — अन्या से अनन्या
- ☞ 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लेखक हैं — गिरिराज किशोर
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है — इतिहास तिमिर नाशक (1823-1896 ई.), सच्ची समालोचना (1886 ई.), साकेत : एक अध्ययन (1960 ई.), सीढ़ियों पर धूप (1960 ई.)

- भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है— चित्रलेखा (1934 ई.), टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1948 ई.), भूले बिसरे चित्र (1959 ई.), सामर्थ्य और सीमा (1962 ई.)
- रघुवीर सहाय की कृतियों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — आत्महत्या के विरुद्ध (1967 ई.), हँसो-हँसो जल्दी हँसो (1975 ई.), लोभ भूत गए हैं (1982 ई.), कुछ पते कुछ छिट्टियाँ (1989 ई.)
- अज्ञेय के कहानी संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — विपथगा (1937 ई.), परम्परा (1940 ई.), शरणार्थी (1948 ई.), अमरवल्लरी (1955 ई.)
- रामविलास शर्मा की कृतियों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — प्रगति और परम्परा (1948 ई.), भाषा, साहित्य और संस्कृति (1949 ई.), भाषा, युगबोध और कविता (1981 ई.), विराम चिह्न (1985 ई.)
- विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है — कदम की फूली डाल (1956 ई.), तुम चंदन हम पानी (1957 ई.), तमाल के झरोखे से (1981 ई.), शेफाली झर रही है (1987 ई.)
- नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में विद्यानिवास मिश्र का निबन्ध संग्रह 'रोफाली झर रही है' दिया गया है, जबकि वास्तविक रचना 'शेफाली झर रही है' है।
- शरद जोशी के व्यंग्य निबन्धों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे (1971 ई.), रहा किनारे बैठ (1972 ई.), तिलस्म (1973 ई.), यत्र-तत्र सर्वत्र (2000 ई.)
- नेमिचन्द्र जैन की रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है — अधूरे साक्षात्कार (1966 ई.), रंगदर्शन (1966 ई.), जनंतिक (1981 ई.), तीसरा पाठ (1998 ई.)
- राही मासूम रजा के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही क्रम है — आधा गँव (1966 ई.), टोपी शुक्ला (1969 ई.), दिल एक सादा कागज (1973 ई.), असंतोष के दिन (1985 ई.)
- ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — गढ़ कुंढार (1924 ई.) मधुर खज्ज (1950 ई.), वयं रक्षामः (1955 ई.), कुणाल की आँखें (1967 ई.)
- महिला कथाकारों के उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है— पचपन खम्भे लाल दीवारें (1961 ई.), तत्सम (1983 ई.), दिलो दानिश (1993 ई.), आवाँ (1999 ई.)।
- गीतिनाट्यों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — मत्स्य गंधा (1937 ई.), अंधायुग (1955 ई.), एक कंठ विषपायी (1963 ई.), अग्निलीक (1976 ई.)
- दलित लेखकों की आत्मकथाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है — जूठन (1997 ई.), तिरस्कृत (2002 ई.), हादसे (2005 ई.), मुर्दहिया (2010 ई.)

- ज्ञानपीठ पाने वाले साहित्यकारों का वर्षों के अनुसार सही अनुक्रम है — सुमित्रानन्दन पन्त (1968 ई.), रामधारी सिंह 'दिनकर' (1972 ई.), महादेवी वर्मा (1982 ई.), श्री नरेश मेहता (1992 ई.)
- नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है। यही कारण है कि यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।
- महिला रचनाकारों के कहानी संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है—यही सच है (1966 ई.), जोड़ बाकी (1981 ई.), एक स्त्री का विदागीत (1983 ई.), बोलने वाली औरत (2000 ई.)
- स्थापना (A) : जैसे विश्व में विश्वात्मा की अभिव्यक्ति होती है, वैसे ही नाटक में रस की।
- तर्क (R) : क्योंकि नाटक में रस की स्थिति आद्यन्त होती है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : छायावाद के सम्बन्ध में मान्यता है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े, तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।
- तर्क (R) : क्योंकि छायावादी कविता अन्योक्ति से अधिक नहीं है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।
- तर्क (R) : क्योंकि कविता मनुष्य की चेतना को अनासक्त बनाती है।
- (A) सही (R) गलत है
- स्थापना (A) : शास्त्रीय सिद्धान्त परिवर्तनशील हैं, उनका युगानुकूल पुनराख्यान होना चाहिए।
- तर्क (R) : क्योंकि शास्त्रीय सिद्धान्तों का युगानुकूल पुनराख्यान न होने से उनका महत्व बना रहता है।
- (A) सही (R) गलत है
- स्थापना (A) : सर्वभूत को आत्मभूत करके अनुभव करना ही काव्य का चरम लक्ष्य है।
- तर्क (R) : क्योंकि साहित्यकार लोकसत्ता को न स्वीकार करके सिर्फ व्यक्ति सत्ता को स्वीकार करता है।
- (A) सही (R) गलत है
- अभिकथन (A) : भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं होता।
- तर्क (R) : क्योंकि लेन-देन का भाव स्वार्थ की जमीन पर प्रतिष्ठित होता है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।
- तर्क (R) : क्योंकि सुरुचि सम्पन्नता मात्र साहित्य तक ही सीमित है।
- (A) सही (R) गलत है

स्थापना (A) : रचना जीवन का अर्थ विस्तार करती है, तो भावक तथा आलोचक रचना का अर्थ विस्तार करता है।

तर्क (R) : क्योंकि रचना में जीवन का संचित अनुभव निहित होता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : विखण्डनवाद मार्क्सवाद का विस्थापन नहीं है, अपितु उसकी जड़ों तक पहुँचना है।

तर्क (R) : क्योंकि मार्क्सवाद से विखण्डनवाद का जन्म हुआ है।
— (A) सही (R) गलत है

स्थापना (A) : मिथक मनुष्य जाति के सांस्कृतिक इतिहास का आख्यान है।

तर्क (R) : क्योंकि मिथक के बिना इतिहास का लेखन असम्भव है।
— (A) सही (R) गलत है

सही सुमेलित हैं—

कवि	काव्य संग्रह
(a) नरेन्द्र वर्मा	— प्रवासी के गीत
(b) नागार्जुन	— युगधारा
(c) केदारनाथ अग्रवाल	— फूल नहीं रंग बोलते हैं
(d) भवानी प्रसाद मिश्र	— बुनी हुई रस्सी

सही सुमेलित हैं—

सम्पादक	पत्रिका
(a) गणेश शंकर विद्यार्थी	— प्रताप
(b) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	— समालोचक
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	— कविवचनसुधा
(d) महादेवी वर्मा	— चौद

सही सुमेलित हैं—

उपन्यासकार	उपन्यास
(a) संजीव	— सूत्रधार
(b) बदीउज्जमां	— एक चूहे की मौत
(c) राही मासूम रजा	— दिल एक सादा कागज
(d) अमृतराय	— नागफनी का देश

सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रन्थ	आलोचक
(a) तुलसीदास	— माताप्रसाद गुप्त
(b) महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण	— रामविलास शर्मा
(c) हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष	— शिवदान सिंह चौहान
(d) भाषा और संवेदना	— रामस्वरूप चतुर्वेदी

सही सुमेलित हैं—

पात्र	उपन्यास
(a) बावनदास	— मैला आँचल
(b) रंगनाथ	— रागदरबारी

(c) मंदा — इदन्मम्

(d) नमिता पाण्डे — आवाँ

सही सुमेलित हैं—

पात्र	काव्य
(a) यशोदा	— प्रिय प्रवास
(b) शची	— विष्णुप्रिया
(c) अश्वत्थामा	— अन्धायुग
(d) केशकम्बली	— असाध्य वीणा

सही सुमेलित हैं—

सिद्धान्त	विचारक
(a) मनोविश्लेषणवाद	— युंग
(b) अस्तित्ववाद	— ज्यॉ पाल सार्त्र
(c) उत्पत्तिवाद	— भट्टलोल्लट
(d) अभिव्यक्तिवाद	— अभिनव गुप्त

सही सुमेलित हैं—

कहानी	कहानीकार
(a) मवाली	— मोहन राकेश
(b) पॉल गोमरा का स्कूटर	— उदय प्रकाश
(c) गुल की बन्नो	— धर्मवीर भारती
(d) राजा निरबंसिया	— कमलेश्वर

सही सुमेलित हैं—

निबन्ध	निबन्धकार
(a) ठिटुरता हुआ गणतंत्र	— हरिशंकर परसाई
(b) बसंत आ गया है	— हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) प्रिया नीलकंठी	— कुबेरनाथ राय
(d) काव्य में रहस्यवाद	— रामचन्द्र शुक्ल

सही सुमेलित हैं—

पंक्ति	कवि
(a) विषम शिला संकुला पर्वतोभूता गंगा शशितारकहारा अभिद्रुता अतिशय पूता	— त्रिलोचन
(b) अर्ध विवृत जघनों पर तरुण सत्य के सिर धर लेटी थी वह दामिनी-सी रुचि गौर कलेवर	— सुमित्रानन्दन पन्त
(c) तुम मुझे प्रेम करो, जैसे मछलियाँ लहरों से करती हैं	— शमशेर बहादुर सिंह
(d) अनंत विस्तार का अटूट मौन मुझे भयभीत करता है	— कुँवर नारायण

दिसम्बर - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'कॉमरेड का कोट' रचना है —सुंजय की
- ☞ 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' के लेखक हैं —दामोदर शर्मा
- ☞ 'श्यामा स्वप्न' के लेखक हैं —ठाकुर जगन्मोहन सिंह
- ☞ 'मेरी तेरी उसकी बात' के लेखक हैं —यशपाल
- ☞ अवधी, ब्रज, बुन्देली तथा कन्नौजी में से पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है —अवधी
- ☞ मूर्धन्य, तालव्य, दन्त्य तथा ओष्ठ्य में से 'श' ध्वनि का उच्चारण स्थान है —तालव्य
- ☞ 'भाषा और समाज' के लेखक हैं —रामविलास शर्मा
- ☞ 'अनुमितिवाद' की अवधारणा है —शंकुक की
- ☞ उत्तर संरचनावाद के मुख्य विचारक हैं —सारयूर
- ☞ 'अर्धकथानक' रचना है ब्रज भाषा की
- ☞ नागफनी, जूठन, अपनी खबर तथा मुर्दहिया में से दलित आत्मकथा नहीं है —अपनी खबर
- ☞ "उज्ज्वल वरदान चेतना का, सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं।" यह पंक्ति है —कामायनी के लज्जा सर्ग से
- ☞ "सुनिहै कथा कौन निर्गुन की, रचि पचि बात बनावत
सगुन सुमेरु प्रगट देखियत, तुम तून की ओट दुरावत।"
ये पंक्तियाँ हैं —सूरदास की
- ☞ "कितना अनुभूतिपूर्ण था वह एक क्षण का आलिंगन?" कथन है —ध्रुवस्वामिनी से
- ☞ 'आखिरी कलाम' काव्य का प्रतिपाद्य विषय है —इस्लाम दर्शन
- ☞ 'तद्भव' पत्रिका का प्रकाशन स्थल है —लखनऊ
- ☞ 'व्योमकेश दरवेश' के लेखक हैं —विश्वनाथ त्रिपाठी
- ☞ जगदीश गुप्त, सुमन राजे, नागार्जुन तथा शम्भुनाथ सिंह में से अज्ञेय सम्पादित "चौथा सप्तक" में समावेश किया गया है —सुमन राजे का
- ☞ 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' है —यात्रा वृत्तांत
- ☞ लेखकों का जन्म के अनुसार सही अनुक्रम है —राजा लक्ष्मण सिंह (1826-1896 ई.), बालकृष्ण भट्ट (1844-1914 ई.), प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894 ई.), बालमुकुन्द गुप्त (1932-1967 ई.)
- ☞ कृतियों का काल के आधार पर सही अनुक्रम है —रसिकप्रिया (1591 ई.), शृंगार मंजरी (1630 ई.), षड्भक्तु वर्णन (1650 ई.), रस रहस्य (1671 ई.)
- ☞ मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है —कल्याणी (1939 ई.), संन्यासी (1940 ई.), अजय की डायरी (1960 ई.), अपने अपने अजनबी (1961 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है —द्रौपदी (1972 ई.), कथा एक कंस की (1976 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार इन पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है —हिन्दी प्रदीप (1877 ई.), ब्राह्मण (1883 ई.), चाँद (1922 ई.), हंस (1930 ई.)
- ☞ काल के अनुसार कृतियों का सही अनुक्रम है—
—पउमचरित (8वीं शती), खुमाण रासो (9वीं शती), बीसलदेव रासो (12वीं शती), चन्दनबाला रास (13वीं शती)
- ☞ काल के अनुसार आचार्यों का सही अनुक्रम है वामन (8वीं शती), भोजराज (11वीं शती), रूय्यक (12वीं शती), विश्वनाथ (14वीं शती)
- ☞ ग्रंथों का काल के आधार पर सही अनुक्रम है —काव्यादर्श (6वीं शती), ध्वन्यालोक (9वीं शती), काव्यप्रकाश (11वीं शती), साहित्य दर्पण (14वीं शती)
- ☞ चरण में मात्राओं की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर मात्रिक छंदों का सही अनुक्रम है —चौपाई (16), पीयूषवर्ष (19), रोला (24), गीतिका (26)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार उपन्यासों का सही अनुक्रम है —भाग्यवती (1877 ई.), नदी के द्वीप (1952 ई.), अँधेरे बंद कमरे (1961 ई.), वे दिन (1964 ई.)
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | पत्रिका | सम्पादक |
|-------------------|------------------------|
| (a) कविवचनसुधा | — बाबू हरिश्चन्द्र |
| (b) ब्राह्मण | — प्रतापनारायण मिश्र |
| (c) हिन्दी प्रदीप | — बालकृष्ण भट्ट |
| (d) विश्वभारती | — हजारीप्रसाद द्विवेदी |
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | कृति | रचनाकार |
|------------------------------|-------------------|
| (a) मैंने स्मृति के दीप जलाए | — रामनाथ सुमन |
| (b) यादों की तीर्थयात्रा | — विष्णु प्रभाकर |
| (c) वे दिन वे लोग | — शिवपूजन सहाय |
| (d) वन तुलसी की गंध | — फणीश्वरनाथ रेणु |
- नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'भावों की तीर्थयात्रा' दिया गया है, जबकि वास्तव में 'यादों की तीर्थयात्रा' है।

सही सुमेलित हैं—

कृति	विधा
(a) एक कंठ विषपायी	— गीति नाट्य
(b) अन्या से अनन्या	— आत्मकथा
(c) एक बूँद सहसा उछली	— यात्रा-वृत्तांत
(d) उत्तरयोगी : श्री अरविंद	— जीवनी

सही सुमेलित हैं—

कविता	कवि
(a) हरिजन गाथा	— नागार्जुन
(a) बाघ	— केदारनाथ सिंह
(a) शिवाजी का पत्र	— निराला
(a) प्रमथ्यु गाथा	— धर्मवीर भारती

सही सुमेलित हैं—

पंक्ति	लेखक
(a) मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।	— हजारीप्रसाद द्विवेदी
(b) नाद सौंदर्य से कविता की आयु बढ़ती है।	— रामचन्द्र शुक्ल
(c) साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।	— बालकृष्ण भट्ट
(d) आचरण की सभ्यता का यह देश ही निराला है।	— सरदार पूर्णसिंह

सही सुमेलित हैं—

निबंध संग्रह	निबंधकार
(a) मेरे राम का मुकुट भोग रहा है	— विद्यानिवास मिश्र
(b) प्रिया नीलकंठी	— कुबेरनाथ राय
(c) ठेले पर हिमालय	— धर्मवीर भारती
(d) आलोक पर्व	— हजारीप्रसाद द्विवेदी

कवि	पंक्ति
(a) अज्ञेय	— रूपों में एक अरूप सदा खिलता है
(b) निराला	— बाँधों न नाव इस ठाँव बंधु
(c) पंत	— मुक्त करो नारी को मानव
(d) शमशेर बहादुर सिंह	— बात बोलगी हम नहीं, भेद खोलेगी बात ही

सही सुमेलित हैं—

पंक्ति	कवि
(a) केशव कहि न जाइ का कहिए।	— तुलसी
(b) अविगत गति कछु कहत न आवै।	— सूर
(c) राम भगति अनियारे तीर।	— कबीर
(d) जोरी लाइ रक्त कै लेई।	— जायसी

सही सुमेलित हैं—

कवि	कृति
(a) रस रहस्य	— कुलपति मिश्र
(b) रससारांश	— भिखारीदास
(c) कवि कुलकल्पतरु	— चिंतामणि
(d) ललित ललाम	— मतिराम

सही सुमेलित हैं—

रचना	भाषा
(a) कवितावली	— ब्रज
(b) पृथ्वीराज रासो	— पिंगल
(c) बरवैनयिका भेद	— अवधी
(d) अमीर खुसरो की मुकरिया	— खड़ी बोली

स्थापना (A) : उत्तर आधुनिकता वृद्धि पूँजीवाद है।

तर्क (R) : इसमें विश्व बाजार से प्रभावित तीसरी दुनिया का उपभोक्तावादी चिन्तन ज्यादा मुखर हुआ है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : अधिकतर मनोवेत्ताओं के मतानुसार, बुद्धिवादी पाठक का रचना के साथ पूर्ण तादात्म्य अथवा साधारणीकरण सहज सम्भव नहीं है। तर्क (R) : आस्वादन के समय पाठक “वेदान्तर शून्य” हो जाता है, अतः मानसिक अन्तराल, के कारण उसका साधारणीकरण हो सकता है।

—(A) गलत (R) सही है

स्थापना (A) : वक्रोक्ति स्वतंत्र सम्प्रदाय न होकर आचार्य कुन्तक का एकल मतवाद है।

तर्क (R) : सम्प्रदाय में एकाधिक विचारकों की सहभागिता अनिवार्य होती है। इसे अधिकतर आचार्यों ने अलंकार माना है, सम्प्रदाय नहीं।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : ‘रमणीयार्थ प्रतिपादक’ प्रत्येक “शब्द” काव्य नहीं होता। तर्क (R) : जब सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में किसी वाक्य में सुगठित हो जाता है, तब वह काव्य का स्तर प्राप्त करता है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : प्रतीकवाद एक प्रकार का काव्यात्मक रहस्यवाद है। तर्क (R) : इसमें केवल रहस्यपूर्ण और वक्रतापूर्ण सृजन किया जाता है।

—(A) सही (R) गलत है

दिसम्बर - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'कुवलयमाला कथा' के रचनाकार हैं — उद्योतन सूरि
- ☞ खुसरो की रचना 'खालिक बारी' वस्तुतः है — फारसी-हिन्दी शब्दकोश
- ☞ विद्यापति की पदावलियों को जीव और परमात्मा के सम्बन्ध का रूपक माना है — आनन्दकुमार स्वामी ने
- ☞ सिन्धी भाषा का विकास माना गया है — ब्राचड से
- ☞ डोगरी, संथाली, बोडो तथा भोजपुरी भाषाओं में से भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में नहीं है — भोजपुरी
- ☞ सबरस के रचनाकार हैं — मुल्ला वजही
- ☞ फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई — 1800 ई. में
- ☞ 'बेकसी का मजार' उपन्यास के लेखक हैं— प्रतापनारायण श्रीवास्तव
- ☞ 'सरस्वती' पत्रिका के प्रथम सम्पादक हैं — बाबू श्यामसुन्दर दास
- ☞ एडलर, फ्रायड, जुंग तथा सार्त्र में से मनोविश्लेषणवाद से जुड़े विचारक नहीं हैं — सार्त्र
- ☞ काव्य गुणों के प्रतिष्ठापक आचार्य हैं — वामन
- ☞ 'वैदग्ध्यभंगी भणिति' सूत्र है — कुन्तक का
- ☞ स्वयंभू, घाघ भडुरी, गोरखनाथ तथा अदहमाण में से हठयोग का प्रभाव पड़ा है — गोरखनाथ पर
- ☞ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा स्थापित सिद्धान्त नहीं है— किंग्मति बोध
- ☞ समय संकलन, स्थान संकलन, प्रभाव संकलन तथा कार्य संकलन में से संकलन-त्रय में गणना नहीं की जाती है — प्रभाव संकलन की
- ☞ 'हिन्दी जाति की अवधारणा' के पुरस्कर्ता हैं — रामविलास शर्मा
- ☞ 'भाषा और संवेदना' के लेखक हैं — रामस्वरूप चतुर्वेदी
- ☞ 'नूतन ब्रह्मचारी' उपन्यास के रचनाकार हैं — बालकृष्ण भट्ट
- ☞ 'अंगद का पाँव' के लेखक हैं — श्रीलाल शुक्ल
- ☞ 'कालीचरन' पात्र है — मैला आँचल उपन्यास का
- ☞ हिन्दी की महिला कथाकार नहीं हैं — महाश्वेता देवी
- ☞ तुलसीदास की रचना में संत-महंतों के लक्षण वर्णित हैं — वैराग्य संदीपनी में
- ☞ दृष्टकूट पदों की रचना की है — सूरदास ने (साहित्य लहरी में)
- ☞ 'सुखसागर' के रचनाकार हैं — मुंशी सदासुखलाल 'नियाज'
- ☞ 'बालबोधिनी' मासिक पत्रिका के सम्पादक थे — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- ☞ 'जयवर्द्धमान' नाटक के लेखक हैं — डॉ. रामकुमार वर्मा
- ☞ 'मुकुल' नामक कविता संग्रह के रचनाकार हैं— सुभद्राकुमारी चौहान
- ☞ 'चक्कर क्लब' के रचनाकार हैं — यशपाल
- ☞ 'एन्टन चैखव : एक इंटरव्यू' रचना है — राजेन्द्र यादव की
- नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में 'चैखव : एक इंटरव्यू' दिया है जबकि 'एन्टन चैखव : एक इंटरव्यू' होना चाहिए।
- ☞ 'एही रूप सकती औ सीऊ।
- एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ॥
- काव्य पंक्ति है — संज्ञन की
- नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का कोई भी विकल्प सही नहीं है। यही कारण है कि यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।
- ☞ "जसोदा! कहा कहीं हैं बात?
- तुम्हरे सुत के करतब मो पै कहत कहे नहि जाता॥"
- काव्य पंक्तियाँ हैं — चतुर्भुजदास की
- ☞ "यह अभिनव मानव प्रजा सृष्टि।
- द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि॥"
- काव्य पंक्तियाँ हैं — जयशंकर प्रसाद की
- ☞ कमलेश्वर रचित कहानी नहीं है — एक और जिन्दगी (मोहन राकेश)
- ☞ 'मित्र संवाद' पत्र साहित्य लिखे गये पत्रों का संग्रह है — रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के बीच
- ☞ वृन्दावनलाल वर्मा की कृति है — भुवन विक्रम
- ☞ जीवनीपरक उपन्यास नहीं है — भूले बिसरे चित्र
- ☞ इरावती, मंगलसूत्र, चोटी की पकड़ तथा रत्ना की बात में से अधूरा उपन्यास नहीं है — रत्ना की बात
- ☞ 'लगता नहीं है दिल मेरा' आत्मकथा की लेखिका हैं — कृष्णा अग्निहोत्री
- ☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है — तुम चन्दन हम पानी (1957 ई.), मैंने सिल पहुँचाई (1966 ई.), तमाल के झरोखे से (1981 ई.), शिरीष की याद आई (1995 ई.)।
- ☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर अज्ञेय के निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है — त्रिशंकु (1945 ई.), आत्मपेद (1960 ई.), अन्तरा (1975 ई.), धार और किनारे (1982 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का सही अनुक्रम है — निर्वासित (1946 ई.), जिप्सी (1952 ई.), जहाज का पंछी (1954 ई.), कवि की प्रेयसी (1976 ई.)

- ☞ प्रकाशन के अनुसार रचनाओं का सही अनुक्रम है
- अनामिका (1923 ई.), पल्लव (1926 ई.), लहर (1933 ई.), नीरजा (1935 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार नाटकों का सही अनुक्रम है
- मादा कैक्टस (1959 ई.), सूखा सरोवर (1960 ई.), मिस्टर अभिमन्यु (1971 ई.), कर्पूर (1972 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से रामविलास शर्मा के ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
- आस्था और सौन्दर्य (1961 ई.), भारत की भाषा समस्या (1965 ई.), निराला की साहित्य साधना भाग-1 (1969 ई.), नयी कविता और अस्तित्ववाद (1978 ई.)
- ☞ रचनाकाल की दृष्टि से नाट्य रचनाओं का सही अनुक्रम है
- नहुष (1857 ई.), अन्धेर नगरी (1881 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.), रक्षाबंधन (1934 ई.)
- ☞ रचनाकाल की दृष्टि से एकांकियों का सही अनुक्रम है
- एक घूँट, कारवाँ, एकादशी, नदी प्यासी थी
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है
- बेघर (1971 ई.), जिन्दगीनामा (1979 ई.), आवाँ (1999 ई.), कुड़वाँजान (2005 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
- विराटा की पद्मिनी (1936 ई.), कचनार (1948 ई.), मृगनयनी (1950 ई.), रामगढ़ की रानी (1961 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से पत्र-पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है
- जागरण (1932 ई.), प्रतीक (1947 ई.), नयी कविता (1954 ई.), कल्पना (1992 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से प्रेमचन्द की कहानियों का सही अनुक्रम है
- रानी सारंगा (1910 ई.), नमक का दारोगा (1913 ई.), शतरंज के खिलाड़ी (1925 ई.), सद्गति (1931 ई.)
- ☞ प्रकाशन के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है
- मेरी तिब्बत यात्रा (1937 ई.), कलकत्ता से पेकिंग (1955 ई.), चीड़ों पर चाँदनी (1964 ई.), यात्रा चक्र (1995 ई.)
- ☞ प्रकाशन के अनुसार कहानियों का सही अनुक्रम है
- गदल (1955), डिप्टी कलक्टर (1956 ई.), वापसी (1961 ई.), फैंस के इधर-उधर (1968 ई.)
- ☞ निराला के निबन्ध संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के आधार पर सही अनुक्रम है
- प्रबन्ध पद्म (1934 ई.), प्रबन्ध प्रतिमा (1940 ई.), चाबुक (1949 ई.), चयन (1957 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि	कृति
(a) सत्यनारायण 'कविरत्न'	— भ्रमरदूत
(b) जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	— गंगा लहरी
(c) रामचरित उपाध्याय	— देवदूत
(d) वियोगी हरि	— वीर सतसई

नोट-वीर सतसई कवि सूर्यमल्ल मिश्रण की भी रचना है।

☞ सही सुमेलित हैं—

नाटक	पात्र
(a) अन्धेर नगरी	— नारायण दास
(b) कोर्ट मार्शल	— रामचन्द्र
(c) द्रौपदी	— सुरेखा
(d) कौमुदी महोत्सव	— चाणक्य

☞ सही सुमेलित हैं—

कृति	रचनाकार
(a) भरत मिलाप	— ईश्वरदास
(b) ध्यानमंजरी	— अग्रदास
(c) रामायण महानाटक	— प्राणचन्द चौहान
(d) अवध-विलास	— लालदास

☞ सही सुमेलित हैं—

रचनाकार	कृति
(a) नन्ददास	— रूपमंजरी
(b) श्रीभट्ट	— युगलशतक
(c) रसखान	— प्रेम वाटिका
(d) हरिराम व्यास	— रागमाला

☞ सही सुमेलित हैं—

उक्ति	आचार्य
(a) शब्दार्थ शरीरं तावत् काव्यम्	— दण्डी
(b) काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात्	— वामन
(c) मुख्यार्थहतिर्दोषः	— मम्मट
(d) करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्य निबन्धनम्	— भामह

☞ सही सुमेलित हैं—

उदाहरण	अलंकार
(a) दृग उरझत दूटत कुटुम्ब, जुरत चतुर चित प्रीति। परति गाँठ दुरजन हिण, दर्ई नई यह रीति।	— असंगति
(b) चंचल अंचल सा नीलाम्बर	— उपमा

(c) खिला हो ज्यों बिजली का फूल — उत्प्रेक्षा

मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

(d) अम्बर-पनघट में डुबो रही — रूपक

तारा-घट ऊषा-नागरी

सही सुमेलित हैं—

पंक्ति

कवि

(a) कितना अकेला हूँ मैं, इस — रघुवीर सहाय
समाज में

(b) पिस गया वह भीतरी औ — मुक्तिबोध
बाहरी दो कठिन पाटों बीच

(c) वे पत्तर जोड़ रहे हैं, — नागार्जुन
तुम सपने जोड़ रहे हो।

(d) मैं ही वसंत का अग्रदूत — निराला

सही सुमेलित हैं—

कवि

जनपदीय भाषा

(a) जगदीश गुप्त — ब्रज

(b) बंशीधर शुक्ल — अवधी

(c) ईसुरी — बुंदेली

(d) सूर्यमल्ल मिश्रण — राजस्थानी

सही सुमेलित हैं—

रचनाकार

सम्बद्ध जनसंचार माध्यम

(a) उदयशंकर भट्ट — फिल्म

(b) इलाचन्द्र जोशी — रेडियो

(c) मनोहरश्याम जोशी — दूरदर्शन

(d) अज्ञेय — समाचार-पत्रकारिता

सितम्बर - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

अपभ्रंश को 'प्राकृताभास' हिन्दी कहा है — रामचन्द्र शुक्ल ने

'हिन्दी काव्यधारा' के सम्पादक हैं — राहुल सांकृत्यायन

'हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा। धीरे धरिबा पाँवा।' पंक्ति है

— गोरखनाथ की

'अस्त्रीय जनम कांइ दीधउ महेसा
अवर जनम थारइ घणा रे नरेश'

पंक्ति का सम्बन्ध है — बीसलदेव रासो से

'कबीर की उक्तियों में कहीं-कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है।'
कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का

'जेइ मुख देखा तेइ हँसा सुनि तेहि आयउ आँसु'
पंक्ति हैं — जायसी के बारे में

'कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयो' कथन है
— नाबादास का

'अष्टछाप' के संस्थापक हैं — विठ्ठलनाथ

'खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,
बलि बनिक को न बनिज न चाकर को चाकरी'

पंक्ति सम्बद्ध है — तुलसी की कृति कवितावली से

जहाँगीर—जस—चन्द्रिका रचना है — केशवदास की

'ब्रजभाषा हेतु ब्रजवास ही न अनुमानो' कथन है
— रीतिकाल के कवि भिखारीदास का

'देव की ध्वनि संवेदनशीलता समूचे रीतिकाल में अप्रतिम है'—कथन है
— रामस्वरूप चतुर्वेदी का

'रस्मोरिवाज भाषा का दुनिया से उठ गया'
हिन्दी के बारे में कथन है — मुंशी सदासुखलाल का

भारतेन्दु द्वारा अंग्रेजी से अनूदित नाटक है — दुर्लभ बन्धु

'उपन्यास' मासिक पुस्तक का प्रकाशन शुरू हुआ — सन् 1901 में

'सम्पत्तिशास्त्र की भूमिका' लेख छपा था — सरस्वती पत्रिका में

'भारत भारती' लिखने में प्रेरणा थी

— उर्दू की ग्रन्थ मुसद्दसे हाली की

'छायावाद' स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है—इसकी स्थापना की है
— नगेन्द्र ने

'प्रेम का पयोधि तो उमड़ता है। सदा ही निस्सीम भू पर' यह पंक्ति है
— छायावादी कवि निराला की

'प्राचीन भारत के भाषा परिवार और हिन्दी 'आलोचक ग्रन्थ के लेखक
हैं — रामविलास शर्मा

नागार्जुन के उपन्यासों का सही कालानुक्रम है
— रतिनाथ की चाची (1948 ई.), बलचनमा (1952 ई.), वरुण के

बेटे (1957 ई.), कुम्भीपाक (1960 ई.)

जीवनकाल की दृष्टि से नाटककारों का सही क्रम है
— भुवनेश्वर (1910-1957 ई.), मोहन राकेश (1925 ई.-1972 ई.),

सुरेन्द्र वर्मा (1941 ई.), मीराकांत (1958 ई.)

हिन्दी के मार्क्सवादी आलोचकों का सही कालानुक्रम है
— शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, अमृतराय, नामवर सिंह

आत्मकथाओं का सही कालानुक्रम है
— लगता नहीं है दिल मेरा (1997 ई.), कस्तूरी कुण्डल बसै (2002

ई.), हादसे (2005 ई.), शिकंजे का दर्द (2012 ई.)

यात्रा-वृत्तांतों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है—मेरी तिब्बत यात्रा (1934 ई.), पैरों में पंख बाँधकर (1952 ई.), एक बूँद सहसा उछली (1960 ई.), चीड़ों पर चोंदनी (1988 ई.)

संस्मरण-कृतियों का सही कालानुक्रम है

—लौट आ ओ धार (1965 ई.), हम हशमत (1977 ई.), काशी का अस्सी (2003 ई.), तुम्हारा परसाई (2004 ई.)

उपन्यासों का सही कालानुक्रम है

—परीक्षागुरु, नूतन ब्रह्मचारी, चन्द्रकान्ता, निस्सहाय हिन्दू

संस्कृत आचार्यों का सही कालानुक्रम है —दण्डी (600 ई.), मम्मट (1100 ई.), जयदेव (12वीं शताब्दी), विश्वनाथ (14वीं शताब्दी)

हिन्दी काव्यशास्त्रीय कृतियों का सही अनुक्रम है

—काव्यविवेक (सं. 1666), भाषाभूषण (1683-1738 सं.), रसरराज (1696-1773 सं.), काव्य रसायन (सं. 1760)

सही सुमेलित हैं—

अलंकार	वर्ग
(a) उत्प्रेक्षा	— सादृश्यमूलक
(b) वक्रोक्ति	— गूढार्थ प्रतीतिमूलक
(c) विशेषोक्ति	— विरोध गर्भ
(d) श्लेष	— साम्यमूलक
नोट— प्रश्न औपम्यगर्भ की जगह साम्यमूलक होना चाहिए।	

सही सुमेलित हैं—

सम्पादक	पत्रिका
(a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	— बालाबोधिनी
(b) धर्मवीर भारती	— धर्मयुग
(c) प्रतापनारायण मिश्र	— ब्राह्मण
(d) बदरीनारायण चौधरी	— आनन्द कादम्बिनी

‘प्रेमघन’

सही सुमेलित हैं—

काव्यकृति	रचनाकार
(a) भूरी भूरी खाक धूल	— मुक्तिबोध
(b) गंगातट	— ज्ञानेन्द्र पति
(c) स्त्री मेरे भीतर	— पवनकरण
(d) इस पौरुषपूर्ण समय में	— कात्यायनी

सही सुमेलित हैं—

आलोचनात्मक पुस्तक	लेखक
(a) कविता के नये प्रतिमान—	— नामवर सिंह
(b) आलोचना के मान	— शिवदान सिंह चौहान

(c) नई कविता के प्रतिमान—

(d) साहित्य का नया पश्चिप्रेक्ष्य

सही सुमेलित हैं—

इतिहास ग्रन्थ

(a) हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास

(b) हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास

(c) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

(d) हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास

सही सुमेलित हैं—

निबन्ध संग्रह	लेखक
(a) त्रिशंकु	— अज्ञेय
(b) ठेले पर हिमालय	— धर्मवीर भारती
(c) कस्तूरी मृग	— शिवप्रसाद सिंह
(d) शब्द और स्मृति	— निर्मल वर्मा

सही सुमेलित हैं—

नाटककार	नाट्यकृति
(a) मीराकान्त	— ईहामृग
(b) कुसुम कुमार	— दिल्ली जैचा सुनती है
(c) मृणाल पाण्डेय	— जो राम रचि राखा
(d) शान्ति महरोत्रा	— ठहरा हुआ पानी

सही सुमेलित हैं—

काव्यशास्त्री	कृति
(a) आई.ए.रिचर्ड्स	— द फिलॉसफी ऑफ रेटरिक
(b) विलियम एम्पसन	— सेवन टाइप्स ऑफ एंबिगुइटी
(c) जॉन क्रो रेंसम	— गॉड विदाउट थंडर
(d) एलेन टेट	— ऑन द लिमिट्स ऑफ पोएट्री

सही सुमेलित हैं—

काव्यशास्त्री	कृति
(a) राजशेखर	— काव्य मीमांसा
(b) अभिनव गुप्त	— ध्वन्यालोकलोचन
(c) भोजराज	— सरस्वती कण्ठाभरण
(d) रामचन्द्र गुणवन्द्य	— नाट्यदर्पण

सितम्बर - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ‘आल्हा’ गाये जाते हैं —वर्षा ऋतु में
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना है
- प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से
- नाट्य वृत्तियों की संख्या है —चार
- रस निष्पत्ति के संदर्भ में ‘अनुमितिवाद’ की स्थापना की —शंकुक ने
- ‘साधारणीकरण आलम्बनत्व धर्म का होता है।’ यह मान्यता है
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की
- ‘रणमल्ल छंद’ नामक काव्य के रचनाकार हैं —श्रीधर
- ‘गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग’ यह उक्ति है
- तुलसीदास की
- जयदेव से प्रभावित विद्यापति की रचना है —पदमाली
- ‘उज्ज्वलनीलमणि’ के रचयिता हैं —रूप गोस्वामी
- आचार्य भरत के अनुसार नाट्य मंच के प्रकार हैं —तीन
- मीराबाई की उपासना थी —माधुर्यभाव की
- सुन्दरदास, मल्लूकदास, कबीरदास तथा कुंभनदास में से ज्ञानाश्रयी शाखा का कवि नहीं है —कुंभनदास
- मधुमालती नायिका है —मंझन द्वारा रचित काव्य की
- भ्रमरगीत प्रसंग की कथा का वर्णन है भागवत के
- दशम स्कन्ध में
- “कर्म जोग पुनि ज्ञान उपासन सब ही भ्रम भरमायो।
श्री बल्लभ गुरु तत्व सुनायो लीला भेद बतायो॥”
- काव्योक्ति है —सूरदास की
- ‘रामाज्ञा प्रश्नावली’ रचना है —तुलसीदास की
- मलिक मुहम्मद जायसी ने ‘आखिरी कलाम’ में प्रशंसा की है
- बादशाह बाबर की
- सूरदास की रचना में अलंकारों और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले कूट पद हैं —साहित्यलहरी में
- रसखान शिष्य थे —गोस्वामी विठ्ठलनाथ के
- ‘शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्’ काव्य लक्षण के प्रणेता हैं —भामह
- बिहारीलाल आश्रित कवि थे —महाराज जयसिंह के
- ‘अभिधा उत्तम काव्य है; मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन॥”
- उक्ति में अभिधा, लक्षणा आदि शब्द शक्तियों का निरूपण किया है
- कवि देव ने
- “अमिय, हलाहल, मदभारे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुकि झुकि परत, जेहि चितवत इकबार॥”
- दोहा वर्णित है —अंग दर्पण में
- घनानंद थे —वैष्णव सम्प्रदाय के निम्बार्क सम्प्रदाय शाखा से
- “अपनी कहानी का आरम्भ ही उन्होंने इस ढंग से किया है जैसे लखनऊ के भाँड घोड़ा कुदाते हुए महफिल में आते हैं।” आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है —इंशा अल्ला खॉ के सन्दर्भ में
- ‘सखा प्यारे कृष्ण के गुलाम राधा रानी के’ यह पंक्ति है
- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के गारे में
- कृष्णायन रचना है —महाकाव्य विधा की
- लाला सीताराम, हजारी प्रसाद द्विवेदी, मोहन राकेश तथा नागार्जुन में से कालिदास के मेघदूत का अनुवादक नहीं है —मोहन राकेश
- संयोगिता खय्यवर, महाराणा प्रताप, तप्ता संवरण तथा रणधीर प्रेममोहिनी में से श्रीनिवासदास का नाटक नहीं है —महाराणा प्रताप
- ‘भागवती’ उपन्यास है —सामाजिक
- खड़ी बोली में लिखित हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है —प्रियप्रवास
- ‘भारत भारती’ का रचनाकाल है —सन् 1911
- नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर सन् 1912 दिया है, जो इसका प्रकाशन काल है।
- ‘साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद’ निबन्ध है
- रामचन्द्र शुक्ल का
- ‘इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती।’
- काव्य पंक्तियों के रचनाकार हैं —जयशंकर प्रसाद
- रंगदर्शन के लेखक हैं —नेमिचन्द्र जैन
- ‘हिन्दी जाति की अवधारणा’ के प्रवर्तक हैं —रामविलास शर्मा
- उपेन्द्रनाथ अशक, प्रेमचन्द, विष्णु प्रभाकर तथा जैनेन्द्र में से गाँधीवादी साहित्यकार नहीं हैं —उपेन्द्रनाथ अशक
- कुन्तक ने वक्रोक्ति के भेद माने हैं —छह
- प्रतीकवादी आन्दोलन का उदय हुआ है —फ्रांस में
- जीवनकाल के क्रमानुसार कवियों का सही अनुक्रम है
- जगन्नाथदास रत्नाकर (1866-1932 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1960 ई.), जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.), सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ (1897-1962 ई.)
- जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का प्रकाशन काल के क्रम से सही अनुक्रम है —परख (1929 ई.), सुनीता (1935 ई.), कल्याणी (1939 ई.)
- दशार्क (1985 ई.)

जीवनकाल के क्रम से संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्यों का सही अनुक्रम है —भरतमुनि (200 ई.पू.), भट्ट लोल्लट (8 वीं शताब्दी), शंकुक (850 ई.), भट्टनायक (900-1000 ई.)

प्रकाशन वर्ष के अनुसार आंचलिक उपन्यासों का सही अनुक्रम है —देहाती दुनिया (1925 ई.), बलचनमा (1952 ई.), मैला आँचल (1954 ई.), सागर लहरें और मनुष्य (1955 ई.)

प्रकाशन वर्ष के अनुसार पत्र-संग्रहों का सही अनुक्रम है —चिट्ठी-पत्र (1962 ई.), फाइल प्रोफाइल (1970 ई.), दो सौ पत्र बचन के नाम (1971 ई.), प्रसाद के नाम पत्र (1976 ई.)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचनाओं का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —जूही की कली (1916 ई.), अनामिका (1923 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), अपरा (1946 ई.)

उपन्यासों का प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार सही क्रम है —सूरज का सातवाँ घोड़ा (1952 ई.), बहती गंगा (1952 ई.), सोया हुआ जल (1955 ई.), कंदील और कुहासे (1969 ई.)
नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में विकल्प (A) सही बताया गया है, जबकि विकल्प (D) अर्थात् उपर्युक्त क्रम सही है।

समाचार-पत्रों का प्रकाशन वर्ष के क्रमानुसार सही क्रम है —उदंत मार्टंड (30 मई, 1826 ई.), प्रजामित्र (1834 ई.), प्रजा हितैषी (1855 ई.) आगरा अखबार (1870 ई.)

कुबेरनाथ राय के निबन्धों का प्रकाशन काल के क्रमानुसार सही अनुक्रम है —रस आखेटक (1971 ई.), गंध मादन (1972 ई.), निषाद बांसुरी (1974 ई.), आगम की नाव (2008 ई.)

जीवनकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है —महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई.), बाल मुकुंद गुप्त (1865-1907 ई.), सरदार पूर्ण सिंह (1881-1931 ई.), रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.)

हरिशंकर परसाई के निबन्ध-संग्रहों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —पगडंडियों का जमाना (1966 ई.), सदाचार का ताबीज (1967 ई.), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970 ई.), सुनो भाई साधो (1983 ई.)

निर्मल वर्मा के निबन्ध संकलनों का प्रकाशन वर्ष के अनुसार सही अनुक्रम है —शब्द और स्मृति (1976 ई.), कला का जोखिम (1981 ई.), शताब्दी के ढलते वर्षों में (1995 ई.), आदि अंत और प्रारम्भ (2001 ई.)

सही सुमेलित हैं—

कवि

- (a) सुभद्राकुमारी चौहान —
- (b) महादेवी वर्मा —
- (c) माखनलाल चतुर्वेदी —
- (d) भगवतीचरण वर्मा —

सही सुमेलित हैं—

पत्रिका

- (a) समालोचक — चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
- (b) इंदु — अम्बिका प्रसाद गुप्त
- (c) अभ्युदय — मदन मोहन मालवीय
- (d) प्रताप — गणेश शंकर विद्यार्थी

सही सुमेलित हैं—

उपन्यासकार

- (a) मन्नू भण्डारी — महाभोज
- (b) कृष्णा सोबती — सूरजमुखी अँधेरे में
- (c) मृदुला गर्ग — चित्तकोबरा
- (d) प्रभा खेतान — छिन्नमस्ता

सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रन्थ

- (a) साहित्यालोचन — श्यामसुन्दर दास
- (b) साहित्य समालोचना — रामकुमार वर्मा
- (c) निराला की साहित्य साधना — रामविलास शर्मा
- (d) आलोचनादर्श — रमाशंकर शुक्ल

सही सुमेलित हैं—

पात्र

- (a) जालपा — गबन
- (b) वर्षा — मुझे चाँद चाहिए
- (c) मृणालिनी — त्यागपत्र
- (d) सेल्मा — अपने-अपने अजनबी

सही सुमेलित हैं—

कहानीकार

- (a) जैनेन्द्र कुमार — ग्रामोफोन का रिकॉर्ड
- (b) अज्ञेय — रोज
- (c) भीष्म साहनी — चीफ की दावत
- (d) मोहन राकेश — मिसपाल

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'ग्रामोफोन' दिया है, जो कि गलत है 'ग्रामोफोन' कहानी हरि भटनागर द्वारा रचित है। जैनेन्द्र की कहानी 'ग्रामोफोन का रिकॉर्ड' है।

सही सुमेलित हैं—

चरित्र	काव्य
(a) मानव	— कामायनी
(b) पुरुरवा	— उर्वशी
(c) युयुत्सु	— अन्धायुग
(d) राधा	— प्रियप्रवास

सही सुमेलित हैं—

सिद्धान्त	विचारक
(a) उदात्तत्व	— लॉजाइन्स
(b) संरचनावाद	— सस्यूर
(c) विखण्डनवाद	— जाक देरिदा
(d) निर्वैयक्तिकता	— इलियट

सही सुमेलित हैं—

निबन्ध	निबन्धकार
(a) कछुआ धर्म	— चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
(b) आचरण की सभ्यता	— सरदार पूर्ण सिंह
(c) तुम चन्दन हम पानी	— विद्यानिवास मिश्र
(d) भारतीय संस्कृति की देन	— हजारी प्रसद द्विवेदी

सही सुमेलित हैं—

रस	स्थायीभाव
(a) रौद्र	— क्रोध
(b) वीभत्स	— जुगुप्सा
(c) अद्भुत	— विस्मय
(d) शान्त	— निर्वेद

जून - 2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

‘वट पीपल’ के लेखक हैं — रामधारी सिंह दिनकर

‘समान्तर कहानी’ के पुरस्कर्ता हैं — कमलेश्वर

‘शेष यात्रा’ की लेखिका हैं — उषा प्रियंवदा

हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहासकार हैं — गार्सा द ताली

‘कुमारपाल प्रतिबोध’ के रचनाकार हैं — सोमप्रभु सूरि

अजय की डायरी, एक साहित्यिक की डायरी, जयवर्धन तथा पहला गिरमिटिया रचनाओं में से उपन्यास नहीं है

— एक साहित्यिक की डायरी (निबन्ध-संग्रह, मुक्तिबोध)

शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य तथा मध्वाचार्य में से वैष्णव भक्ति के आचार्य नहीं हैं — शंकराचार्य

रामनारायण मिश्र, श्यामसुन्दर दास, रामचन्द्र शुक्ल तथा ठाकुर शिवकुमार सिंह में से नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक नहीं हैं

— रामचन्द्र शुक्ल

जगनिक की रचना कही जाती है — परमाल रासो या आल्हखण्ड
नोट- यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में परमाल रासो तथा आल्हखण्ड दोनों दिया गया है, जबकि परमाल रासो का ही दूसरा नाम आल्हखण्ड है। अतः यूजीसी ने विकल्प में दो उत्तर (b & d) सही माने हैं।

‘झोपड़ी से राजभवन तक’ के लेखक हैं — माताप्रसाद

भारत भूषण अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र, प्रभाकर माचवे तथा गिरिजा कुमार माथुर में से ‘तार सप्तक’ के कवि नहीं हैं

— भवानी प्रसाद मिश्र (द्वितीय तार सप्तक)

‘एक हथौड़ा वाला घर में और हुआ’ पंक्ति है

— केदारनाथ अग्रवाल की

प्रयोगवाद को ‘बैठे ठाले का धन्धा’ कहा है— नन्ददुलारे वाजपेयी ने

‘अगले जनम मोहि बिटिया न कीजो’ की लेखिका हैं

— उर्दू लेखिका कुर्तल-एन-हैदर

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई विकल्प सही नहीं है। अतः इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये गये हैं।

‘अग्निपथ के पार चन्दन-चौदनी का देश’ पंक्ति है

— महादेवी वर्मा (‘दीपमन’ शीर्षक से)

‘आनन्द कादम्बिनी’ के सम्पादक थे — बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’ (1881 में मिर्जापुर से प्रकाशित)

‘गोबर गणेश’ उपन्यास के लेखक हैं — रमेशचन्द्र शाह

‘फादर कमिल बुल्के’ को हिन्दी साहित्य में महत्व दिए जाने का कारण है

— कोश निर्माण, रामकथा लेखन तथा तुलसी साहित्य के विशेषज्ञ

‘आत्माराम की टेंट-टेंट’ निबन्ध में आत्माराम के प्रतीक हैं

— बालमुकुन्द गुप्त

प्रकाशन के अनुसार इन आलोचना ग्रन्थों का सही अनुक्रम है

— हिन्दी नवरत्न (1910 ई.), प्रेमचन्द और उनका युग (1952 ई.), हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष (1954 ई.), छायावाद (1955 ई.)

जन्म के आधार पर निबन्धकारों का सही अनुक्रम है

— डॉ. सम्पूर्णानन्द (1891-1969 ई.), रामवृक्ष बेनीपुरी (1899-1968 ई.), वासुदेवशरण अग्रवाल (1904-1966 ई.), भगवतशरण उपाध्याय (1910-1982 ई.)

प्रकाशन वर्ष के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— रुकोगी नहीं राधिका (1967 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), सूरजमुखी अँधेरे के (1972 ई.), चित्तोबरा (1975 ई.)

प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है
— राज्यश्री (1915 ई.), विशाख (1921 ई.), अजातशत्रु (1922 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.)

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— सुनीता (1934 ई.), त्यागपत्र (1937 ई.), कल्याणी (1940 ई.), सुखदा (1952 ई.)

काल के अनुसार आचार्यों का सही अनुक्रम है
— भामह (छठी शताब्दी), दण्डी (सातवीं शताब्दी), आनन्दवर्धन (नवीं शताब्दी के मध्य), अभिनव गुप्त (दसवीं शताब्दी के अन्त एवं ग्यारहवीं शताब्दी के शुरु में)

चरण में वर्णों की संख्या (कम से अधिक) के आधार पर वर्णिक छन्दों का सही अनुक्रम है — इन्द्रवज्रा (11 वर्ण), वसन्ततिलका (14 वर्ण), मन्दाक्रान्ता (17 वर्ण), शार्दूलविक्रीडित (19 वर्ण)

आदिकाल के रचनाकारों का सही अनुक्रम है — सरहपा (769 ई.), गोरखनाथ (845 ई.), अमीर खुसरो (1253-1325 ई.), विद्यापति (1350-1374 ई.)

स्थापना के आधार पर हिन्दी संस्थानों का सही अनुक्रम है
— काशी नागरी प्राचारिणी सभा (1893 ई.), हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (1910 ई.), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा (1936 ई.), साहित्य अकादमी (1954 ई.)

जन्म के आधार पर कवियों का सही अनुक्रम है
— कुंभनदास (1468-1582 ई.), सूरदास (1478-1563 ई.), परमानन्द दास (1493-1583 ई.), कृष्णदास (1495 ई.)

सही सुमेलित हैं—

भाषा रूप

प्रयोक्ता

- | | | |
|--------------|---|----------------|
| (a) दक्खिनी | — | कुतुबशाह |
| (b) कोसली | — | दामोदर पंडित |
| (c) ब्रजबुलि | — | शंकर देव अवतरे |
| (d) संघाभाषा | — | सरहदपाद |

सही सुमेलित हैं—

इतिहास ग्रन्थ

लेखक

- | | | |
|-----------------------------------------|---|-----------------------|
| (a) हिन्दी साहित्य का अतीत | — | विश्वनाथ प्रसाद मिश्र |
| (b) हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास | — | रामस्वरूप चतुर्वेदी |
| (c) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास | — | गणपति चन्द्र गुप्त |
| (d) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास | — | रामकुमार वर्मा |

सही सुमेलित हैं—

रचना

कवि

- | | | |
|----------------|---|---------|
| (a) बीजक | — | कबीर |
| (b) अखरावट | — | जायसी |
| (c) भक्तमाल | — | नाभादास |
| (d) श्याम सगाई | — | नन्ददास |

सही सुमेलित हैं—

रचना

कवि

- | | | |
|--------------------|---|-----------|
| (a) छत्रसाल दशक | — | भूषण |
| (b) कवि कुलकल्पतरु | — | चिन्तामणि |
| (c) भाव विलास | — | देव |
| (d) इश्कलता | — | घनानन्द |

सही सुमेलित हैं—

काव्य छन्द

प्रयोक्ता

- | | | |
|------------|---|------------------------------|
| (a) सॉनेट | — | त्रिलोचन |
| (b) हाइकू | — | अज्ञेय |
| (c) सवैया | — | गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' |
| (d) कवित्त | — | अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |

सही सुमेलित हैं—

काव्य पंक्ति

कवि

- | | | |
|------------------------------------------------------|---|------------------------------|
| (a) चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बना | — | महादेवी वर्मा |
| (b) रूपोद्यान प्रफुल्लप्राय कलिका राकेन्दु बिम्बानना | — | अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' |
| (c) वेदने! तू भी भली बनी | — | मैथिलीशरण गुप्त |
| (d) सुरम्य रम्ये, रस राशि रंजिते | — | महावीर प्रसाद द्विवेदी |

सही सुमेलित हैं—

नाटक

नाटककार

- | | | |
|--------------------------|---|----------------------|
| (a) बन्धन अपने-अपने | — | शंकर शेष |
| (b) सिन्दूर की होली | — | लक्ष्मी नारायण मिश्र |
| (c) अशोक का शोक | — | रामकुमार वर्मा |
| (d) नायक, खलनायक, विदूषक | — | सुरेन्द्र वर्मा |

नोट—यूजीसी के इस प्रश्न में लक्ष्मीनारायण लाल दिया है, जो कि उपर्युक्त में से इनकी कोई रचना नहीं है, जबकि सिन्दूर की होली, लक्ष्मीनारायण मिश्र की रचना है। नायक, खलनायक, विदूषक-मन्नू भण्डारी का कहानी संग्रह भी है।

☞ सही सुमेलित हैं—

कहानी	कहानीकार
(a) लाल पान की बेगम	— फणीश्वरनाथ रेणु
(b) एक औरत की जिन्दगी	— रामदरश मिश्र
(c) लन्दन की एक रात	— निर्मल वर्मा
(d) शवयात्रा	— श्रीकान्त वर्मा

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्ति	लेखक
(a) भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है।	— रामचन्द्र शुक्ल
(b) श्रद्धेय बनने का मतलब है 'नान परसन' अव्यक्ति हो जाना	— हरिशंकर परसाई
(c) काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है	— जयशंकर प्रसाद
(d) पंडिताई भी एक बोझ है	— हजारी प्रसाद द्विवेदी

☞ सही सुमेलित हैं—

अवधारणा	संस्थापक
(a) सहृदय	— आनन्द वर्धन
(b) साधारणीकरण	— भट्टनायक
(c) मधुमती भूमिका	— केशवप्रसाद मिश्र
(d) अर्थ की लय	— जगदीश गुप्त

☞ **स्थापना (A)** : उपमान को अप्रस्तुत विधान मानना हिन्दी का प्राचीन सिद्धान्त है।

तर्क (R) : यह स्थापना आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की है अर्थात् यह नवीन सिद्धान्त है।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A)** : अस्तित्ववाद विज्ञान विरोधी दर्शन है।

तर्क (R) : यह 'चयन' की अगाध छूट देता है और अराजकता, अनास्था तथा अतिस्वच्छन्दता को प्रश्रय देता है विज्ञान का भी यह अंध समर्थन नहीं करता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A)** : काव्य का सर्वस्व है 'काव्यालंकार'। इसके रहते अन्य किसी की आवश्यकता नहीं।

तर्क (R) : काव्यालंकार में 'रसध्वनि', 'रसवदलंकार' आदि समस्त सम्प्रदायों का स्वतः सन्निवेश हो जाता है, वही सच्चे अर्थों में शोभाकारक धर्म है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

☞ **स्थापना (A)** : बिम्ब का मुख्य ध्येय होता है, वर्ण्य विषय का ऐन्द्रिय प्रतिबिम्बना।

तर्क (R) : बिम्ब-विधायक रचनाकार ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अपने भावों का सम्मूर्तन करके उनका सम्प्रेषण करता है और अपने बिम्ब से पाठक को जोड़ता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A)** : 'स्वच्छन्दवाद' न छायावाद है, न रहस्यवाद।

तर्क (R) : यह शास्त्रीय जड़ता की प्रतिक्रिया से उत्पन्न वैयक्तिक कल्पनातिरेक और निजी रहस्यानुभूति की उपज है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र

☞ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार, पूर्वी हिन्दी आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में आती है —**प्राच्य वर्ग में**

☞ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने वैदिक ध्वनियों की संख्या मानी है

—**13 स्वर, 38 व्यंजन = 51**

☞ लल्लूजी लाल द्वारा रचित नहीं है

—**चंद्रावती**

☞ अंगबधू रचना है

—**कवि दादूदयाल की**

☞ शिवपूजन सहाय का एकमात्र उपन्यास हैं

—**देहाती दुनिया**

☞ वक्रोक्ति सम्प्रदाय के विरोधी आचार्य हैं

—**आचार्य विश्वनाथ**

☞ भावातिरेक को अनिष्टकर माना है

—**आचार्य प्लेटो ने**

☞ रुद्रट, भामह, दण्डी, उद्भट में से अलंकार सम्प्रदाय के संस्थापक आचार्य हैं

—**भामह**

☞ पश्चिम के आचार्यों ने भावदमन को अनिष्टकर माना है —**अरस्तू ने**

☞ कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा का विभाजन किया है

—**आचार्य राजशेखर ने**

☞ "कर्मठ कठमलिया कहें ज्ञानी ज्ञान-विहीन

तुलसी त्रिपथ बिहाय गो राम दुलारे दीन"

में त्रिपथ का अर्थ है —**कर्म मार्ग, ज्ञान मार्ग और उपासना मार्ग**

☞ 'ढलमल-ढलमल चंचल अंतल, झलमल-झलमल तारा' पंक्ति में मुख्यतः वर्णन है

—**नदी की धारा का**

☞ संतन को कहा सीकरी सों काम?

आबत जात पहनियाँ टूटी, बिसरि गयो हरि नाम॥

यह पंक्तियाँ हैं

—**कुंभनदास की**

- ☞ बहु बीती थोरी रही, सोऊ बीती जाय।
हित ध्रुव बेगि बिचारि कै बसि बृंदावन आय।।
यह पंक्तियाँ हैं —ध्रुवदास का
- ☞ छायावाद के समर्थन में सबसे पहला लेख लिखने वाले लेखक हैं —मुकुटधर पाण्डेय
- ☞ 'संशय की एक रात' आधारित रचना है —राम के संशय पर
- ☞ 'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा वृत्त है —अज्ञेय का
- ☞ पथ के साथी, हम हशमत, लौट आओ धार तथा मित्र संवाद में से संस्मरण विधा की कृति नहीं है —मित्र संवाद
- ☞ हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास जिसमें औपनिषदिक कथा का आधार लिया गया है —अनामदास का पोथा
- ☞ महाप्रस्थान, उर्वशी, कनुप्रिया तथा अमन का राग में से पौराणिक कथा पर आधारित रचना नहीं है —अमन का राग
- ☞ 'कर्मनाशा की हार' कहानी संग्रह है —शिवप्रसाद सिंह की
- ☞ रामवृक्ष बेनीपुरी का नाटक है —आम्बपाली
- ☞ 'शारदीया' गद्य काव्य-कृति के रचनाकार हैं —सुमन राजे
- ☞ नोट—यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न का उत्तर सुमन राजे माना है, जबकि डॉ. नगेन्द्र की पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में स्पष्ट उल्लेख है कि 'शारदीया' गद्य काव्य कृति दिनेश-नंदिनी चौरड्या (डालमिया) की है।
- ☞ फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब तथा अमरवल्लरी में से जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी नहीं है —अमरवल्लरी
- ☞ 'एक प्लेट सैलाब' कहानी की लेखिका हैं —मनू भंडारी
- ☞ 'रंग दे बसंती चोला' नाटक के रचनाकार हैं —भीष्म साहनी
- ☞ 'यह पथ बंधु था' उपन्यास के लेखक हैं —नरेश मेहता
- ☞ 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास की नायिका है —निर्गुनिया
- ☞ 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास के स्त्री पात्र हैं —शशि-सरस्वती
- ☞ झूठा सच, तमस, सीधी सच्ची बातें तथा आधा गाँव में से भारत-विभाजन पर आधारित उपन्यास नहीं है —सीधी सच्ची बातें
- ☞ रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचना नहीं है —अध्यात्म चिन्तन
- ☞ भीष्म साहनी की रचना है —कड़ियाँ
- ☞ भगवती चरण वर्मा का उपन्यास नहीं है —न आने वाला कल
- ☞ 'देखिए मार्क्सवाद सिखाता है कि हर चीज पर डाउट करो'- यह कथन है आलोचक —रामविलास शर्मा का
- ☞ भारत भारती, बंदिनी, झाँसी की रानी तथा चिनगारियाँ में से प्रतिबंधित कृति रही है —भारत भारती
- ☞ 'लाल पसीना' उपन्यास के लेखक हैं —अभिमन्यु अनंत
- ☞ 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे हैं' कहानी संग्रह है— चित्रा मुद्गल का
- ☞ 'मय्यादास की माड़ी' उपन्यास के लेखक हैं —भीष्म साहनी
- ☞ निर्मल वर्मा द्वारा रचित निबंधों का संग्रह नहीं है —चिन्तन मुद्रा
- ☞ 'कुछ पते कुछ चिट्ठियाँ' रचना है —रघुवीर सहाय की
- ☞ रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है —मृगावती (1503 ई.), पद्मावत (1540 ई.), चित्रावली (1613 ई.), इन्द्रावती (1744 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है —आधा गाँव, धरती धन न अपना, मुरदाघर, किसनगढ़ के अहेरी
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है —मछली मरी हुई, महामोज, पहला गिरमिटिया, कितने पाकिस्तान
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है —दुलाईवाली, ग्राम, पंच परमेश्वर, पाजेब
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है —बोलती प्रतिमा, अतीत के चलचित्र, समय के पाँव, दस तसवीरें
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निर्मल वर्मा के निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है —शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, डलान से उतरते हुए, शताब्दी के ढलते वर्षों में
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार कुबेरनाथ राय के निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है —रस आखेटक, विषाद योग, महाकवि की तर्जनी, दृष्टि अभिसार
- ☞ कवियों का काल क्रमानुसार सही अनुक्रम है —नरेश मेहता, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, ऋतुराज, मदन कश्यप
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार निबंध संग्रहों का सही अनुक्रम है —अशोक के फूल (1948 ई.), विचार और वितर्क (1949 ई.), कुटज (1964 ई.), आलोक पर्व (1972 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है —बलचनमा, मैला आँचल, बहती गंगा, जल टूटता हुआ
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार प्रेमचंद के उपन्यासों का सही अनुक्रम है —वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार महाकाव्यों का सही अनुक्रम है —प्रियप्रवास, साकेत, कामायनी, उर्वशी
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है —अर्धकथानक, टुकड़े टुकड़े दास्तान, आज के अतीत, मुड़ मुड़ कर देखता हूँ
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार लल्लूजी लाल की कृतियों का सही अनुक्रम है —सिंहासन बत्तीसी, शकुंतला नाटक, सभाविलास, लाल चन्द्रिका
- ☞ प्रकाशन वर्ष के अनुसार नन्ददुलारे वाजपेयी के आलोचना ग्रंथों का सही अनुक्रम है—हिन्दी साहित्य-बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य, रस सिद्धांत, रीति और शैली
- ☞ स्थापना (A) : मानववाद नास्तिक दर्शन है और मानवतावाद आस्तिक दर्शन।
- ☞ तर्क (R) : मानवतावाद मूलतः निर्गुण-निराकार का प्रतिपादन करता है।
- ☞ —(A) सही, (R) गलत है
- ☞ स्थापना (A) : हिन्दी कवि-आचार्यों की मौलिक देन है-'रसरति' की स्थापना।

तर्क (R) : हिन्दी रीतिकाल में रस से ज्यादा रीति को महत्व दिया गया है

—(A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** लय शब्द मात्र में ही नहीं; अर्थ, भाव, विचार-सब में होती है।

तर्क (R) : शब्द-अर्थ अन्योन्याश्रित होते हैं। शब्द श्रव्य होते हैं और अर्थ बुद्धिग्राह्य। दोनों के अनुपात से ही श्रेष्ठ साहित्य का सृजन होता है।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** रत्नानि से दुबला होने में देर लगती है और पानीदार ही दुबला होता है।

तर्क (R) : दुबला होना आदमी की निर्बलता की निशानी है।

—(A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** काव्य का विषय सदा 'विशेष' होता है 'सामान्य' नहीं। वह 'व्यक्ति' सामने लाता है 'जाति' नहीं।

तर्क (R) : काव्य की संरचना सदैव 'जाति' पर आश्रित होकर 'व्यक्ति' केंद्रित हो जाती है।

—(A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** साहसपूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है।

तर्क (R) : साहस के बिना वीरकर्म का सम्पादन नहीं होता है। अतः आनंद भी प्राप्त नहीं होता।

—(A) और (R) दोनों सही हैं

☞ सही सुमेलित हैं—

कहानी

- (a) एक और जिन्दगी —
(b) सर्पदंश —
(c) शरणागत —
(d) विपात्र —

लेखक

- मोहन राकेश
रामदरश मिश्र
वृन्दावनलाल वर्मा
मुक्तिबोध

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्ति

- (a) जब मैं था तब हरि नहीं,
अब हरि हैं मैं नहीं।
(b) राम को रूप निहारत जानकी
कंकन के नग की परछाहीं।
(c) जानत है वह सिरजन हारा,
जो कछु है मन मरम हमारा।
(d) अधर लगे हैं आनि करिकै प्रयास-प्राण
चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।

छन्द

- दोहा
— सवैया
— चौपाई (अर्द्धाली)
— कवित्त

☞ सही सुमेलित हैं—

कृति

- (a) एसेज इन क्रिटिसिज्म
(b) एस्थेटिका
(c) फिलॉसफी ऑफ रिटोरिक
(d) ए हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न क्रिटिसिज्म

रचनाकार

- मैथ्यू ऑर्नल्ड
— क्रोचे
— आई.ए. रिचर्ड्स
— रेनेवेलेक

☞ सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रंथ

- (a) शृंगार प्रकाश — भोज
(b) व्यक्ति-विवेक — महिम भट्ट
(c) चित्रा-मीमांसा — अप्पय दीक्षित
(d) रस मंजरी — भानुदत्त

☞ सही सुमेलित हैं—

सम्प्रदाय

- (a) राधावल्लभ सम्प्रदाय — बिहारी
(b) खालसा सम्प्रदाय — गुरु गोविन्द सिंह
(c) सूफी सम्प्रदाय — शेख फरीद
(d) प्रणामी सम्प्रदाय — प्राणनाथ

कवि

☞ सही सुमेलित हैं—

हिन्दी सेवी

- (a) जॉर्ज ए. ग्रियर्सन — मूल-स्थान
(b) फ्रेडरिक पिन्कट — आयरलैंड
(c) वरान्निकोव — इंग्लैंड
(d) अभिमन्यु अनत — रूस
मॉरीशस

मूल-स्थान

☞ सही सुमेलित हैं—

पुरस्कार

- (a) प्रथम देव पुरस्कार — दुलारे लाल भार्गव
(b) मंगला प्रसाद पारितोषिक — जयशंकर प्रसाद
(c) प्रथम भारत-भारती — महादेवी वर्मा
(d) व्यास पुरस्कार (2011) — अमरकांत

पुरस्कृत साहित्यकार

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- (a) तीसरी कसम — दुहरे शीर्षक
(b) बिगाड़े का सुधार — मारे गए गुलफाम
(c) रानी केतकी की कहानी — सती सुख देवी
(d) ठेठ हिन्दी का ठाट — उदयभान चरित
देवबाला

दुहरे शीर्षक

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि

- (a) मतिराम — आश्रयदाता
(b) पद्माकर — बूंदी राजा भावसिंह
(c) रत्नाकर — नागपुर महाराज रघुनाथ राव
(d) भिखारीदास — अयोध्या नरेश प्रतापनारायण सिंह
प्रतापगढ़ अधिपति हिन्दूपति सिंह

आश्रयदाता

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्ति

- (a) अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे,
उठाने ही होंगे।
(b) हँस पड़ा गगन, वह शून्य लोक
(c) स्थिर समर्पण है हमारा
(d) आप अपने से उगा मैं

कृति

- अंधेरे में
— कामायनी
— नदी के द्वीप
— कुकुरमुत्ता

दिसम्बर - 2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'सरहपा' का सम्बन्ध है — सिद्ध साहित्य से
- ☞ सूरदास, कुंभनदास, नन्ददास तथा सुन्दरदास में से अष्टछाप के कवि नहीं है — सुन्दरदास
- ☞ बिहारी कवि हैं — रीति सिद्ध के
- ☞ प्रेमचन्द उपन्यासकार हैं — आदर्शोन्मुख यथार्थवादी प्रवृत्ति के
- ☞ अमृतलाल नागर के जीवनीपरक उपन्यास 'खंजन नयन' में जीवन का चित्रण किया गया है — सूरदास के
- ☞ अंग्रेजी स्वच्छन्दतावादी काव्य का प्रभाव हिन्दी की काव्यधारा पर दिखाई देता है — छायावाद के
- ☞ "दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।" उपर्युक्त पंक्तियाँ उद्धृत हैं — सरोज स्मृति से
- ☞ 'रस आखेटक' के रचनाकार हैं — कुबेरनाथ राय
- ☞ हरिशंकर परसाई की रचना नहीं है — जीप पर सवार इल्लियाँ
- ☞ 'एक बूँद सहसा उछली' है — यात्रा-वृत्तान्त
- ☞ 'आलोचक के मुख से' व्याख्यानों का संकलन है — नामवर सिंह का
- ☞ 'समय देवता' कविता है — नरेश मेहता की
- ☞ 'ऑफ़ थ्रैमेटोलोजी' के लेखक हैं — जैक देरिदा
- ☞ शिवदान सिंह चौहान, शिवकुमार मिश्र, प्रकाशचन्द गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी में से मार्क्सवादी आलोचक नहीं हैं — रामस्वरूप चतुर्वेदी
- ☞ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' रचना है — विद्यानिवास मिश्र की
- ☞ आलोचना कृति विजयदेव नारायण साही की है — जायसी
- ☞ खड़ी बोली के विकास में फोर्ट विलियम कॉलेज का विशिष्ट योगदान है, क्योंकि
- (a) अंग्रेजों ने खड़ी बोली के विकास को प्रमुखता दी।
- (b) खड़ी बोली के प्रशिक्षण से विविध साहित्यिक विधाओं में सृजन हुआ।
- (c) खड़ी बोली में साहित्यिक लेखन युग की आवश्यकता थी।
- (a) और (c) सही, (b) गलत है
- ☞ (a) ब्रजभाषा में गीतात्मकता स्वाभाविक रूप से आ जाती है।
- (b) ब्रजभाषा में परुष वर्णों का अभाव है।
- (a) और (b) दोनों सही हैं
- ☞ (a) नयी कविता में नये मनुष्य की प्रतिष्ठा हुई है।
- (b) नयी कविता में व्यक्त मनुष्य का द्वन्द्व अंशतः आयतित है।
- (a) और (b) दोनों सही हैं
- ☞ छायावाद की विशेषताएँ हैं— आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति, साम्राज्यवाद के प्रति विद्रोह, सौन्दर्य के प्रति अत्यधिक आकर्षण तथा छायावाद रहस्यवाद का पर्याय है।
- ☞ गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का सही क्रम है
- गीतावली (1628 संवत्), रामचरित मानस (1631 संवत्), दोहावली (1640 संवत्), विनय पत्रिका (1639 संवत् लगभग),
- ☞ जन्मतिथि की दृष्टि से द्विवेदी युगीन कवियों का सही क्रम है
- श्रीधर पाठक (1859-1928 ई.), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1947 ई.), मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964 ई.), रामनरेश त्रिपाठी (1889-1962 ई.)
- ☞ आधुनिक हिन्दी की कृतियों का प्रकाशन काल की दृष्टि से सही अनुक्रम है — यशोधरा (1932 ई.), कनुप्रिया (1959 ई.), उर्वशी (1961 ई.), आत्मजयी (1965 ई.)
- नोट-यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में कोई भी विकल्प सही नहीं है। हालांकि यूजीसी ने अपने उत्तर-कुंजी में इस प्रश्न के उत्तर का अनुक्रम इस प्रकार माना है—यशोधरा, उर्वशी, कनुप्रिया, आत्मजयी।
- ☞ पाश्चात्य समीक्षकों का जन्म की दृष्टि से सही अनुक्रम है
- अरस्तू (424 ई.पू.-347 ई.पू.), प्लेटो (384 ई.पू.-322 ई.पू.), लॉजइनस (तीसरी शताब्दी), कॉलरिज (1772-1834 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से पत्रिकाओं का सही क्रम है
- कविवचन सुधा (1867 ई.), सरस्वती (1903 ई.), चाँद (1928 ई.), हंस (1930 ई.)
- ☞ उपन्यासों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है
- झूठा सच (1958 ई.), आधा गाँव (1966 ई.), तमस (1973 ई.), सूखा बरगद (1986 ई.)
- ☞ कवियों का सही क्रम है
- चिन्तामणि (1509), केशवदास (1555-1617 ई.), बिहारी (1595-1663 ई.), पद्माकर (1753-1833 ई.)
- ☞ काव्यों का सही अनुक्रम है
- प्रियप्रवास (1914 ई.), झरना (1918 ई.), राम की शक्तिपूजा (1936 ई.), लोकायतन (1964 ई.)
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | | |
|---------------------------|------------------|
| पंक्तियाँ | कवि |
| (a) घुन खाये शहतीरों पर — | नागार्जुन |
| (b) एक बीते के बराबर — | केदारनाथ अग्रवाल |
| (c) किन्तु हम हैं द्वीप — | अज्ञेय |
| (d) भूख से रिरियाती हुई — | धूमिल |

☞ सही सुमेलित हैं—

सम्पादक	पत्रिका
(a) श्यामसुन्दर सेन —	समाचार सुधावर्षण
(b) राजा लक्ष्मण सिंह —	प्रजा हितैषी
(c) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र —	कविवचनसुधा
(d) बदरी नारायण चौधरी —	आनन्द कादम्बिनी
'प्रेमघन'	

☞ सही सुमेलित हैं—

पत्रिका	प्रकाशन वर्ष
(a) सार सुधा निधि —	1879
(b) बंग दूत —	1829
(c) भारत मित्र —	1877
(d) हंस —	1930

☞ सही सुमेलित हैं—

आलोचनात्मक कृति	लेखक
(a) दूसरी परम्परा की खोज —	नामवर सिंह
(b) नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र —	गजानन माधव मुक्तिबोध
(c) हिन्दी साहित्य का आदिकाल —	हजारी प्रसाद द्विवेदी
(d) नया साहित्य नये प्रश्न —	नन्ददुलारे वाजपेयी

☞ सही सुमेलित हैं—

कथन	लेखक
(a) करुणा दुःखात्मक वर्ग में आने वाला मनोविकार है —	रामचन्द्र शुक्ल
(b) मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाएँ ही संस्कृति है। —	हजारीप्रसाद द्विवेदी
(c) छायावाद रथूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। —	डॉ. नगेन्द्र
(d) भक्ति आन्दोलन एक जातीय और जनवादी आन्दोलन है। —	रामविलास शर्मा

☞ सही सुमेलित हैं—

कृतियाँ	विधा
(a) लहरों के राजहंस —	नाटक
(b) आधा गाँव —	उपन्यास
(c) तुम चन्दन हम पानी —	निबन्ध
(d) मुर्दहिया —	आत्मकथा

☞ सही सुमेलित हैं—

उपन्यास	पात्र
(a) गबन —	जालपा
(b) नदी के द्वीप —	भुवन
(c) मैला आँचल —	डॉ. प्रशान्त
(d) बाणभट्ट की आत्मकथा—	निपुणिका

☞ सही सुमेलित हैं—

पात्र	नाटक
(a) सिंहरण —	चन्द्रगुप्त
(b) युयुत्सु —	अन्धायुग
(c) जुनेजा —	आधे-अधूरे
(d) दक्ष —	एक कंठ विषपायी

☞ सही सुमेलित हैं—

आचार्य	सिद्धान्त
(a) भट्ट लोल्लट —	आरोपवाद
(b) शंकु क —	अनुमितिवाद
(c) अभिनव गुप्त —	अभिव्यक्तिवाद
(d) भट्ट नायक —	भुक्तिवाद

☞ सही सुमेलित हैं—

आचार्य	कालखंड
(a) भामह —	छठी सदी
(b) क्षेमेन्द्र —	ग्यारहवीं सदी
(c) विश्वनाथ —	चौदहवीं सदी
(d) पंडितराज जगन्नाथ —	सत्रहवीं सदी

☞ **स्थापना (A) :** किसी व्यक्ति का लोभ उस व्यक्ति से केवल बाह्य सम्पर्क रखकर ही तुष्ट नहीं हो सकता, उसके हृदय का सम्पर्क भी चाहता है।
तर्क (R) : लोभ प्रेम का मूल है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** भरत मुनि के अनुसार, स्थायी भाव ही रस रूप में परिणत होता है।

तर्क (R) : उनके प्रसिद्ध रससूत्र में स्थायी भाव का स्पष्ट उल्लेख है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** "बिनु पग चले सुनै बिनु काना"-असंगति अलंकार का उदाहरण है।

तर्क (R) : असंगति अलंकार में कारण के बिना कार्य हो जाता है।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** भाषा वैज्ञानिकों की दृष्टि में हिन्दी और उर्दू अलग-अलग भाषाएँ हैं।

तर्क (R) : उनका व्याकरण एक ही है।

— (A) गलत, (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** मैथिली, संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा है।

तर्क (R) : इसके शामिल होने से हिन्दी भाषियों की संख्या में वृद्धि हुई है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** "हमारे मत में हिन्दी और उर्दू दो बोली न्यारी-न्यारी हैं।"-यह कथन राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' का है।

तर्क (R) : यह कथन ईस्ट इंडिया कंपनी की भाषा नीति के विरुद्ध है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

दिसम्बर - 2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ☞ दोहा, बरवै, कुंडलिया तथा सवैया में से अपभ्रंश का मुख्य छन्द है —दोहा
- ☞ अवधी, खड़ी बोली, ब्रज तथा छत्तीसगढ़ी में से आगरा का बोली-क्षेत्र है —ब्रज
- ☞ 'पंडित सअल सन्त बकखाण्ड। देहहि बुद्ध बसंत न जाणई' कथन है —सरहपा का
- ☞ 'परमात्मप्रकाश' के रचनाकार हैं —योगीन्द्र
- ☞ 'गोरखबानी' के सम्पादक हैं —पीताम्बर दत्त बड़थवाल
- ☞ 'आल्हाखंड' रचना का दूसरा नाम है —परमाल रासो
- ☞ 'सजन सकारे जाँयगें नैन मरेंगे रोय' उक्ति है —अमीर खुसरो की
- ☞ स्वामी हरिदास, हित हरिवंश, प्रियादास तथा कुम्भनदास में से 'अष्टछाप' के कवि हैं —कुम्भनदास
- ☞ 'हेरी म्हा तो दरद दिवाणी म्हारौं दरद न जाण्यौं कोय' उक्ति है —मीराबाई की
- ☞ 'भाँगि के खैबो मसीत के सोइबो, लैबो को एक न दैबो को दोऊ।' पंक्ति का सम्बन्ध है —तुलसीदास की रचना कवितावली से
- ☞ मुल्ला वजही की रचना है —कुतुब मुश्तरी
- ☞ प्रतापसाहि की रचना नहीं है —नवरस तरंग
- ☞ 'छत्रप्रकाश' प्रबंध काव्य के रचनाकार हैं —लालकवि
- ☞ रहीमदास, गिरिधर कविराय, दीनदयाल गिरि तथा गिरिधरदास में से नीतिकार कवि नहीं है —गिरिधरदास
- ☞ 'फोर्ट विलियम कॉलेज' से सम्बन्ध था —लल्लूलाल, सदल मिश्र का
- ☞ 'गार्सा द तासी' ने 'हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' लिखा है —फ्रांसीसी भाषा में
- ☞ अंग्रेजी सरकार की ओर से अदालत का कामकाज देश की प्रचलित भाषाओं में करने का 'इश्तहारनामा' निकला —1836 सन् में
- ☞ 'लोगन कवित कीबो खेल करि जानो है'-उक्ति है —ठाकुर की
- ☞ तुलसीदास की रचना है —कृष्णगीतावली
- ☞ 'हिन्दू मग पर पाँव न राखेऊँ का जौ बहुतै हिन्दी भाखेऊँ' काव्य पंक्ति है —नूर मुहम्मद की
- ☞ 'कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दरसनी' कहा है —नाभादास ने
- ☞ कबीरदास, रैदास, धर्मदास तथा दादूदयाल में से सबसे पहले के कवि हैं —रैदास (1377 ई.)
- ☞ केशवदास, रहीमदास, घनानन्द तथा पद्माकर में से सबसे बाद के कवि हैं —पद्माकर (1753-1833 ई.)
- ☞ भारत जननी, भारत दुर्दशा, भारत सौभाग्य तथा अन्धेर नगरी में से भारतेन्दु का नाटक नहीं है —भारत सौभाग्य
- ☞ बालबोधिनी, हिन्दी प्रदीप, सरस्वती तथा नागरी प्रचारिणी में से मासिक पत्रिका नहीं थी —नागरी प्रचारिणी
- ☞ काशीनाथ सिंह का उपन्यास है —रेहन पर रघू
- ☞ साहित्यकारों का जन्म शताब्दी वर्ष 2011 था —नागार्जुन (1911-1998 ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), केदारनाथ अग्रवाल (1911-2000 ई.), शमशेर (1911-1993 ई.)
- ☞ 'दृग उरझत दूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत' में अलंकार है —असंगति
- ☞ 'दस द्वारे का पिंजरा' उपन्यास के रचनाकार हैं —अनामिका
- ☞ 'कथासतीसर' की लेखिका हैं —चन्द्रकांता
- ☞ 'रससूत्र' के व्याख्याता हैं —लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, अभिनव गुप्त
- ☞ हिन्दी दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' के सम्पादक हैं —श्यामसुन्दर सेन
- ☞ 'द न्यू क्रिटिसिज्म' पुस्तक के लेखक हैं —जॉन क्रो रैसम
- ☞ 'राइटिंग एंड डिफरेंस' पुस्तक है —जाक देरिदा की
- ☞ "साधारणीकरण" आलम्बनत्व धर्म का होता है" कथन है —आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का
- ☞ 'सूरदान' के लेखक हैं —रूपनारायण सोनकर
- ☞ 'अन्न हैं मेरे शब्द' कृति है —एकान्त श्रीवास्तव की
- ☞ 'अनारो' उपन्यास है —मंजुल भगत का
- ☞ 'व्योमकेश दरवेश' रचना है —जीवनी विधा की
- ☞ 'सुचरिता' का सम्बन्ध है —बाणभट्ट की आत्मकथा उपन्यास से
- ☞ रचनाकाल की दृष्टि से रचनाओं का सही अनुक्रम है —कीर्तिपताका, रामचरितमानस, रामचन्द्रिका, कृष्णायन
- ☞ रचनाकार के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है —साकेत (1931 ई.), कामायनी (1936 ई.), कुरुक्षेत्र (1946 ई.), अन्धायुग (1954 ई.)

- रचनाकाल की दृष्टि से ग्रन्थों का सही अनुक्रम है
—मृगावती, ज्ञानदीप, इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी
- जीवनकाल की दृष्टि से निबन्धकारों का सही अनुक्रम है
—महावीर प्रसाद द्विवेदी (1864-1938 ई.), रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979 ई.), विद्यानिवास मिश्र (1928-2005 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर निबन्ध संग्रहों का सही अनुक्रम है
—शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), अशोक के फूल (1948 ई.), अर्द्धनारीश्वर (1952 ई.), आत्मनेपद (1960 ई.)
- रचनाकाल की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—परीक्षा गुरु (1885 ई.), निरसहाय हिन्दू (1889 ई.), ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899 ई.), देहाती दुनिया (1925 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—बाणभट्ट की आत्मकथा (1946 ई.), चारुचन्द्र लेख (1963 ई.), पुनर्नवा (1973 ई.), अनामदास का पोथा (1976 ई.)
- रचनाकाल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है
—ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई.), दुलाईवाली (1907 ई.), पंच परमेश्वर (1916 ई.), दोपहर का भोजन (1956 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर नाटकों का सही अनुक्रम है
—चन्द्रावली (1876 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.), झोंसी की रानी (1946 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर प्रसाद के नाटकों का सही अनुक्रम है
—राज्यश्री (1915 ई.), अजातशत्रु (1922 ई.), चन्द्रगुप्त (1931 ई.), ध्रुवस्वामिनी (1933 ई.)
- रचनाकाल की दृष्टि से आत्मकथाओं का सही अनुक्रम है
—मेरी जीवन यात्रा (1956 ई.), क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.), टुकड़े-टुकड़े दास्तान (1986 ई.), अर्धकथा (1988 ई.)
- नोट-मेरी जीवन यात्रा (1946) राहुल सांकृत्यायन तथा मेरी जीवन यात्रा (1956) जानकी देवी बजाज की रचना है। ये रचनाएँ आत्मकथा विधा की हैं। यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का कोई विकल्प सही नहीं है। अतः यूजीसी ने इस प्रश्न के लिए समान अंक प्रदान किये हैं।
- रचनाकाल के आधार पर कृतियों का सही अनुक्रम है
—भारत भारती (1912 ई.), रस कलश (1931 ई.), उर्वशी (1953-1961 ई.), शम्बूक (1977 ई.)
- नोट—'उर्वशी' (1909) रचना जयशंकर प्रसाद की भी है।

- रचनाकाल की दृष्टि से निराला की कृतियों का सही अनुक्रम है
—परिमल (1929 ई.), तुलसीदास (1938 ई.), नये पत्ते (1946 ई.), आराधना (1953 ई.)
- रचनाकाल के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है
—राग दरबारी (1968 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), महामोक्ष (1979 ई.), झीनी झीनी बीनी चदरिया (1986 ई.)
- हिन्दी भाषा के विकास का सही क्रम है
—संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश
- स्थापना (A) : साहित्य सामूहिक अवचेतन का निषेध है।
तर्क (R) : क्योंकि साहित्य में सिर्फ व्यक्ति मन की अभिव्यक्ति होती है।
—(A) और (R) दोनों गलत हैं
- स्थापना (A) : विषमता और दुःख-सुख का द्वन्द्व विकास का मूलधार है।
तर्क (R) : क्योंकि समता से विकास असंभव है।
—(A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : कला सामाजिक अनुपयोगिता की अनुभूति के विरुद्ध अपने को प्रमाणित करने का प्रयत्न है।
तर्क (R) : क्योंकि कलाकार सामाजिक अभावों के खिलाफ संघर्ष करता है।
—(A) और (R) दोनों गलत हैं
- स्थापना (A) : सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं, मन के भीतर की वस्तु है।
तर्क (R) : कारण कि सौन्दर्य की सत्ता मन के बाहर नहीं होती है।
—(A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : नारीवाद का एक उद्देश्य पुरुष-सत्ता का निषेध है।
तर्क (R) : क्योंकि नारीवाद का एकमात्र उद्देश्य यही है।
—(A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : प्रेम न बाड़ी ऊपजै प्रेम न हाट बिकाया
तर्क (R) : क्योंकि प्रेम दो कौड़ी का होता है।
—(A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : स्थायी साहित्य जीवन की चिरन्तन समस्याओं का समाधान है।
तर्क (R) : क्योंकि स्थायी साहित्य का लोक जीवन की तात्कालिक समस्याओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता।
—(A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : लोकहृदय में हृदय के लीन होने का नाम रसदशा है।

तर्क (R) : इसलिए साधारणीकरण के लिए कवि का लोकधर्मी होना आवश्यक नहीं है।

—(A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : भारतेन्दु युग आधुनिकता का प्रवेश द्वार है।

तर्क (R) : क्योंकि भारतेन्दु युगीन कविता में मध्यकालीन भावबोध का नितांत अभाव है।

—(A) सही और (R) गलत है

स्थापना (A) : रस ब्रह्मास्वाद सहोदर है।

तर्क (R) : क्योंकि रस में लौकिक विषयों का सर्वथा तिरोभाव होता है।

—(A) सही और (R) गलत है

सही सुमेलित हैं—

कवि

- | | | |
|-------------------------|---|-------------------|
| (a) बालकृष्ण शर्मा नवीन | — | हम विषपायी जनम के |
| (b) राम नरेश त्रिपाठी | — | पथिक |
| (c) माखनलाल चतुर्वेदी | — | हिमतरंगिणी |
| (d) सोहनलाल द्विवेदी | — | भैरवी |

सही सुमेलित हैं—

साहित्यकार

- | | | |
|---------------------------|---|----------------|
| (a) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | — | कविवचनसुधा |
| (b) अंबिकादत्त व्यास | — | पीयूष प्रवाह |
| (c) बदरीनारायण चौधरी | — | आनंद कादम्बिनी |
| 'प्रेमघन' | | |

- | | | |
|-------------------|---|---------------|
| (d) बालकृष्ण भट्ट | — | हिन्दी प्रदीप |
|-------------------|---|---------------|

सही सुमेलित हैं—

उपन्यासकार

- | | | |
|--------------------|---|-----------------|
| (a) भीष्म साहनी | — | तमस |
| (b) श्रीलाल शुक्ल | — | राग दरबारी |
| (c) राही मासूम रजा | — | कटरा बी आरजू |
| (d) शिवप्रसाद सिंह | — | अलग-अलग वैतरिणी |

सही सुमेलित हैं—

आलोचना ग्रंथ

- | | | |
|------------------------------------|---|-----------------------|
| (a) रस मीमांसा | — | रामचन्द्र शुक्ल |
| (b) नाथ सम्प्रदाय | — | हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| (c) आस्था और सौन्दर्य | — | रामविलास शर्मा |
| (d) हिन्दी सहित्य : बीसवीं शताब्दी | — | नन्ददुलारे वाजपेयी |

आलोचक

सही सुमेलित हैं—

पात्र

- | | | |
|---------------|---|--------------------|
| (a) गोबर | — | गोदान |
| (b) भुवन | — | नदी के द्वीप |
| (c) महामाया | — | बाणभट्ट की आत्मकथा |
| (d) कुमारगिरि | — | चित्रलेखा |

सही सुमेलित हैं—

पात्र

- | | | |
|---------------|---|---------------|
| (a) प्रियंवदा | — | असाध्यवीणा |
| (b) कमला | — | प्रलय की छाया |
| (c) औशीनरी | — | उर्वशी |
| (d) नचिकेता | — | आत्मजयी |

काव्य

सही सुमेलित हैं—

सिद्धांत

- | | | |
|-------------------|---|--------------|
| (a) अभिव्यंजनावाद | — | क्रोचे |
| (b) अभिजात्यवाद | — | टी.एस. इलियट |
| (c) अस्तित्ववाद | — | सार्त्र |
| (d) विखण्डनवाद | — | जाक देरिदा |

सही सुमेलित हैं—

कहानीकार

- | | | |
|---------------------|---|---------------|
| (a) फणीश्वरनाथ रेणु | — | ठेस |
| (b) अमरकांत | — | दोपहर का भोजन |
| (c) उषा प्रियंवदा | — | वापसी |
| (d) यशपाल | — | परदा |

सही सुमेलित हैं—

निबन्ध

- | | | |
|----------------------------------|---|----------------------|
| (a) मजदूरी और प्रेम | — | अध्यापक पूर्ण सिंह |
| (b) कुटज | — | हजारीप्रसाद द्विवेदी |
| (c) मेरे राम का मुकुट भीग रहा है | — | विद्यानिवास मिश्र |
| (d) लोभ और प्रीति | — | रामचन्द्र शुक्ल |

सही सुमेलित हैं—

उक्ति

- | | | |
|----------------------------------------------------|---|-----------------------|
| (a) मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र समझता हूँ। | — | प्रेमचन्द |
| (b) अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है। | — | जयशंकर प्रसाद |
| (c) करुणा संत का सौदा नहीं है। | — | रामचन्द्र शुक्ल |
| (d) मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है। | — | हजारी प्रसाद द्विवेदी |

लेखक

जून - 2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ 'पउमचरित' रचना है — स्वयंभू की
- ☞ गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' की भाषा है — ब्रजभाषा
- ☞ 'खड़ी बोली' के लिए सुनीतिकुमार चटर्जी ने प्रयोग किया है — जनपदीय हिन्दुस्तानी शब्द का
- ☞ सूफी प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा में 'आराध्य' को प्रायः देखा गया है — प्रेमिका के रूप में
- ☞ छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है — डॉ. नगेन्द्र ने
- ☞ 'मिश्र बन्धुओं' में नहीं हैं — कृष्ण बिहारी मिश्र
- ☞ 'रस गंगाधर' के रचयिता हैं — पंडितराज जगन्नाथ
- ☞ 'तार सप्तक' के कवि नहीं हैं — शमशेर बहादुर सिंह
- ☞ 'शिवपालगंज' सम्बन्धित है — रागदरबारी उपन्यास से
- ☞ भरत मुनि के अनुसार काव्य में गुण होते हैं — दस
- ☞ हिन्दी वर्णमाला में 'अं' और 'अः' हैं — अयोगवाह
- ☞ 'अन्धायुग' नाट्यविधा है — गीतिनाट्य का
- ☞ "दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।"
उपर्युक्त पंक्तियाँ उद्धृत हैं— रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता से
- ☞ 'देवरानी जेतानी की कहानी' को हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना है — गोपाल राय ने
- ☞ 'समालोचनादर्श' के शीर्षक से 'एसे ऑन क्रिटिसिज्म' का अनुवाद किया — जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने
- ☞ 'शिखर से सागर तक' जीवनी है — अज्ञेय की
- ☞ (a) हिन्दी में भक्ति धारा का उदय बाहरी आक्रमण की प्रतिक्रिया है।
(b) यह भारतीय साधना परम्परा का स्वतः स्फूर्त विकास है।
— (a) और (b) दोनों आंशिक सही हैं
- ☞ (a) 'विभावन व्यापार' रस प्रक्रिया की सुदृढ़ भूमिका है।
(b) विभाव ही रस का हेतु है।
— (a) सही और (b) आंशिक सही है
- ☞ (a) 'छायावाद' और 'रहस्यवाद' में तात्त्विक भेद नहीं है।
(b) 'छायावाद' में अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता और 'रहस्यवाद' में अज्ञात के प्रति जिज्ञासा है।
— (a) आंशिक सही और (b) सही है
- ☞ (a) 'नयी कविता' में निरूपित मनुष्य मात्र द्वन्द्वग्रस्त है।
(b) 'नयी कविता' मात्र व्यक्ति-चेतना की कविता नहीं है।
— (a) आंशिक सही और (b) सही है
- ☞ इतिहास ग्रन्थों का कालक्रमानुसार सही क्रम है — इस्त्वार द ल लितरेयूर ऐंडुई ऐ ऐंडुस्तानी-शिवसिंह सरोज-मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिन्दुस्तान-मिश्रबन्धु विनोद
- ☞ नवजागरण कालीन सुधारवादी संस्थाओं की शुरुआत का सही क्रम है — ब्रह्म समाज-प्रार्थना समाज-आर्य समाज-रामकृष्ण मिशन
- ☞ छायावादी काव्यधारा के प्रमुख स्तम्भों का जन्मतिथि के आधार पर सही क्रम है — जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.), सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896-1961 ई.), सुमित्रानन्दन पंत (1900-1977 ई.), महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.)
- ☞ प्रकाशन की दृष्टि से निम्न काव्य कृतियों का सही क्रम है — युगवाणी, कुरुरमुत्ता, हरी घास पर क्षण भर, गीत फरोश
- ☞ निराला के उपन्यासों का प्रकाशन की दृष्टि से सही अनुक्रम है — अप्सरा (1931 ई.), अलका (1933 ई.), निरूपमा (1936 ई.), प्रभावती (1936 ई.)
- ☞ आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख आन्दोलनों का सही अनुक्रम है — प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, अकविता
- ☞ भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख काव्य शास्त्रियों का सही क्रम है — भरतमुनि, आनन्दवर्धन, विश्वनाथ, जगन्नाथ
- ☞ प्रकाशन वर्ष के आधार पर उपन्यासों का सही अनुक्रम है — रुकोणी नहीं राधिका (1967 ई.), आपका बंटी (1971 ई.), चाक (1997 ई.), आवाँ (1999 ई.)
- ☞ प्रेमाख्यान काव्य परम्परा की प्रमुख रचनाओं का सही क्रम है — चन्दायन (1379 ई.), मृगावती (1503 ई.), पद्मावत (1540 ई.), मधुमालती (1545 ई.)
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | रचनाकार | रचनाएँ |
|-------------------------|------------------------------------|
| (a) राजा शिव प्रसाद | — भूगोल हस्तात्मलक |
| 'सितारे हिन्द' | — फोर्ट विलियम कॉलेज |
| (b) लक्ष्मीसागर वाष्णेय | — हिन्दी नवरत्न |
| (c) मिश्रबन्धु | — भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश |
| (d) रामविलास शर्मा | — सही सुमेलित हैं— |
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | रचनाकार | रचनाएँ |
|------------------------|------------------------|
| (a) ज्योतिरीश्वर ठाकुर | — वर्ण रत्नाकर |
| (b) दामोदर भट्ट | — उक्ति व्यक्ति प्रकरण |
| (c) नरपति नाल्ह | — बीसलदेव रासो |
| (d) रोड | — राउलवेल |

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि	कृतियाँ
(a) सुमित्रानन्दन पंत	— ग्राम्या
(b) घनानन्द	— इश्कलता
(c) केशवदास	— कविप्रिया
(d) कुतुबन	— मृगावती

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि	कृतियाँ
(a) रघुवीर सहाय	— अनामिका
(b) श्रीकान्त वर्मा	— माया दर्पण
(c) दिनकर	— परशुराम की प्रतीक्षा
(d) केदारनाथ अग्रवाल	— फूल नहीं रंग बोलते हैं

☞ सही सुमेलित हैं—

कवि	कृतियाँ
(a) नागार्जुन	— युगधारा
(b) नरेश मेहता	— संशय की एक रात
(c) भवानीप्रसाद मिश्र	— सतपुड़ा के जंगल
(d) केदारनाथ सिंह	— अकाल में सारस

☞ सही सुमेलित हैं—

कृतियाँ	लेखक
(a) साहित्यालोचन	— श्यामसुन्दर दास
(b) रस मीमांसा	— रामचन्द्र शुक्ल
(c) ठेले पर हिमालय	— धर्मवीर भारती
(d) तमाल के झरोखे से	— विद्यानिवास मिश्र

☞ सही सुमेलित हैं—

कथाकार	कृतियाँ
(a) कृष्णा सोबती	— समय सरगम
(b) श्रीलाल शुक्ल	— विश्रामपुर का सन्त
(c) राही मासूम रज़ा	— टोपी शुक्ला
(d) कमलेश्वर	— कितने पाकिस्तान

☞ सही सुमेलित हैं—

कहानीकार	कहानी
(a) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	— बुद्धू का काँटा
(b) रामचन्द्र शुक्ल	— ग्यारह वर्ष का समय
(c) यशपाल	— परदा
(d) अमरकान्त	— दोपहर का भोजन

☞ सही सुमेलित हैं—

कहानीकार	कहानी
(a) निर्मल वर्मा	— लन्दन की एक रात
(b) मार्कण्डेय	— हंसा जाइ अकेला
(c) शिवमूर्ति	— कसाईबाड़ा
(d) शेखर जोशी	— कोसी का घटवार

☞ सही सुमेलित हैं—

पंक्तियाँ	कवि
(a) ज्यों-ज्यों निहारिये नेरे हवै नैननि	— मतिराम
(b) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी	— भूषण
(c) नैन नचाई कन्हौ मुसकाइ	— पद्माकर
(d) रावरे रूप की रीति अनूप	— घनानन्द

☞ **स्थापना (A) :** शासन की पहुँच प्रवृत्ति और निवृत्ति की बाहरी व्यवस्था तक ही होती है।

तर्क (R) : भीतरी या सच्ची प्रवृत्ति-निवृत्ति को जागृत रखने वाली शक्ति शासन में नहीं होती।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** कवि-वाणी के प्रसार से हम संसार के सुख-दुःख आनन्द-व्लेश आदि का शुद्ध स्वार्थमुक्त रूप में अनुभव करते हैं।

तर्क (R) : इस प्रकार के अनुभव के अभ्यास से हृदय का बन्धन नहीं खुलता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **स्थापना (A) :** भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रहता।

तर्क (R) : समर्पण भक्ति का मूल है।

— (A) सही और (R) सही है

☞ **स्थापना (A) :** प्रिय के वियोग से जो दुःख होता है, उसमें कभी-कभी दया या करुणा का भी कुछ अंश मिला रहता है।

तर्क (R) : प्रिय के वियोग पर उत्पन्न करुणा का विषय प्रिय के सुख का निश्चय है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **स्थापना (A) :** दुष्कर्म के अनेक अप्रिय फलों में से एक अपमान है।

तर्क (R) : दुष्कर्म से उत्पन्न अपमान के प्रति स्वयं का चरित्रवान सिद्ध करना सदाचरण है।

— (A) सही और (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** प्रेम का समाजीकरण होता है, तो उसे भक्ति कहते हैं।

तर्क (R) : प्रेम सामाजिक भाव नहीं है।

— (A) सही और (R) गलत है

जून - 2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र

- ब्रजभाषा का विकास हुआ — शौरसैनी से
- अपभ्रंश की उत्तरकालीन अवस्था का नाम है — अवहट्ट
- अपभ्रंश में कुल स्वर थे — आठ
- 'मगही' बोली है — बिहार की
- भाषाओं के पारिवारिक वर्गीकरण का आधार है — इतिहास
- पुष्पदंत कवि थे — दसवीं शताब्दी के
- 'दोहाकोश' रचना है — सरहपा की
- 'काव्य की रीति सिखी सुकबीन सों देखी सुनी बहुलोक की बातें' काव्योक्ति हैं — भिखारीदास की
- "हरि रस पीया जानिए, जे कबहूँ न जाय खुमार।
मैमंता घूमत फिरै, नाहीं तन की सार॥" - इन काव्य पंक्तियों के कवि हैं — कबीरदास
- देवकवि की रचना है — भावविलास
- 'साहित्य लहरी' के रचनाकार हैं — सूरदास
- अष्टछाप की स्थापना की — विठ्ठलनाथ ने
- सखी-सम्प्रदाय के संस्थापक हैं — स्वामी हरिदास
- गोस्वामी तुलसीदास की अन्तिम रचना है — हनुमानबाहुक
- मृगावती रचना है — कुतुबन का
- "श्रुति सम्मत हरिभक्ति पथ संजुत विरति विवेक-रचना है" — तुलसीदास के रामचरितमानस से
- शब्दशक्ति के विषय में कथन है "अभिधा उत्तम काव्य है, मध्य लक्षणा हीन।
अधम व्यंजना रस विरस, उलटी कहत नवीन॥" — देवकवि का
- रसरज, रसविलास, ललित लताम तथा छंदसार में से मतिराम का ग्रन्थ नहीं है — छंदसार
- रीतिमुक्त कवि नहीं हैं — पद्माकर
- 'चंडी चरित्र' रचना है — गुरु गोविन्द सिंह की
- "ज्यों-ज्यों बसे जात दूरि-दूरि प्रिय प्राण मूरि।
त्यों-त्यों धसे जात मन मुकुर हमारे मैं॥" — जगन्नाथदास रत्नाकर
- भाषा योग वाशिष्ट, भाषा पद्म पुराण, नासिकेतोपाख्यान, दृष्टान्त सागर में से गद्य कृति का निर्माण फोर्ट विलियम कॉलेज में हुआ था — नासिकेतोपाख्यान का
- 'निःसहाय हिन्दू' उपन्यास के लेखक हैं — राधाकृष्ण दास
- रणधीर प्रेममोहिनी, महारानी पद्मावती, तप्ता-संवरण तथा संयोगिता स्वयंवर में से श्रीनिवास दास का नाटक नहीं है — महारानी पद्मावती
- राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम' का अनुवाद किया — 1863 ई. में
- भारतेन्दु का नाटक 'प्रबोध चन्द्रोदय' की प्रतीकात्मक शैली से प्रभावित है — भारत दुर्दशा
- बालकृष्ण भट्ट सम्पादन कर्म से जुड़े थे — हिन्दी प्रदीप के
- प्रियप्रवास, अग्निनीक, भ्रमरदूत तथा अंधायुग में से कृष्णकथा पर आधारित नहीं है — अग्निनीक
- 'शिवशंभू के चिट्ठे' के निबंधकार हैं — बालमुकुन्द गुप्त
- "जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छाई,
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।" — जयशंकर प्रसाद
- उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों के कवि हैं
- "धिक्! धाए तुम यों अनाहूत,
धो दिया श्रेष्ठ कुल - धर्म धूत,
राम के नहीं, काम के सूत कहलाए।" — तुलसीदास से
- उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों का सम्बन्ध है — तुलसीदास से
- 'कविता दो शब्दों के बीच की नीरवता में रहती है।' काव्य-भाषा के सम्बन्ध में उपर्युक्त मत है — अज्ञेय का
- 'अनन्तदेवी' नाटक की पात्र है — स्कन्दगुप्त
- मिलन, पथिक, नहुष तथा स्वप्न में से रामनरेश त्रिपाठी का खण्डकाव्य नहीं है — नहुष
- 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास है — प्रदीप सौरभ का
- 'पिंजरे में मैना' आत्मकथा है — चन्द्रकिरण सोनेरिक्सा की
- 'मंगल का विधान करने वाले दो भाव हैं।' कथन है — रामचन्द्र शुक्ल का
- 'आलोचना का विषय कवि नहीं, कविता है।' कथन है — टी.एस. इलियट का

“सत्त्वोद्रेकाद खण्ड स्वप्रकाशानन्द चिन्मयः।

वेद्यान्तरस्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वादसहोदरः।

लोकोत्तर चमत्कार प्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।

स्वाकारवद भिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।”

रस के विषय में उपर्युक्त स्थापना की है — **आचार्य विश्वनाथ ने**

आठवाँ सर्ग, कन्धे पर बैठा था शाप, शकुन्तला की अँगूठी तथा आषाढ़ का एक दिन में से कालिदास के चरित्र से सम्बन्धित नाटक नहीं है

— **शकुन्तला की अँगूठी**

साहित्यिकवादों का सही अनुक्रम है

— **छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद**

जीवनकाल की दृष्टि से कवियों का सही अनुक्रम है

— **सूरदास, केशवदास, जगन्नाथदास रत्नाकर, सोहनलाल द्विवेदी**

रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है

— **कुवलयमालाकथा, राउलवेल, उक्तिव्यक्ति प्रकरण, वर्णरत्नाकर**

रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है

— **प्रियप्रवास, साकेत, तुलसीदास, कृष्णायन**

रचनाकाल के आधार पर दिनकर की कृतियों का सही अनुक्रम है

— **मिट्टी की ओर, संस्कृति के चार अध्याय, वट पीपल, दिनकर की डायरी**

रचनाकाल की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— **विराटा की पत्निनी, चित्रलेखा, बूँद और समुद्र, सुहाग के नूपुर**

रचनाकाल की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों का सही अनुक्रम है

— **सेवासदन, रंगभूमि, गबन, गोदान**

रचनाकाल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

— **बड़े भाई साहब, वापसी, डेफोडिल जल रहे हैं, पाल गोमरा का स्कूटर**

रचनाकाल की दृष्टि से सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का सही अनुक्रम है

— **द्रौपदी, आठवाँ सर्ग, छोटे सैयद बड़े सैयद, शकुन्तला की अँगूठी**

रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है

— **पल्लव, कामायनी, दीपशिखा, कुरुरमुता**

रचनाकाल के आधार पर अज्ञेय की रचनाओं का सही अनुक्रम है

— **भग्नदूत, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आँगन के पार द्वार**

जीवनकाल की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है

— **श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, अज्ञेय**

रचनाकाल की दृष्टि से कविताओं का सही अनुक्रम है

— **सरोज-स्मृति, असाध्यवीणा, अँधेरे में, पटकथा**

रचनाकाल की दृष्टि से कृतियों का सही अनुक्रम है

— **युग की गंगा, सतरंगे पंखों वाली, फूल नहीं रंग बोलते हैं, मिट्टी की बारात**

ब्राह्मी लिपि के विकास का अनुक्रम है

— **ब्राह्मी लिपि, गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, देवनागरी लिपि**

स्थापना (A) : बिम्ब में अर्थ की सम्भाव्यता निहित होती है।

तर्क (R) : क्योंकि अर्थ हमेशा निश्चित होता है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है।

तर्क (R) : क्योंकि कविता में कवि हृदय लोक-सामान्य की भूमि पर पहुँच जाता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : प्रेमचन्द यथार्थवाद से आदर्शवाद को श्रेष्ठ समझते थे।

तर्क (R) : क्योंकि आदर्शवाद उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण जीवन-दृष्टि है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : कलामात्र के लिए वही साहित्य हो सकता है, जो विचारशून्य हो।

तर्क (R) : क्योंकि कला विचारों से पलायन है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

स्थापना (A) : कहानी छोटे मुँह बड़ी बात करती है।

तर्क (R) : क्योंकि कहानी लघुजीवन खण्ड के माध्यम से एक सम्पूर्ण जीवनबोध या सत्य को प्रकाशित करती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : नाटक केवल चाक्षुष यज्ञ है।

तर्क (R) : क्योंकि आधुनिक मान्यता है कि नाटक में दृश्य की तुलना में श्रव्य तत्व कम महत्वपूर्ण होता है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

स्थापना (A) : साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।

तर्क (R) : क्योंकि साहित्य का लक्ष्य केवल मनुष्य का चरित्र निर्माण है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : काव्य आत्मा की संकल्पात्मक अनुभूति है जिसका सम्बन्ध विश्लेषण, विकल्प या विज्ञान से नहीं है।

तर्क (R) : क्योंकि विज्ञान का सम्बन्ध संवेदना से नहीं होता।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : संस्कृति के विकास के लिए मानसिक स्वतंत्रता अनिवार्य है।

तर्क (R) : क्योंकि संस्कृति एक मानसिक व्यापार है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : स्त्री पैदा नहीं होती बनाई जाती है।

तर्क (R) : क्योंकि समाज उसे जन्म से वही संस्कार प्रदान करता है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

निम्नलिखित पंक्तियों को उनके कवियों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|-----------------------------|---|--------------------|
| (a) शलभ मैं शापमय वर हूँ | — | महादेवी वर्मा |
| (b) दुःख ही जीवन की कथा रही | — | निराला |
| (c) वियोगी होगा पहला कवि | — | सुमित्रानन्दन पन्त |
| (d) जो बीत गयी सो बात गयी | — | बच्चन |

निम्नलिखित पात्रों का उनके नाटकों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|---------------|---|-----------------------------------------------|
| (a) मल्लिका | — | आषाढ़ का एक दिन |
| (b) देवसेना | — | स्कन्दगुप्त |
| (c) शीलवती | — | सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक |
| (d) शर्मिष्ठा | — | देहान्तर |

निम्नलिखित आंचलिक उपन्यासों का उनके लेखकों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|---------------------|---|-----------------|
| (a) रतिनाथ की चाची | — | नागार्जुन |
| (b) परती परिकथा | — | फणीश्वरनाथ रेणु |
| (c) कब तक पुकारूँ | — | रांगेय राघव |
| (d) पानी के प्राचीर | — | रामदरश मिश्र |

निम्नलिखित कवियों के साथ उनकी कृतियाँ सुमेलित हैं-

- | | | |
|---------------|---|----------------|
| (a) चिन्तामणि | — | कवि कुलकल्पतरु |
| (b) मतिराम | — | वृत्त कौमुदी |

(c) भूषण — छत्रसाल दशक

(d) बोधा — विरह वारीश

निम्नलिखित आचार्यों को उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|---------------------|---|-----------------|
| (a) वल्लभाचार्य | — | शुद्धद्वैतवाद |
| (b) निम्बार्काचार्य | — | द्वैतद्वैतवाद |
| (c) रामानुजाचार्य | — | विशिष्टद्वैतवाद |
| (d) मध्वाचार्य | — | द्वैतवाद |

निम्नलिखित कृतियों का उनके कवियों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|--------------|---|-------------|
| (a) चंदायन | — | मुल्ला दाउद |
| (b) मृगावती | — | कुतुबन |
| (c) अखरावट | — | जायसी |
| (d) मधुमालती | — | मंझन |

निम्नलिखित कवियों का उनकी कृतियों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|------------------|---|------------|
| (a) स्वयंभू | — | पउम चरित |
| (b) पुष्पदंत | — | महापुराण |
| (c) अब्दुर्रहमान | — | संदे शरासक |
| (d) शबरपा | — | चर्यपद |

भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित सिद्धान्तों का उनके प्रतिपादकों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|------------------------|---|--------|
| (a) धातु सिद्धान्त | — | हेज |
| (b) यो हे हो सिद्धान्त | — | न्वायर |
| (c) इंगित सिद्धान्त | — | राये |
| (d) सम्पर्क सिद्धान्त | — | रेवेज |

निम्नलिखित आचार्यों का उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|-----------------|---|---------------|
| (a) भट्ट लोल्लट | — | उत्पत्तिवाद |
| (b) शंकुक | — | अनुमितिवाद |
| (c) भट्टनायक | — | भुक्तिवाद |
| (d) अभिनव गुप्त | — | अभिव्यक्तिवाद |

निम्नलिखित पत्रिकाओं का उनके सम्पादकों के साथ सुमेलित हैं-

- | | | |
|----------------|---|---------------------|
| (a) प्रतीक | — | अज्ञेय |
| (b) विशाल भारत | — | बनारसीदास चतुर्वेदी |
| (c) कर्मवीर | — | माखनलाल चतुर्वेदी |
| (d) चाँद | — | महादेवी वर्मा |

दिसम्बर - 2011 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ☞ राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी का प्रथम कवि माना है —सरहपाद को
- ☞ ब्रजभाषा, बुन्देली, खड़ीबोली तथा अवधी में से पश्चिमी हिन्दी की बोली नहीं है —अवधी
- ☞ बोडो, मैथिली, भोजपुरी तथा डोगरी में से संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं है —भोजपुरी
- ☞ बुन्देली, भोजपुरी, मगही तथा मैथिली में से बिहारी उपभाषा वर्ग के अन्तर्गत नहीं आती है —बुन्देली
- ☞ मलूकदास, सूरदास, परमानन्ददास तथा कुम्भनदास में से अष्टछाप के कवि नहीं हैं —मलूकदास
- ☞ अलंकार प्रकाश, रसराज, कवि कुलकल्पतरु तथा काव्य निर्णय में से चिन्तामणि की रचना है —कवि कुलकल्पतरु
- ☞ बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', राधाकृष्णदास, जसवन्त सिंह तथा गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' में से द्विवेदी युग के कवि हैं —गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'
- ☞ केदारनाथ अग्रवाल, भवानीप्रसाद मिश्र, त्रिलोचन, शिवमंगल सिंह, 'सुमन' में प्रगतिवादी कवि नहीं हैं —भवानीप्रसाद मिश्र
- ☞ 'पहरे में सन्नाटा बुनता हूँ' पंक्ति है —अज्ञेय की
- ☞ काठ की घंटियाँ, कुआनो नदी, आत्महत्या के विरुद्ध तथा लिपटा रजाई में से सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की रचना नहीं है —आत्महत्या के विरुद्ध
- ☞ नरेन्द्र मोहिनी, भाग्यवती, चन्द्रकान्ता, कुसुमलता में से देवकीनन्दन खत्री का उपन्यास नहीं है —भाग्यवती
- ☞ मारकण्डेय, विवेकी राय, शिवप्रसाद सिंह एवं निर्मल वर्मा में से ग्रामीण चेतना कहानीकार नहीं हैं —निर्मल वर्मा
- ☞ 'इन्दु' पत्रिका के सम्पादक का नाम है —अम्बिकाप्रसाद गुप्त
- ☞ 'आवारा मसीहा' रचना आधारित है —शरच्चन्द्र के जीवन पर
- ☞ अग्निनीक, परशुराम की प्रतीक्षा, अंधायुग तथा एक कंट विषपायी में से नाट्यकाव्य नहीं है —परशुराम की प्रतीक्षा
- ☞ अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह तथा वृत्त और विकास में से हजारी प्रसाद द्विवेदी का ग्रन्थ नहीं है —वृत्त और विकास
- ☞ 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ' नामक ग्रन्थ के लेखक का नाम है —रामविलास शर्मा
- ☞ 'रसगंगाधर' ग्रन्थ है —पंडितराज जगन्नाथ का
- ☞ 'रससूत्र' के व्याख्याता नहीं हैं —वामन
- ☞ 'द प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म' ग्रन्थ है —आई.ए.रिचर्ड्स की
- ☞ रचनाओं का सही अनुक्रम है—प्रियप्रवास (1914 ई.), साकेत, (1931 ई.), कामायनी, (1933 ई.), कुरुक्षेत्र, (1946 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से हिन्दी पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है —आनन्द कादम्बिनी (1881 ई.), ब्राह्मण (1883 ई.), भारतोदय (1885 ई.), हरिश्चन्द्र मैगजीन (1873 ई.)
- ☞ रचनाकारों का सही अनुक्रम है —इलाचन्द्र जोशी, (1903-1982 ई.), उपेन्द्रनाथ अशक, (1910-1996 ई.), मोहन राकेश, (1925-1972 ई.), नरेन्द्र कोहली (1940 ई.)
- ☞ रामचरितमानस के काण्डों का सही अनुक्रम है —बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड
- ☞ कवियों का सही अनुक्रम है —विद्यापति (1352-1448 ई.), रसखान (1548-1628 ई.), केशवदास (1555-1617 ई.), द्विजदेव (1830-1871 ई.)
- ☞ नाटकों का सही अनुक्रम है — भारत दुर्दशा, (1889 ई.), स्कन्दगुप्त (1928 ई.), कबिरा खड़ा बाजार में (1981 ई.), कहै कबीर सुनो भाई साधो (1987 ई.)
- ☞ उपन्यासों का सही अनुक्रम है —झूठा सच (1958 ई.), आधा गँव (1966 ई.), धरती धन न अपना (1972 ई.), धार (1997 ई.)
- ☞ प्रकाशन वर्ष की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है —पंच परमेश्वर (1905 ई.), परदा (1943 ई.), परिन्दे (1959 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.)
- ☞ निबन्धकारों का सही अनुक्रम है — बालमुकुन्द गुप्त, (1865-1907 ई.), श्यामसुन्दर दास (1875-1945 ई.), सरदार पूर्णसिंह (1881-1931 ई.), बाबू गुलाबराय (1888-1963 ई.)
- ☞ आचार्यों का सही अनुक्रम है —भरतमुनि, भामह, अभिनव गुप्त, विश्वनाथ
- ☞ सही सुमेलित हैं—
- | कृति | निबन्धकार |
|--------------------------|-----------------|
| (a) पगडंडियों का जमाना | — हरिशंकर परसाई |
| (b) अंगद का पाँव | — श्रीलाल शुक्ल |
| (c) गन्ध मादन | — कुबेरनाथ राय |
| (d) जीप पर सवार इल्लियाँ | — शरद जोशी |

सही सुमेलित हैं—

आलोचक

- | | | |
|-------------------------|---|------------------------------------|
| (a) रामस्वरूप चतुर्वेदी | — | हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास |
| (b) देवरज | — | छायावाद का पक्ष |
| (c) रामविलास शर्मा | — | आस्था और सौन्दर्य |
| (d) लक्ष्मीकांत वर्मा | — | नयी कविता के प्रतिमान |

सही सुमेलित हैं—

कहानी

- | | | |
|----------------------|---|-----------------------|
| (a) विराटा की पत्नी | — | वृन्दावनलाल वर्मा |
| (b) वैशाली की नगरवधू | — | चतुरसेन शास्त्री |
| (c) दिव्या | — | यशपाल |
| (d) चारुचन्द्र लेख | — | हजारी प्रसाद द्विवेदी |

सही सुमेलित हैं—

कहानी

- | | | |
|-------------------------|---|-----------------------------|
| (a) ग्यारह वर्ष का समय | — | रामचन्द्र शुक्ल |
| (b) दुलाईवाला | — | बंग महिला |
| (c) ग्राम | — | राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द |
| (d) रानी केतकी की कहानी | — | इंशा अल्ला खां |

सही सुमेलित हैं—

काव्यसंग्रह

- | | | |
|-----------------------|---|--------------------|
| (a) हिम किरीटिनी | — | माखनलाल चतुर्वेदी |
| (b) अमोला | — | त्रिलोचन |
| (c) काल तुझसे होड़ है | — | शमशेर बहादुर सिंह |
| (d) गीत फरोश | — | भवानी प्रसाद मिश्र |

सही सुमेलित हैं—

आत्मकथा

- | | | |
|---------------------|---|---------------|
| (a) एक कहानी यह भी | — | मन्नू भंडारी |
| (b) अन्या से अनन्या | — | प्रभा खेतान |
| (c) हाद से | — | रमणिका गुप्ता |
| (d) रसीदी टिकट | — | अमृता प्रीतम |

सही सुमेलित हैं—

कृतियाँ

- | | | |
|--------------------------|---|-------------------|
| (a) ग्लोबल गाँव के देवता | — | रणेन्द्र |
| (b) जूठन | — | ओमप्रकाश वात्मीकि |
| (c) मुक्तिपर्व | — | मोहनदास नैमिशराय |
| (d) छपर | — | जयप्रकाश कर्दम |

सही सुमेलित हैं—

उक्ति

- | | | |
|-------------------------------------------|---|---------|
| (a) गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग। | — | तुलसी |
| (b) अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंगा। | — | बिहारी |
| (c) अति सूधो सनेह को मारग है। | — | घनानन्द |
| (d) बसो मेरे नैनन में नंद लाल। | — | मीराबाई |

सही सुमेलित हैं—

उक्ति

- | | | |
|------------------------------------------------|---|---------|
| (a) प्रदोषौ शब्दार्थौ सगुणावलंकृती पुनः क्वापि | — | मम्मट |
| (b) प्रज्ञानवनवोन्मेषशालिनी— | — | भट्टतौत |
| (c) न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनिता मुखम् | — | भामह |
| (d) कीरति भनिति भूति भल— | — | तुलसी |

सही सुमेलित हैं—

कृति

- | | | |
|---------------------------------------------|---|---------------|
| (a) द कम्प्युनिस्ट मेनोफेस्टो | — | कार्ल मार्क्स |
| (b) द यूज ऑफ पोयट्री एंड यूज ऑफ क्रिटिसिज्म | — | टी.ए. इलिएट |
| (c) इल्यूजन एंड रिएलिटी | — | कॉडवेल |
| (d) द पोयटिक इमेज | — | सी.डे.लेविस |

स्थापना (A) : चिन्तन की अपेक्षा कर्म सत्य के अधिक समीप होता है।
तर्क (R): क्योंकि कर्म में सक्रियता और व्यावहारिकता होती है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

स्थापना (A) : भाषा ही एकमात्र साधन है, जो अन्य पशुओं से मनुष्य को पृथक् करती है।

तर्क (R): क्योंकि भाषा केवल मनुष्य की अर्जित सम्पत्ति है।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं

स्थापना (A) : सीखने का प्रत्यन किये बिना सिखाने की लालसा विफल होती है।

तर्क (R): क्योंकि सिखाने के लिए सीखने की आवश्यकता नहीं है।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : लोभ चाहे जिस वस्तु का हो, जब बढ़ जाता है, तब उस वस्तु की प्राप्ति, सान्निध्य या उपभोग से जी नहीं भरता।

तर्क (R): क्योंकि मनुष्य नहीं चाहता है कि उसकी प्राप्ति बार-बार हो।

— (A) सही, (R) गलत है

स्थापना (A) : कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भावभूमि पर ले जाती है।

तर्क (R): क्योंकि कविता मानव के हृदय को व्यापक नहीं बनाती।

— (A) सही, (R) गलत है

जून - 2011 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्यों का वृत्तांत है—चौरासी वैष्णवन की वार्ता

'काशी में हम प्रगत हुए, रामानन्द चेताये।' पंक्ति है —कबीर की

'रासो' शब्द की उत्पत्ति 'रसायण' से मानी है —रामचन्द्र शुक्ल

लक्षण ग्रंथ का अर्थ है —काव्यांग विवेचन

बिहारी, घनानन्द, मतिराम तथा तोष में रीतिसिद्ध हैं —बिहारी

'अनुमितिवाद' के प्रतिष्ठाता हैं —शंकुक

'किंशुक कुसुम जानकर झपटा भौरा शुक की लाल चोंच पर।

तोते ने निज ठोर चलाई जामुन का फल उसे सोचकर।' में अलंकार है —भ्रांतिमान

'काव्यालंकार' के रचयिता हैं —भामह

मराठी, गुजराती, मलयालम तथा हिंदी में से भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है —मलयालम

ब्रज भाषा बोली जाती है मथुरा—वृंदावन में

'विश्वजन की अर्चना में नहीं बाधक था इस व्यष्टि का अभिमान'—पंक्ति है —अज्ञेय की

'मतवाला' के सम्पादक थे —निराला

'साखी' संकलन है —विजयदेव नारायण साही का

'जीवन-विवेक ही साहित्य विवेक है' कथन है —मुक्तिबोध की

नन्ददुलारे वाजपेयी, शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त तथा रामविलास शर्मा में से प्रगतिशील आलोचक नहीं हैं —नन्ददुलारे वाजपेयी

'अत्मा कबूतरी' रचना है —मैत्रेयी पुष्पा की

'विलोम' पात्र है —आषाढ़ का एक दिन नाटक का

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति हुई है —शौरसेनी अपभ्रंश से

आत्मकथा है —अर्द्धकथानक

'छितवन की छाँह' निबन्ध-संग्रह के रचयिता हैं —विद्यानिवास मिश्र

कालक्रम के अनुसार चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों का सही अनुक्रम है —हृदय की परख (1918 ई.), हृदय की प्यास (1932 ई.),

अमर अभिलाषा (1932 ई.), आत्मदाह (1937 ई.)

कालखण्ड की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है

—ग्राम (1911 ई.), कफन (1936 ई.), डिप्टी कलेक्टरी

(1955 ई.), पाल गोमरा का स्कूटर (1997 ई.)

नाटकों का सही अनुक्रम है

—भारत दुर्दशा (1880 ई.), राज्यश्री (1915 ई.), कोणार्क (1952 ई.), खजुराहो का शिल्पी (1972 ई.)

कालक्रमानुसार ग्रंथों का सही अनुक्रम है

—नाट्यशास्त्र (ई.पू. द्वितीय शती), काव्यालंकार सूत्रवृत्ति

(800 ई.), दशरूपक (974 ई.), काव्य प्रकाश (12 वीं शती)

प्रकाशन काल के अनुसार यात्रा वर्णनों का सही अनुक्रम है—

—अरे यायावर रहेगा याद (1953 ई.), देश-विदेश (1957 ई.),

हँसते निर्झर दहकती भट्टी (1966 ई.), तंत्रलोक से यंत्रलोक तक

(1968 ई.),

रचनाकारों का सही अनुक्रम है

—भगवतीचरण वर्मा (1903-1981 ई.), बच्चन (1907-2003

ई.), अज्ञेय (1911-1987 ई.), नरेन्द्र शर्मा (1913-1989 ई.)

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त रचनाकारों का सही क्रम है

— दिनकर (1972 ई.), अज्ञेय (1978 ई.), निर्मल वर्मा

(1999 ई.), कुँवर नारायण (2005 ई.)

आदिकालीन रचनाओं का सही अनुक्रम है

—भरतेश्वर बाहुबली रास (1184 ई.), स्थूलिभद्ररास (1209

ई.), नेमिनाथ रास (1213 ई.), संगीत रत्नाकर (1437-38 ई.)

रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है

—इन्द्रधनु रौंदे हुए थे (1957 ई.), सीढ़ियों पर धूप (1960 ई.),
नए इलाके में (1996 ई.), वाजश्रवा के बहाने (2008 ई.)

सही सुमेलित हैं—

काव्य लक्षण	प्रतिष्ठापक
(a) 'शब्दार्थो सहितौ काव्यम् ।'	— भामह
(b) 'शरीरं तावदिष्टार्थं व्यवच्छिन्ना पदावली ।'	— दण्डी
(c) 'रमणीयार्थं प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् ।'	— पण्डितराज जगन्नाथ
(d) 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम् ।'	— विश्वनाथ

सुमेलित हैं—

(a) अभिव्यंजनावाद	— क्रोचे
(b) अंतश्चेतनावादी	— डी.एच.लॉरेन्स
यथार्थवाद	
(c) स्वच्छंदतावाद	— वर्ड्सवर्थ
(d) सम्प्रेषण	— रिचर्ड्स

सुमेलित हैं—

निबंधकार	कृतियाँ
(a) कुबेरनाथ राय	— प्रिया नीलकंठी
(b) हजारी प्रसाद द्विवेदी	— भीष्म को क्षमा नहीं किया
(c) विद्यानिवास मिश्र	— मेरे राम का मुकुट भीग रहा है
(d) रामचन्द्र शुक्ल	— चिंतामणि

सुमेलित हैं—

कहानीकार	कहानी
(a) उषा प्रियंवदा	— वापसी
(b) मन्नू भंडारी	— अकेली
(c) कृष्णा सोबती	— सिक्का बदल गया
(d) निर्मल वर्मा	— परिन्दे

सुमेलित हैं—

उपन्यास	उपन्यासकार
(a) पुनर्नवा	— हजारी प्रसाद द्विवेदी
(b) कब तक पुकारूँ	— रांगेय राघव
(c) भूले बिसरे चित्र	— भगवती चरण वर्मा
(d) मनुष्य के रूप	— यशपाल

सुमेलित हैं—

पंक्तियाँ	कवि
(a) जिधर अन्याय, है उधर शक्ति	— निराला
(b) नारी तुम केवल श्रद्धा हो	— प्रसाद
(c) बहुत दिनों तक चक्की रोई, चूल्हा रहा उदास	— नागार्जुन
(d) सिंहासन खाली करो कि जनता आती है	— दिनकर

सुमेलित हैं—

विधा	रचना
(a) कविता	— अबूतर-कबूतर
(b) कहानी	— शहाद तनामा
(c) उपन्यास	— पहला गिरमिटिया
(d) नाटक	— देहान्तर

सुमेलित हैं—

पात्र	कृति
(a) निजनिया	— बाणभट्ट की आत्मकथा
(b) रायसाहब	— मैला आँचल
(c) प्रशांत	— महाभोज
(d) रेखा	— गोदान

सुमेलित हैं—

नाटक	पात्र
(a) चन्द्रगुप्त	— सिंहरण
(b) आषाढ़ का एक दिन	— विलोम
(c) सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक	— ओक्काक
(d) देहान्तर	— पुरु

दिसम्बर - 2010 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ❏ 'अब लौं नसानी, अब न नसैहौं' उक्ति है — तुलसीदास की
- ❏ 'राउलवेल' रचना है — रोड कवि की
- ❏ रामचरितमानस, पद्मावत, विनयपत्रिका एवं चांदायन में से अवधी भाषा की रचना नहीं है — विनयपत्रिका
- ❏ 'उद्धवशतक' कृति है — जगन्नाथदास रत्नाकर की
- ❏ रामचन्द्रिका, कविप्रिया, ललितललाम एवं रसिकप्रिया में से केशवदास की रचना नहीं है — ललितललाम
- ❏ निराला कृत 'राम की शक्तिपूजा' की रचना का आधार-ग्रन्थ है — कृतिवास रामायण
- ❏ 'आत्मजयी' रचना है — कुँवर नारायण की
- ❏ नयी कहानी आन्दोलन के प्रारम्भकर्ताओं में से नहीं हैं — ज्ञानरंजन
- ❏ 'मैं बोरिशाइल्ला' रचना है — महुआ माझी की
- ❏ मेरी आत्मकहानी, मेरी असफलताएँ, मेरी जीवनयात्रा तथा माटी की मूरतें रचनाओं में आत्मकथा नहीं है — माटी की मूरतें
- ❏ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध है — विद्यानिवास मिश्र का
- ❏ शिवदानसिंह चौहान, नन्ददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा तथा नामवर सिंह में से मार्क्सवादी समालोचक नहीं हैं — नन्ददुलारे वाजपेयी
- ❏ सुरेन्द्र वर्मा कृत नाटक नहीं है — वादशाह गुलाम बेगम
- ❏ 'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रावृत्त है — अज्ञेय का
- ❏ साकेत, कामायनी, महाप्रस्थान तथा प्रियप्रवास में से महाकाव्य नहीं है — महाप्रस्थान
- ❏ 'काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रक्षते' उक्ति है — दण्डी की
- ❏ 'संतो भाई आई ग्यान की आँधी रे' पंक्ति में अलंकार है — रूपक
- ❏ ब्रजभाषा विकसित है — शौरसेनी से
- ❏ डिंगल भाषा का सम्बन्ध है — राजस्थानी साहित्य से
- ❏ प्रकाशन काल के अनुसार हिन्दी पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है — कविवचनसुधा (1867 ई.), हिन्दी प्रदीप (1896 ई.), नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1896 ई.), सरस्वती (1900 ई.)
- ❏ काल के अनुसार रचनाकारों का सही अनुक्रम है — लाला श्रीनिवास दास (1850-1907 ई.), प्रेमचन्द (1880-1936 ई.), अमृतलाल नागर (1916-1990 ई.), कमलेश्वर (1932-2007 ई.)
- ❏ रचनाकारों का सही अनुक्रम है — प्रसाद (1890-1937 ई.), निराला (1896-1961 ई.), पंत (1900-1977 ई.), महादेवी (1907-1987 ई.)
- ❏ युग की दृष्टि से रचनाकारों का सही अनुक्रम है — चन्दबरदाई, (1149-1192 ई.), मीराबाई (1498-1557 ई.), सेनापति (17वीं शताब्दी), हरिऔध (1865 ई., 1947 ई.)
- ❏ नाटकों का सही अनुक्रम है — अन्धेर नगरी (1881 ई.), चन्द्रगुप्त (1931 ई.), आषाढ़ का एक दिन (1958 ई.), अठवां सर्प (1976 ई.)
- ❏ उपन्यासों का कालानुसार सही अनुक्रम है — गोदान (1936 ई.), टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1948 ई.), मैला आँचल (1954 ई.), राग दरबारी (1968 ई.)
- ❏ कहानियों का कालानुसार सही अनुक्रम है — उसने कहा था (1915 ई.), कफन (1936 ई.), वापसी (1960 ई.), तिरिछ (1986 ई.)
- ❏ साहित्येतिहासकारों का सही अनुक्रम है — गार्सा द तासी, शिव सिंह सेंगर, रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी
- ❏ सही सुमेलित हैं—
- | | |
|------------|------------------|
| (a) आलोचना | — अरुण कमल |
| (b) तद्भव | — अखिलेश |
| (c) हंस | — राजेन्द्र यादव |
| (d) वाक् | — सुधीश पचौरी |
- ❏ सही सुमेलित हैं—
- | रचना | रचनाकार |
|---------------------|---------------------|
| (a) कितने पाकिस्तान | — कमलेश्वर |
| (b) तमस | — भीष्म साहनी |
| (c) मृगनक्षत्री | — वृन्दावनलाल वर्मा |
| (d) नीला चाँद | — शिवप्रसाद सिंह |
- ❏ सही सुमेलित हैं—
- | कहानीकार | कहानी |
|-----------------------------|----------------------|
| (a) उषा प्रियंवदा | — वापसी |
| (b) अमरकांत | — दोपहर का भोजन |
| (c) मोहन राकेश | — परमात्मा का कुत्ता |
| (d) विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक | — तार्ई |
- ❏ सही सुमेलित हैं—
- | नाटक | लेखक |
|------------------|------------------------|
| (a) रक्षाबन्धन | — हरिकृष्ण प्रेमी |
| (b) अन्धा कुआँ | — लक्ष्मीनारायण लाल |
| (c) बकरी | — सर्वेश्वरदयाल सकसेना |
| (d) कोर्ट मार्शल | — स्वदेश दीपक |
- ❏ सही सुमेलित हैं—
- | पंक्ति | कवि |
|----------------------------|-------------|
| (a) साई के सब जीव हैं | — कबीर |
| कीरी कुंजर दोग | |
| (b) देसिल बयना सबजन मिट्ठा | — विद्यापति |

- (c) भूषण बिनु न बिराजई, — केशव
कविता बनिता मित
- (d) नैन नचाय कही मुसकाय, — पद्माकर
लला फिर आइयो खेलन होरी
- सही सुमेलित हैं—
- कृति** **कृतिकार**
- (a) संसद से सड़क तक — धूमिल
- (b) फूल नहीं रंग बोलते हैं — केदारनाथ अग्रवाल
- (c) युगधारा — नागार्जुन
- (d) साए में धूप — दुष्यन्त कुमार
- सही सुमेलित हैं—
- उक्ति** **ग्रन्थकार**
- (a) सौन्दर्यमलंकारः — वामन
- (b) वाक्यं रसात्मकं काव्यम् — विश्वनाथ
- (c) वागर्थविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये — कालिदास
- (d) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् — पंडितराज जगन्नाथ
- सही सुमेलित हैं—
- ग्रन्थ** **आचार्य**
- (a) ध्वन्यालोक — आनन्द वर्धन
- (b) काव्यालंकार — भामह
- (c) काव्यप्रकाश — मम्मट
- (d) काव्यानुशासन — हेमचन्द्र
- सही सुमेलित हैं—
- ग्रन्थ** **लेखक**
- (a) एस्से इन क्रिटिसिज्म — मैथ्यू आर्नाल्ड
- (b) बायोग्राफिया लिटरेरिया — कॉलरिज
- (c) एस्थेटिक्स — क्रोचे
- (d) प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म — आई.ए.रिचर्ड्स
- सही सुमेलित हैं—
- अंश** **कवि**
- (a) जो घनीभूत पीड़ा थी — प्रसाद
- (b) हेर प्यारे को सेज पास, — निराला
नम्रमुख हँसी खिली।
- (c) हम नहीं कहते कि हम — अज्ञेय
को छोड़कर स्रोतस्विनी
बह जाया
- (d) जी हों हजूर, मैं गीत — भवानी प्रसाद मिश्र
बेचता हूँ।
- स्थापना (A) : वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।
- तर्क (R) : क्योंकि वीरता का सम्बन्ध मनोबल से है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) : मानव जीवन की पूर्णता के लिए कर्म, ज्ञान और उपासना तीनों के मेल की आवश्यकता है।
- तर्क (R) : क्योंकि मनुष्य जीवन की पूर्णता में उपासना का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है।
- (A) सही और (R) गलत है
- स्थापना (A) : श्रद्धा का कारण निर्दिष्ट और ज्ञात होता है।
- तर्क (R) : क्योंकि श्रद्धा में दृष्टि पहले कर्मों पर से होती हुई श्रद्धेय तक पहुँचती है।
- (A) और (R) दोनों सही हैं

जून - 2010 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- अष्टछाप के कवियों में प्रथम नियुक्त कीर्तनकार कवि थे —**बुंभनदास**
- जायसीकृत 'पद्मावत' है —**रूपक काव्य**
- 'बसो मेरे नैनन में नन्दलाल' पंक्ति है —**मीराबाई की**
- अमिय हलाहल मदभरे श्वेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत एक बार॥ —**पंक्तियाँ हैं**
- रसलीन की**
- 'बरवै रामायण' रचना है —**तुलसीदास की**
- भरतमुनि के रससूत्र में स्थायीभाव, विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव में से उल्लेख नहीं है —**स्थायीभाव का**
- 'साधारणीकरण' संकल्पना के उद्गाता हैं —**भट्टनायक**
- शब्द की द्वयर्थी योजना से अलंकार होता है —**वक्रोक्ति**
- 'काशिका' कहा गया है —**बनारस की बोली को**
- उड़िया, बंगला, असमिया तथा कन्नड़ में से द्रविड़ परिवार की भाषा है —**कन्नड़**
- 'हिंदी प्रदीप' पत्रिका के संपादक हैं —**बालकृष्ण भट्ट**
- 'तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब' पंक्ति है —**मुक्तिबोध की**
- 'आवारा मसीहा' रचना है —**विष्णु प्रभाकर की**
- पशु-पक्षियों पर लिखित महादेवी वर्मा का रेखाचित्र संकलन है —**मेरा परिवार**
- रामचन्द्र शुक्ल की आलोचनात्मक कृति है —**रसमीमांसा**
- मनोविश्लेषणात्मक शैली के उपन्यासकार हैं —**इलाचन्द्र जोशी**
- 'निउनिया' उपन्यास का पात्र है —**वाणभट्ट की आत्मकथा**

- ☞ देवनागरी लिपि की उत्पत्ति हुई है —ब्राह्मी से
- ☞ 'ठेले पर हिमालय' रचना है —निबंध विधा की
- ☞ 'वन्दे वाणी विनायकौ' निबंध संकलन के रचयिता हैं —रामवृक्ष बेनीपुरी

- ☞ कालखण्ड की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है —रानी केतकी की कहानी (1803 ई.), उसने कहा था (1915 ई.), शरणागत (1918 ई.), तिरिछ (1986 ई.)

- ☞ प्रकाशन काल के अनुसार रेखाचित्रों का सही अनुक्रम है —अतीत के चलचित्र (1941 ई.), माटी की मूरतें (1946 ई.), अमिट रेखाएँ (1951 ई.), कुछ शब्द कुछ रेखाएँ (1965 ई.)

- ☞ निराला की रचनाओं का सही अनुक्रम है —अनामिका (1923 ई.), परिमल (1930 ई.), गीतिका (1936 ई.), कुरुरमुत्ता (1943 ई.)

- ☞ आचार्यों और उनके सिद्धान्तों के साथ सुमेलन हैं—
- | | | |
|-----------------|---|---------------|
| (a) भट्ट लोल्लट | — | उत्पत्तिवाद |
| (b) शंकुक | — | अनुमितिवाद |
| (c) भट्ट नायक | — | भुक्तिवाद |
| (d) अभिनव गुप्त | — | अभिव्यक्तिवाद |

नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में भुक्तिवाद दिया है, जबकि प्रश्न विकल्प के अनुसार भुक्तिवाद होना चाहिए, जिसके प्रवर्तक भट्ट नायक हैं।

- ☞ सुमेलन हैं—

ग्रन्थकार

- | | | |
|----------------|---|---------------|
| (a) इलियट | — | दि वेस्ट लैंड |
| (b) वर्ड्सवर्थ | — | लिरिकल बैलड्स |
| (c) लॉगिनुस | — | पेरिइप्सुस |
| (d) अरस्तू | — | पेरिपोइतिकेस |

- ☞ सुमेलन हैं—

रचनाकार

- | | | |
|-------------------|---|--------------------------|
| (a) अज्ञेय | — | संवत्सर |
| (b) किशन पटनायक | — | विकल्पहीन नहीं है दुनिया |
| (c) केदारनाथ सिंह | — | कब्रस्तान में पंचायत |
| (d) अनामिका | — | स्त्रीत्व मानचित्र |

- ☞ सुमेलन हैं—

कवि

- | | | |
|----------------------|---|---------------|
| (a) केदारनाथ सिंह | — | अकाल में सारस |
| (b) ज्ञानेन्द्र पति | — | संशयात्मा |
| (c) भारतभूषण अग्रवाल | — | अग्निलीक |
| (d) कुँवर नारायण | — | आत्मजयी |

- ☞ सुमेलन हैं—

सम्पादक

- | | | |
|----------------------------------------------|---|-----------------|
| (a) अखिलेश | — | तद्भव |
| (b) नमिता सिंह | — | वर्तमान साहित्य |
| (c) राजेन्द्र कुमार (वर्तमान में अशोक मिश्र) | — | बहुवचन |
| (d) प्रभाकर श्रोत्रिय | — | पूर्वग्रह |

नोट—प्रश्नकाल में राजेन्द्र कुमार बहुवचन पत्रिका के सम्पादक थे। वर्तमान में इस पत्रिका के सम्पादक अशोक मिश्र हैं।

- ☞ सुमेलन हैं—

कहानी

- | | | |
|--------------|---|----------------|
| (a) सद्गति | — | प्रेमचन्द |
| (b) बिसाती | — | प्रसाद |
| (c) दो बाँके | — | भगवतीचरण वर्मा |
| (d) पाजेब | — | जैनेन्द्र |

- ☞ सुमेलन हैं—

पंक्तियाँ

- | | | |
|------------------------------|---|----------|
| (a) सेस महेस गनेस दिनेस | — | रसखान |
| (b) मन लेत पै देत छटाँक नहीं | — | घनानन्द |
| (c) जैसे उड़ि जहाज को पंछी | — | सूर दास |
| (d) गिरा अनयन नयन बिनु बानी | — | तुलसीदास |

- ☞ सुमेलन हैं—

रचना

- | | | |
|--------------------------|---|--------------|
| (a) शब्द और मनुष्य | — | आलोचना |
| (b) काशी का अस्सी | — | उपन्यास |
| (c) इला | — | नाटक |
| (d) पैरों में पंख बाँधकर | — | यात्रा-वर्णन |

- ☞ उपन्यासों का उनके पात्रों के साथ सुमेलन हैं—

उपन्यास

- | | | |
|---------------------|---|--------|
| (a) रंगभूमि | — | सोफिया |
| (b) झूठा-सच | — | तारा |
| (c) त्यागपत्र | — | मृणाल |
| (d) अँधेरे बंद कमरे | — | नीलिमा |

- ☞ सुमेलन हैं—

पात्र

- | | | |
|--------------|---|------------|
| (a) देवसेना | — | स्कंदगुप्त |
| (b) विशु | — | कोणार्क |
| (c) गांधारी | — | अंधायुग |
| (d) सावित्री | — | आधे-अधूरे |

दिसम्बर - 2009 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- अकारादि क्रम, लेखकों का कालक्रम, रचनाओं का कालक्रम तथा परिस्थिति-प्रवृत्ति मूलक क्रम में से साहित्येतिहास लेखन की विधि नहीं है
— अकारादि क्रम
- 'शब्दानुशासन' के लेखक हैं — हेमचंद्र
- 'खालिकबारी' रचना है — अमीर खुसरो की
- सूफीकाव्य का उद्देश्य है — प्रेम निरूपण
- घनानन्द, बोधा, जसवन्त सिंह तथा ठाकुर में से रीतिमुक्त कवि नहीं हैं — जसवन्त सिंह
- 'जूही की कली' कविता के कवि हैं — सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला
- 'हालावाद' के प्रवर्तक हैं — हरिवंशराय बच्चन
- 'तुम विद्युत बन आओ पाहुन, मेरे नयनों पर पग धर-धर' पंक्ति है — महादेवी वर्मा की
- अपभ्रंश को 'पुरानी हिन्दी' कहा है — चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने
- संवार माध्यमों में प्रयोग होता है — हिन्दी का व्यावहारिक रूप
- संचारी भावों की संख्या है — 33
- 'विखंडनवाद' के प्रवर्तक हैं — देरिदा
- 'कविवचनसुधा' के सम्पादक थे — भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- नागरी प्रचारिणी सभा का स्थापना वर्ष है — 1893 ई.
- 'शिवशम्भु के चिट्ठे' के लेखक हैं — बालमुकुन्द गुप्त
- 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' निबन्ध के लेखक हैं — महावीर प्रसाद द्विवेदी
- 'अधिकार-सुख कितना मादक किन्तु सारहीन है' पंक्ति प्रसाद के नाटक से है — स्कन्दगुप्त से
- य, प, क्ष तथा झ में से अर्द्ध स्वर है — य
- अवधी, बिहारी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी बोलियों में से पूर्वी हिन्दी की नहीं है — बिहारी
- बोली का लघुत्तम रूप है — वर्ण
- स्थापना (A) :** नाद सौन्दर्य का योग कविता की पूर्णता के लिए आवश्यक है।
तर्क (R) : नाद सौन्दर्य से कविता की आयु बढ़ती है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) :** व्यक्तिवाद का एक रूप अहंवाद है
तर्क (R) : अहंवादी व्यक्ति समाज का तिरस्कार करता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) :** सिद्धान्ततः प्रजातंत्र को सर्वोत्तम शासन व्यवस्था कहा जा सकता है।
तर्क (R) : शासन प्रायः प्रजा के हित में समर्पित होता है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) :** कला की सर्जना आध्यात्मिक क्रिया है।
तर्क (R) : आध्यात्मिकता और कला अन्योन्याश्रित हैं।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) :** बड़े-बड़े राज्य उत्पाद की बिक्री के लिए सौदागर हो गये हैं।
तर्क (R) : क्योंकि व्यापार नीति राजनीति का प्रधान अंग हो गयी है।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- स्थापना (A) :** ध्वनि काव्य चित्रकाव्य से श्रेष्ठ है।
तर्क (R) : क्योंकि चित्रकाव्य रस की सृष्टि नहीं कर पाता है।
— (A) सही, (R) गलत है
- स्थापना (A) :** कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ सम्बन्धों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोक की सामान्य भावभूमि पर ले जाती है।
तर्क (R) : क्योंकि इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिए अपना पता नहीं रहता।
— (A) और (R) दोनों सही हैं
- कालक्रम की दृष्टि से आलोचकों का सही अनुक्रम है—
— रामचन्द्र शुक्ल (4 अक्टूबर, 1884-2 फरवरी, 1941 ई.), नन्द दुलारे वाजपेयी (27 अगस्त, 1906 - 21 अगस्त, 1967 ई.), हजारी प्रसाद द्विवेदी (19 अगस्त, 1907 - 19 मई, 1979 ई.), रामविलास शर्मा (10 अक्टूबर, 1912 - 30 मई, 2000 ई.)
- पत्रिकाओं का सही अनुक्रम है— कविवचनसुधा (1867 ई.), सरस्वती (1900 ई.), इन्दु (1909 ई.), हंस (1930 ई.)
- प्रकाशन काल की दृष्टि से कहानियों का सही अनुक्रम है
— दुलाई वाली (1907 ई.) आँधी (1931 ई.), पाजेब (1942 ई.), यारों के यार (1968 ई.)
- नोट—**यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में यारों के यार कृष्णा सोबती का उपन्यास है, जबकि अन्य सभी कहानियाँ हैं।
- कालक्रम की दृष्टि से निबन्ध-संग्रहों का सही अनुक्रम है
— शिवशम्भु के चिट्ठे (1877 ई.), आत्माराम की टेंटें (1903 ई.), शृंखला की कड़ियाँ (1942 ई.), विषादयोग (1974 ई.)
- कालक्रम की दृष्टि से उपन्यासों का सही अनुक्रम है
— भूतनाथ (1907 ई.), डूबते मस्तूल (1954 ई.), कब तक पुकारूँ (1957 ई.), अन्तिम अरण्य (2000 ई.)
- नोट—**यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिये गये विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।

☞ युग्म संगत हैं—		(c) माटी की मूरतें — रामवृक्ष बेनीपुरी
(a) बीसलदेव रासो — नरपति नाह		(d) रेखाएँ बोल उठीं — देवेन्द्र सत्यार्थी
(b) खुमाणरासो — दलपति विजय	☞ सही सुमेलित हैं—	
(c) विजयपाल रासो — नाह सिंह भाट	आत्मकथा	लेखक
(d) परमाल रासो — जगनिक	(a) अन्या से अनन्या — प्रभा खेतान	
☞ युग्म संगत हैं—	(b) बसेरे से दूर — हरिवंशराय बच्चन	
(a) भारत दुर्दशा — भारतेन्दु	(c) जूठन — ओमप्रकाश वाल्मीकि	
(b) प्रायश्चित — जयशंकर प्रसाद	(d) एक कहानी यह भी — मन्नू भण्डारी	
(c) दशरथ नन्दन — जगदीशचन्द्र माथुर	☞ सही सुमेलित हैं—	
(d) कबिरा खड़ा बाजार में — भीष्म साहनी	पत्रिका	सम्पादक
☞ युग्म संगत हैं—	(a) हंस — राजेन्द्र यादव	
(a) कौन तुम मेरे हृदय में — महादेवी वर्मा	(b) संचेतना — महीप सिंह	
(b) न जाने नक्षत्रों से कौन — सुमित्रानन्दन पन्त	(c) आलोचना — अरुण कमल	
(c) जो घनीभूत पीड़ा थी — जयशंकर प्रसाद	(d) दस्तावेज — विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	
(d) सखि, वे मुझसे कहकर जाते — मैथिलीशरण गुप्त	☞ सही सुमेलित हैं—	
☞ सही सुमेलित हैं—	काव्यपंक्ति	कवि
कहानी	(a) रवि हुआ अस्त, ज्योति — निराला	
(a) यही सच है — मन्नू भण्डारी	के पत्र पर लिखा अमर	
(b) परिदे — निर्मल वर्मा	(b) शैया सैकत पर दुग्धधवल — सुमित्रानन्दन पन्त	
(c) फूलों का कुरता — यशपाल	तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विकल	
(d) जिन्दगी और जोंक — अमरकांत	(c) सखि, वे मुझसे कहकर जाते — मैथिलीशरण गुप्त	
☞ सही सुमेलित हैं—	(d) शशि मुख पर घूँघट डाले — जयशंकर प्रसाद	
कृति	☞ सही सुमेलित हैं—	
(a) ईश्वर की अध्यक्षता में — लीलाधर जगूड़ी	नाट्यकृति	पात्र
(b) अबूतर कबूतर — उदय प्रकाश	(a) चन्द्रगुप्त — चाणक्य	
(c) आत्महत्या के विरुद्ध — रघुवीर सहाय	(b) आधे-अधूरे — महेन्द्रनाथ	
(d) जलसाधर — श्रीकांत वर्मा	(c) कोणार्क — विशु	
☞ सही सुमेलित हैं—	(d) अन्धायुग — अश्वत्थामा	
काव्य पंक्ति	☞ सही सुमेलित हैं—	
(a) अति सूधौ सनेह कौ मारग है — घनानन्द	नाटक	नाटककार
(b) अब लौं नसानी अब न नसैहौं — तुलसीदास	(a) कोर्ट मार्शल — स्वदेश दीपक	
(c) सटपटाति-सी ससि मुखी — बिहारी	(b) इतिहास चक्र — दयाप्रकाश सिन्हा	
मुख घूँघट पर ढाँकि	(c) अन्वेषक — प्रताप सहगल	
(d) ऊधौ मन न भए दस-बीस — सूरदास	(d) कबिरा खड़ा बाजार में — भीष्म साहनी	
☞ सही सुमेलित हैं—	☞ सही सुमेलित हैं—	
रेखाचित्र	सिद्धान्त	चिन्तक
(a) पदम पराग — पद्म सिंह शर्मा	(a) अनुमतिवाद — भट्ट शंकुक	
(b) बोलती प्रतिमा — श्रीराम शर्मा	(b) उत्पत्तिवाद — भट्ट लोल्लट	
	(c) साधारणीकरण — भट्टनायक	
	(d) अभिव्यक्तिवाद — अभिनव गुप्त	

जून - 2009 : द्वितीय प्रश्न-पत्र

- ‘हिन्दुस्तानी’ भाषा का रूप है — हिन्दी-उर्दू मिश्रित
- पश्चिमी हिन्दी वर्ग की बोली नहीं है — छत्तीसगढ़ी
- वर्तमान समय में संविधान द्वारा स्वीकृत भाषाओं की संख्या है — बाइस (22)
- ‘ग्रिम नियम’ का सम्बन्ध है — स्वनिम् विज्ञान से
- नन्ददास की रचना जिसका सम्बन्ध नायक-नायिका भेद से है — रसमंजरी
- ‘आनन्द कादम्बिनी’ के संस्थापक थे— बदरीनारायण चौधरी ‘प्रेमघन’
- ‘दीदी’ पत्रिका के सम्पादक थे — ठाकुर श्रीनाथ सिंह
- पथिक, बाजश्रवा के बहाने, मगध तथा पहाड़ पर लालटेन में से कुँवर नारायण की रचना है — बाजश्रवा के बहाने
- ‘लड़ाई’ के नाटककार हैं — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
- ‘कब्बे और कालापानी’ के कहानीकार हैं — निर्मल वर्मा
- ‘रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द : काव्यम्’ कथन है — पंडितराज जगन्नाथ का
- बुल्ला साहेब, बुलाल साहेब, पलटू साहेब तथा सत साहेब में से बावरी पंथ से सम्बन्धित नहीं हैं — सत साहेब
- ‘कब को टेरेत दीन है, होत न स्याम सहाय! तुम हू लागी जगत गुरु, जगनायक जग बाय!’ इस दोहे में कवि — शिकायत करता है
- जन गण मन अधिनायक जय हे, प्रजा विचित्र तुम्हारी है, भूख-भूख चिल्लाने वाली अशुभ अमंगलकारी है’ इन पंक्तियों के लेखक हैं — नागार्जुन
- ‘सवंगी’ रचना है — रज्जब की
- प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना भारतवर्ष में हुई थी — 1936 ई. में
- दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा का मुख्यालय है — मद्रास में
- ‘हिन्दुस्तानी’ पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया — हिन्दुस्तानी अकादमी ने
- नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिए गए विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।
- ‘शेष स्मृतियाँ’ संस्मरण के लेखक हैं — रघुवीर सिंह
- झाँकियाँ निकलती हैं ढोंग अविश्वास की बदबू आती है मरी हुई बात की इस हवा में अब नहीं डोलूँगा नहीं, नहीं, मैं यह खिड़की नहीं खोलूँगा। ये पंक्तियाँ हैं — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की
- रचनाओं का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है — वीसलदेव रासो (नरपति नाह, 12वीं सदी), अखिरी कलाम (जायसी, 1492-1542 ई.), वैराग्य संदीपनी (तुलसीदास, 1532-1623 ई.), बरवै नायिकाभेद (रहीम, 1556-1626 ई.)
- हिन्दी समाचार पत्रों का कालक्रमानुसार सही अनुक्रम है — कर्मवीर (1919 ई.), आज (1920 ई.), विशाल भारत (1928 ई.), जनसत्ता (1980 ई.)
- दिनकर की रचनाओं का सही अनुक्रम है — रेणुका (1935 ई.), हुंकार (1939 ई.), रसवंती (1940 ई.), उर्वशी (1961 ई.), नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न का अनुक्रम दिये गये विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।
- नाटकों का रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है — भारत दुर्दशा (1880 ई.), प्रायश्चित (1913 ई.), अंधायुग (1955 ई.), कोर्ट मार्शल (1991 ई.)
- आलोचकों का कालानुसार सही अनुक्रम है — डॉ. देवराज (1917-1999 ई.), लक्ष्मीकांत वर्मा (1922-2002 ई.), विजयदेव नारायण साही (1924-1986 ई.), रामस्वरूप चतुर्वेदी (1939-2003 ई.)
- उपन्यासों का रचनाकाल के अनुसार सही अनुक्रम है — चन्द्रकान्ता (1891 ई.), तितली (1934 ई.), नदी के द्वीप (1951 ई.), कसप (1982 ई.)
- काव्य संग्रहों का काल क्रमानुसार सही अनुक्रम है — भगनदूत (1933 ई.), मैजीर (1941 ई.), चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964 ई.), साखी (1983 ई.)
- सही अनुक्रम है — संरचनावाद (1725 ई.), अस्तित्ववाद (1813 ई.), फ्रायडवाद (1856 ई.), उत्तरसंरचनावाद (1970 ई.)
- निबन्ध संग्रहों का रचनाकाल के अनुसार सही क्रम है — चाबुक (1951 ई.), नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध (1964 ई.), परम्परा का मूल्यांकन (1981 ई.), आत्मपरक (1983 ई.)
- नोट—यूजीसी द्वारा पूछे गये इस प्रश्न में दिए गए विकल्पों में कोई भी विकल्प सही नहीं है।
- काव्यान्दोलनों का सही कालानुक्रम है — नयी कविता (1951 ई.), नकेनवाद (1956 ई.), अकविता (1963-64 ई.), युयुत्सावाद (1968 ई.)

☞ सही सुमेलित हैं—

उपन्यास

- (a) परख —
(b) गबन —
(c) त्यागपत्र —
(d) शेखर एक जीवनी —

नारीपात्र

- कट्टो
जालपा
मृणालिनी
शशि

☞ सही सुमेलित हैं—

आत्मकथा

- (a) दस द्वार से सोपान तक — हरिवंशराय बच्चन
(b) मेरी आत्म कहानी — श्यामसुन्दर दास
(c) अपनी कहानी — वृन्दावनलाल वर्मा
(d) मेरी जीवन यात्रा — राहुल सांकृत्यायन

लेखक

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- (a) बात बोलेगी — शमशेर बहादुर सिंह
(b) साम्राज्ञी का नैवेद्य दान— अज्ञेय
(c) यमुना के प्रति — केदारनाथ अग्रवाल
(d) अकाल में सारस — केदारनाथ सिंह

कवि

☞ सही सुमेलित हैं—

रचना

- (a) हंसावली — कवि असाइत
(b) चन्दायन — मुल्ला दाउद
(c) सत्यवती — ईश्वरदास
(d) मृगावती — कुतुबन

कवि

☞ सही सुमेलित हैं—

उपन्यास

- (a) अप्सारा —
(b) मृगनयनी —
(c) कर्मभूमि —
(d) मित्रो मरजानी —

लेखक

- निराला
वृन्दावनलाल वर्मा
प्रेमचन्द
कृष्णा सोबती

☞ सही सुमेलित हैं—

ग्रन्थ

- (a) रस गंगाधर — पण्डित राज जगन्नाथ
(b) साहित्य दर्पण — विश्वनाथ
(c) काव्य प्रकाश — मम्मट
(d) वक्रोक्ति जीवितम् — कुन्तक

ग्रन्थकार

☞ सही सुमेलित हैं—

काव्य पक्तियाँ

- (a) राष्ट्रगीत में भला कौन यह — रघुवीर सहाय
भारत भाग्य विधाता है
(b) क्या करूँ जो शंभुधनु टूटा — गिरिजा कुमार माथुर
तुम्हारा
(c) अब मैं कवि नहीं रहा, काता — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
झंडा हूँ

कवि

(d) साधो आज मेरे सत की — विजय देव नारायण साही
परीक्षा है

☞ सही सुमेलित हैं—

यात्रा साहित्य

- (a) ठेले पर हिमालय — धर्मवीर भारती
(b) आखिरी चट्टान — मोहन राकेश
(c) सुबह के रंग — अमृत राय
(d) पैरो में पंख बाँधकर — रामकृष्ण बेनीपुरी

लेखक

☞ सही सुमेलित हैं—

साहित्यिक वाद

- (a) प्रगतिवाद — त्रिलोचन
(b) हालावाद — बच्चन
(c) अकविता — जगदीश चतुर्वेदी
(d) प्रयोगवाद — अज्ञेय

लेखक

☞ सही सुमेलित हैं—

पत्र-पत्रिका

- (a) भारतेन्दु — राधाचरण गोस्वामी
(b) ब्राह्मण — प्रतापनारायण मिश्र
(c) विशाल भारत — बनारसीदास चतुर्वेदी
(d) आज — शिव प्रसाद गुप्त

सम्पादक

☞ **अभिकथन (A) :** नाट्य का अपनी समग्रता में परिचय देना ही नट-कर्म के आगे-पीछे जो मूल प्रयोजन है वहाँ तक जाना पड़ेगा।

कारण (R) : क्योंकि नटकर्म या प्रयोग में कवि रचित काव्य प्रस्तुत किया जाता है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** करुणा ही लोगों की श्रद्धा को अपनी ओर अधिक खींचती है।

कारण (R) : क्योंकि करुणा का विषय दूसरों का दुःख नहीं है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं का मूल स्वर देश भक्ति नहीं है।

कारण (R) : क्योंकि देश प्रेम की भावना तत्कालीन भारतीय समाज में नहीं है।

— (A) सही, (R) गलत है

☞ **अभिकथन (A) :** भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है।

कारण (R) : क्योंकि उसमें अपने मंगल और लोकमंगल का संगम दिखाई पड़ता है।

— (A) और (R) दोनों सही हैं

☞ **अभिकथन (A) :** निराला की कल्पनाएँ उनके भावों की सहचरी नहीं हैं।

कारण (R) : क्योंकि उनकी कल्पनाएँ सुशील स्त्रियों की भाँति पति के पीछे-पीछे चलती नहीं हैं।

— (A) और (R) दोनों गलत हैं